नामकरण

पंचाल नाम पड़ने के सम्बन्ध में विभिन्न समयों में अलग–अलग जन–श्रुतियाँ मिलती हैं जो कि निम्न प्रकार हैं–

1. भरतवंशी राजा भ्रम्यश्व के पाँच पुत्रों में यह राज्य बंटा हुआ था।
2. कृवि, तुर्वश, केशिन, सृंजय एवं सोमक पाँच वशों ने यहाँ राज्य किया।
3. पाँच नदियाँ गंगा, रामगंगा, काली, यमुना एवं चम्बल यहाँ बहती हैं।
4. ऐल वंश के राजाओं ने यहाँ राज्य किया था।

उपर्युक्त जनश्रुतियों में से किसी के भी आधार पर पंचाल नाम पड़ा हो लेकिन यह पुष्टि है कि इस क्षेत्र के विषय में जब पिछले काल के बारे में लिखा गया तब भी यह पंचाल नाम से ही सम्बोधित किया गया।

वैदिक काल

प्राचीन काल में जब आर्य शक्ति का केन्द्र ब्रह्मावर्त्त था तब पंचाल एक समुन्नत जनपद था' राजा भरत के नाम पर हमारे देश का नाम प्रसिद्ध है। इनका राज्य सरस्वती नदी से लेकर अयोध्या तक फैला हुआ था। गंगा–यमुना का दोआब वाला भाग पंचाल उनके राज्य का सम्पन्न हिस्सा था। सम्राट भरत के वंश में ही राजा हस्ति हुए जिन्होंने अपने राज्य की राजधानी हस्तिनापुर बनायी। राजा हस्ति के पुत्र अजमीढ़ थे। उस समय इस वंश की कई शाखाएँ हुईं जिनमें से दो प्रमुख थीं जिनका सम्बन्ध पंचाग से था। पंचाल पर जिन शासकों ने शासन किया उनमें हस्तिन, अजमीढ़, सुशांति, पुरूजनु तक्ष, देवदास, सृंजय, मित्रायु, सहदेव, पिजवन, च्यवन, सुदास, सोमक, अर्कदन्त विशेष उललेखनीय हैं।

पंचाल के पॉच वंश दीर्घकाल तक प्रसिद्ध रहे–कृवि, तुर्वश, केशिन, सृंजय एवं सोमक। कृवि वंश का पूरा विवरण ऋग्वेद में मिलता है। वैदिक काल में पंचालों के छोटे–छोटे गणराज्य क्रैव्य, केशिन, दातव्य, शोनशास्यशहा, प्रवाहण, दुर्मुख एवं जैवलि थे। हस्तिनापुर में भरत वंशी राजा अजमीढ़ की दस पीढ़ी के बाद राजा संवरण हुए। वह बहुत प्रतापी थे। उन्हीं के समकालीन उत्तर पंचाल के राजा सुदास थे। राजा सुदास ने संवरण से युद्ध किया। संवरण के सहयोगी और राजा लोग भी थे। उन सभी को राजा सुदास ने परास्त किया। ऋग्वेद में यह युद्ध 'दाशराज्ञ–युद्ध' के नाम से वर्णित है। राजा सुदास के समय पंचाल राज्य का बहुत विस्तार हुआ। राजा सुदास के पंचाल की सीमा पूर्व में अयोध्या

तक पश्चिम में रावी नदी तक दक्षिण में चम्बल नदी तक और उत्तर में सारा कुरू प्रान्त उसके अधीन था।

पंचाल के इस प्रसिद्ध राजा सुदास के प्श्चात पंचाल राज्य पुनः अवनति की और बढ़ा। संवरण का पुत्र कुरू अत्यन्त प्रतापी राजा हुआ उसने पंचाल पर अधिकार कर लिया। उसी के अधिकार स्वरूप यह संयुक्त राज्य कुरू–पंचाल कहलाया। लेकिन कुछ काल पश्चात् पंचाल राज्य पुनः स्वतंत्र हो गया।

धर्म, ज्ञान, दर्शन एवं साहित्य का उत्थान

कुरूवंशी राजा अश्वमेघदत्त का समकालीन पंचाल राजा प्रवाहण जैवलि था। यह अपने समय का महान दार्शनिक कहा जाता था। उसके पास कितने ही तत्वदर्शी दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने आया करते थे। अपने पुत्र श्वेतकेतु के साथ प्रसिद्ध महर्षि आरुणी महाराज जेवली के पास गए थे और आत्म विद्या का उच्च ज्ञान प्राप्त किया था।

इस काल में पंचाल में औषधि विज्ञान की शिक्षा का भी समुचित प्रबंध था। आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ आत्रेय संहिता के अधिकांश भाग को, जिसमें शल्य क्रिया भी है, यहाँ के विश्वविद्यालय औषधि विज्ञान विभाग के प्रमुख आचार्य आत्रेय ने अग्निवेश आदि शिष्यों को उपदेश के रूप में दिया था। वहाँ विभिन्न प्रयोगशालाएँ थीं। वानस्पतिक खनिज एवं प्राणिक औषधि द्रव्यों के रासायनिक परीक्षण होते रहते थे यहाँ अन्य विद्याएँ भी पढ़ाई जाती थीं। सम्राट जेवलि इस विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यात्म तत्व के ब्रह्म विद्या विषयों के प्रधानाचार्य थे। यहाँ दूर–दूर से विद्यार्थी विद्या अध्ययन करने के लिए आते थे।

वैदिक रचनाओं से ज्ञात होता है कि पंचाल में शुद्ध वैदिक धर्म का विशेष जोर रहा। यहाँ अश्वमेध यज्ञ एवं राजसूय यज्ञ भी बहुत हुए। पंचालों की यज्ञ प्रणाली समस्त आर्यावर्त में प्रसिद्ध थी। इस जनपद की भाषा को वैदिक साहित्य में श्रेष्ठ भाषा के नाम से पुकारा गया है। यहाँ की स्त्रियाँ उच्चकोटि की विदुषी होती थीं। पंचाल विद्वानों एवं तत्व ज्ञानियों ने संहिता एवं ब्राह्मण ग्रन्थों की रचनाओं में पूर्ण योग दिया था। विद्या एवं कला कौशल का यह केन्द्र रहा। भारत के दर्शनशास्त्र के सर्वप्रथम प्रणेता दार्शनिक महामुनि कपिल, जिन्होंने सांख्य दर्शन का प्रतिपादन किया, जनश्रुतियों के अनुसार पंचाल के काम्पिल्य के उपवनों के बीच बने आश्रम में निवास करते थे।

महाभारत काल

वैदिककालीन राजवंशों की परम्परा निरन्तर चलती आई। महाभारत में वर्णित विवरणों के अनुसार भीष्म पितामह के पिता शांतनु का समकालीन पंचाल का राजा द्वमीठ था जिसका पुत्र राजा प्रषत था। प्रषत के पुत्र राजा द्रुपद ने पंचाल पर राज्य किया तथा अहिच्छत्र को अपनी राजधानी बनाया किन्तु द्रोणाचार्य से शत्रुता हो जाने के कारण वह पूरे पंचाल का स्वामी नहीं रह सका। पाण्डवों द्वारा उसको हराकर उसे केवल दक्षिणी पंचाल का राजा रहने दिया तथा उत्तरी पंचाल पर द्रोणाचार्य ने अधिकार कर लिया। पाण्डयों की पत्नी द्रौपदी इसी राजा द्रपुद की बेटी थी। उसका स्वयंवर काम्पिल्य में हुआ था जो उस समय राजा द्रुपद के दक्षिणी पंचाल की राजधानी थी। उस समय पंचाल का सैनिक एवं राजनैतिक दबदबा बहुत था। महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की सेना का सेनापति पंचाल के राजा द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न था एवं कौरवों की सेना के सेनापति उत्तरी पंचाल के राजा द्रोणाचार्य थे।

महाभारत में ही उल्लिखित है कि एक वार्हद्रथ वंशी जरासंध ने पंचाल जनपद में इतना आतंक उत्पन्न कर दिया था कि पंचाल निवासी सहस्रों की संख्या में अपना घर छोड़कर इधर–उधर बिखर गए थे किन्तु जब जरासंध को भीम ने मार दिया तो पंचाल निवासियों ने महाभारत के युद्ध में पाण्डयों का भरपूर साथ दिया। पाण्डवों के समर्थकों में पंचाल के वीरों का प्रमुख स्थान था। युद्ध के पश्चात भीम ने अपनी विजय यात्रा पंचाल प्रदेश से ही प्रारम्भ की थी और कौशल, अयोध्या, काशी अंग, बंग, पौड़, दशार्ण, चेदि और मत्सय राज्यों को अपने अधीन किया था।

महाभारत युद्ध के पश्चात् पाण्डवों के वंशजों का तथा बाद में नागवंशी राजाओं का पंचाल पर अधिकार रहा। उस पुरातन काल में पंचाल का निकटवर्ती राज्य हस्तिनापुर था। कभी हस्तिनापुर के राजाओं का पंचाल पर अधिकार होता तथा कभी पंचाल के राजाओं का हस्तिनापुर पर अधिकार हो जाता था। इस समस्त युग में इस राज्य में पूर्ण वैभव एवं सांस्कृतिक उन्नति रही एवं राजधानी अहिच्छत्र एवं कम्पिला में भी वैदिक सभ्यता, भाषा एवं साहित्य का खूब विकास हुआ।

बौद्धकाल – सर्वागीण सम्पन्नता

पुराणों में महाभारत युद्ध से लेकर महापद्मनंद के काल तक यहाँ के सत्ताईस राजाओ का उल्लेख मिलता है लेकिन उनके नामों का कोई वर्णन प्राप्त नहीं होता। बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में कई शासकों एवं यहाँ की सामाजिक दशाओं का वर्णन यदा–कदा प्राप्त है। बौद्ध जातकों एवं अन्य जैन ग्रंथों में पंचाल के एक शासक का वर्णन आता है।

जो यहाँ का दसवाँ चक्रवर्ती राजा था उसका नाम हरिशेण था। इसी प्रकार उत्तर पंचाल के राजा का नाम चूलनी ब्रह्मदत्त कहा गया है। इसने राज्य विस्तार करने में विशेष कौशल दिखाया था।'' बौद्ध साहित्य में पंचाल सम्बन्धी अनेक विवरण मिलते है प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थों में सोलह महाजनपदों का वर्णन है जो भारतवर्ष के अति शक्तिशाली राज्य थे। उनमें पंचाल भी था और उसका महत्वपूर्ण स्थान था। इस महाजनपद का वर्णन हमें जैन ग्रंथों में भी मिलता है। उसमें यह राज्य संघ राज्य कहा गया है। जैन ग्रंथों के अनुसार महावीर स्वामी ने जनता को यहाँ धर्मोपदेश दिया था। जैनियों के तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ का जन्म पंचाल के काम्पिल्य में हुआ था। उनको यहीं ज्ञान प्राप्त हुआ तथा वह सदैव यहीं पर रहे। जैन तीर्थंकर ऋषभदेव ने भी अपना धर्मोपदेश काम्पिल्य नगर में ही दिया था।

जातक ग्रंथों द्वारा जो वर्णन बौद्ध युग के प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार पंचाल का स्थान व्यापारिक दृष्टिकोण से विशेष महत्वपूर्ण था। नदियों द्वारा सहस्रों नाविक व्यापारियों को लेकर आया जाया करते थे। कितने ही व्यापारी विदेह से लेकर गांधार तक यात्रा किया करते थे। निष्क (सोने के सिक्के) का व्यापार होता था। पंचाल प्रदेश धनधान्य एवं खाद्य पदार्थों के लिए प्रसिद्ध था। मकान पत्थर, लकड़ी और ईट तीनों के बनते थे। मकानों पर प्लास्टर भी किया जाता था। स्वस्थ पशु एवं चरागाह यहाँ प्रचुर मात्रा में थे।

गौतम बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म तथा महावीर स्वामी द्वारा जैन धर्म स्थापित किए जाने के पश्चात् भारत तथा विदेशों में इन धर्मों का खूब प्रचार हुआ। पंचाल में भी विभिन्न राजाओं एवं वहाँ की प्रजा ने दोनों धर्मों को अपनाया परन्तु साथ–साथ पुराना वैदिक धर्म भी फलता–फूलता रहा। यहाँ की तथा अन्य स्थानों की खुदाइयों में तीनों धर्मों के अवशेष टूटे हुए मंदिर, मूर्तियाँ, नगर सभ्यता, सिक्के आदि प्राप्त हुए हैं। इनसे उस काल की सम्पन्नता, धार्मिक स्थिति एवं नगरीय व्यवस्था का ज्ञान होता है।

मौर्य शासकों के अधीन

महात्मा बुद्ध के पश्चात् लगभग एक शताब्दी तक पंचाल स्वतंत्र रूप में रहा। चौथी सदी ईसा पूर्व में मगध (पाटलिपुत्र) में नंद वंश ने उन्नति की। उसके सम्राट महापद्मनन्द ने इसे अपने अधीन बना लिया। नन्दों के पश्चात् चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध राज्य पर अधिकार कर लिया और एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। पंचाल भी उसके साम्राज्य का अंग बना। इसी वंश के अशोक महान तथा उसके उत्तराधिकारियों के काल में भी पंचाल मगध साम्राज्य का ही अंग रहा। मौर्यकाल में सारे साम्राज्य में एक–सी शासन व्यवस्था थी पंचाल में भी वही व्यवस्था बनी रही। इस शासन काल में पंचाल के बारे में कोई विशेष उल्लेख प्राप्त नहीं है।

मौर्य शासकों के बाद

मौर्य राजवंश के बाद पंचाल का इतिहास जानने के साधनों में उस समय के प्राप्त सिक्के ही एकमात्र साधन हैं। इन सिक्कों पर शासकों के नाम लिखे हैं जिनके नाम के अन्त में गुप्त, पाल, सेन खुदा हुआ है। कालक्रम निर्धारण के अनुसार 50 ई. पूर्व तक इन शासकों का राज्य रहा। इनमें रुद्रगुप्त जयगुप्त, दमगुप्त, वंगपाल भागवत, आषाढ़सेन प्रमुख शासक रहे। यह सभी राजा स्वतंत्र शासक थे।

इनके बाद 14 अन्य शासकों का पता लगता है जो मित्रवंशी थे। इनके नाम सूर्यमित्र, विष्णुमित्र, इन्द्रमित्र, अग्निमित्र, भानुमित्र, भूमिमित्र, जयमित्र, फाल्गुनमित्र, बृहस्पतिमित्र, अणुमित्र, आयुमित्र, वरुणमित्र एवं प्रजापति मित्र थे। इन सभी के सिक्के अहिच्छत्र से प्राप्त हुए है। इनके क्रम एवं समय के बारे में कोई पता नहीं है। लेकिन कालक्रम से यह पुष्ट है कि इन राजाओं ने यहाँ 50 ईसवी से (लगभग) 250 ई० तक राज्य किया एवं यह स्वतंत्र राजा रहे। इन मित्रवंशी शासकों का अंत किस प्रकार हुआ यह ज्ञात नहीं है किन्तु ऐसे उल्लेख मिलते हैं कि मगध के गुप्त साम्राज्य के विस्तार के समय के पूर्व से 250 ईसवी से 328 ई तक यहाँ ऐसे वंश का अधिकार था जो मित्र वंश से भिन्न थे तथा उस समय उस वंश का शासक अच्युत या जिसे समुद्रगुप्त ने हराकर पंचाल को अपने साम्राज्य का अंग बना लिया था। अहिच्छत्र में अच्युत के नाम के सिक्के बहुत प्राप्त हुए हैं। राजा अच्युत को पराजित करके सन् 328 ई. में पंचाल को अपने राज्य में विलीन करने का वर्णन समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति में अकित हैं। इस प्रकार लगभग पाँच सौ वर्षों तक पंचाल के राजा स्वतंत्र अस्तित्व में रहे।

गुप्तकालीन स्वर्ण युग

सम्राट समुद्र गुप्त द्वारा अधिकार किए जाने के बाद लगभग दो सौ वर्षों तक पंचाल गुप्तवंशीय शासकों के अधीन रहा। जो व्यवस्था मगध शासन की थी वही व्यवस्था पंचाल में भी लागू रही। यहाँ हर प्रकार की उन्नति हुई। अहिच्छत्र की खुदाइयों से गुप्तकालीन अवशेष बहुत बड़ी संख्या में प्राप्त हुए है। यहाँ अनेक हिन्दू जैन एवं बौद्ध मंदिर एवं प्रतिमाओं का निर्माण हुआ है। पत्थर एवं मिट्टी की कुछ मूर्तियों तो कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। इनमें पार्वती का केश–विन्यास कलापूर्ण मस्तक एक अद्‌भुत नमूना है। इस काल में पंचाल में प्रत्येक प्रकार के साहित्य की रचना हुई तथा शासन एवं न्याय व्यवस्था उत्तम थी। जनता आर्थिक रूप से सम्पन्न एवं समृद्ध थी ।

कन्नौज साम्राज्य का अंग पंचाल

छठवीं शताब्दी में कन्नौज साम्राज्य की उन्नति के पश्चात् पंचाल राज्य का अस्तित्व समाप्त हो गया। पंचाल राज्य का क्षेत्र तथा वर्तमान में रुहेलखण्ड कहा जाने वाला क्षेत्र उस काल में कन्नौज साम्राज्य का अंग बन गया जो कि लगभग बारहवीं शताब्दी तक उसके अधीन रहा।

कन्नौज का इतिहास भी पंचाल के अन्य प्राचीनतम नगरों जैसा ही पुराना है। इस नगर के अस्तित्व का वर्णन पंचाल के प्राचीन विवरणों में निरन्तर आता रहा है और बौद्ध काल में तो गंगा द्वारा होने वाले व्यापार का यह केन्द्र रहा है किन्तु ईसा की छठवीं शताब्दी में इस नगर की समृद्धि इतनी बढ़ी कि न केवल पंचाल का यह गौरव था वरन्, यह सारे उत्तरी भारत की राजधानी बन गया और विद्या कला–कौशल तथा सम्पन्नता का यह आकर्षक केन्द्र रहा।

कन्नौज के नामों की एक अलग ही महिमा है । इसके कई नाम प्रसिद्ध हैं । सबसे प्राचीनकाल में इसको महोदय कहते थे। ऋषि विश्वामित्र के पिता गाधि के नाम पर उसको गाधिपुर भी कहा गया है। प्राचीन साहित्य में कुश स्थलि एवं कुशिका नाम का भी उल्लेख प्राप्त होता है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसका नाम कुसुमपुर भी लिखा है। लेकिन सर्वाधिक यह नगर कान्यकुब्ज ही कहलाया जो धीरे–धीरे बिगड़ते हुए कन्नौज या कनौज रह गया ।

कान्यकुब्ज केवल इस नगर का नाम न था बल्कि इस प्रदेश विशेष का नाम विख्यात रहा। महोदय नाम राजधानी का रहा और कान्यकुब्ज पूरे प्रदेश का । ऐसी स्थिति काफी समय तक रही लेकिन कालांतर में प्रदेश का नाम चलते–चलते स्थान विशेष का भी पड़ गया और बाद में कन्नौज के नाम से प्रसिद्ध रह गया ।

इसकी स्थापना के बारे में भी कई उल्लेख हैं। वाल्मीकि रामायण में इसको महाराज रामचन्द्र जी के पुत्र कुश द्वारा स्थापित किया हुआ वर्णित है तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में यह नगर सर्वप्रथम अमावसु द्वारा बसाया लिखा गया है। प्राचीनकाल में यह स्थान राजा वलि की राजधानी भी रहा था। पौराणिक गाथा के अनुसार राजा बेणु की कथा भी इसी स्थान से सम्बद्ध है। इस स्थान का विवरण हमें महाभारत में भी मिलता है। कौरव पाण्डवों के बिगृह के सम्बन्ध में एक बार युधिष्ठिर ने कौरवों से पाँच नगर मांगे थे उनमें से कन्नौज–कुश स्थलि भी मांगा था उस समय यह नगर अति उन्नतशील रहा।

बौद्ध साहित्य के अनुसार भगवान बुद्ध त्रयस्त्रमशा स्वर्ग से स्वयमेव कान्यकुब्ज में अवतीर्ण हुए थे। उसी स्थान पर एक स्तूप है जो भगवान बुद्ध के आठ स्तूपों में पाँचवां स्तूप माना जाता है। यहाँ भगवान बुद्ध ने उपदेश भी दिया था। इस प्रकार यहाँ के विभिन्न विवरण प्राप्त हैं लेकिन यहाँ का प्राचीन इतिहास क्रमबद्धता के आधार पर उपलब्ध नहीं है। फिर भी इन अनेक उल्लेखों से यह प्रतीत होता है कि प्राचीनकाल में यह एक ख्यातिप्राप्त एवं समृद्धशाली नगर था ।

मौरवरि वंश का राज्य

यहाँ का वैभवपूर्ण इतिहास ईसवी छठी शताब्दी से प्रारम्भ होता है जब से यहाँ पर कई वंशों ने लगभग छह सौ वर्षों तक राज्य किया तथा उनके कई चक्रवर्ती सम्राट भी हुए जिन्होंने कई बार भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों एवं राज्यों को अपने साम्राज्य का अंग बनाया। इस काल में कान्यकुब्ज को प्रभावशाली साम्राज्य की राजधानी बनने का गौरव सर्वप्रथम मौरवरि वंश के राजाओं के काल के प्रारम्भ से प्राप्त होता है।

ईसा से लगभग 500 वर्षों बाद मगध के शक्तिशाली गुप्त साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया जिसके परिणामस्वरूप भारतीय राजनीति में विशेष परिवर्तन आया। देश के विभिन्न प्रान्तीय सामन्त सबल हो गए और उन्होंने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए। इन सभी प्रान्तीय राजाओं में कान्यकुब्ज के मौरवरि वंश तथा स्थानेश्वर (थानेश्वर) के पुष्यभूति वंश सबसे अधिक प्रसिद्ध हुए ।

कन्नौज के प्रथम मौरवरि शासक ईश्वर वर्मा, सन् 524 ई. में यहाँ के राजा बने। उनके पश्चात् उनके पुत्र ईशान वर्मा तथा उनके पश्चात् उनके पुत्र सर्व वर्मा कन्नौज के मौरवरि राजा हुए। सर्व वर्मा ने गुप्त साम्राज्य के दामोदर गुप्त को युद्ध में परास्त किया जिससे गुप्त साम्राज्य की रही सही शक्ति भी क्षीण हो गई और उत्तरी भारत में मौरवरि राजा और अधिक शक्तिशाली तथा ख्यातिवान हो गए। सर्व वर्मा के बाद अवन्ति वर्मा तथा उनके बाद गृह वर्मा कन्नौज की गद्दी पर बैठे। इन्हीं गृह वर्मा के साथ थानेश्वर के राजा प्रभाकर वर्धन की पुत्री राज्यश्री का विवाह हुआ। इस सम्बन्ध से उत्तरी भारत की दो महान उदीयमान शक्तियाँ आपस में मिल गई और उत्तरी भारत की राजनीति कन्नौज में आकर केन्द्रित हो गईं। प्राचीनकाल से पंचाल राज्य का शासन जितने क्षेत्र में रहा उस सभी पर इस समय मौरवरि वंश का अधिकार हो गया। काम्पिल्य अथवा अहिच्छत्र के स्थान पर राज्य का केन्द्रीय नगर कान्यकुब्ज हो गया।

हर्ष वर्धन 606–647 ई.

थानेश्वर का राजा प्रभाकर वर्धन अत्यन्त शक्तिशाली था । उसके पुत्र राज वर्धन एवं हर्ष वर्धन थे। उसकी पुत्री राजश्री कन्नौज के राजा गृह वर्मा को विवाही थी । मगध के गुप्तवंशी राजा तथा मालवा तथा गौड़ के राजा इन उभरती शक्तियों के मिलन को सहन न कर सके और आक्रमणों एवं युद्धों का ऐसा क्रम चला कि कन्नौज का राजा गृह वर्मा तथा थानेश्वर का राजा राज वर्धन मारे गए परिणामस्वरूप हर्ष वर्धन को, गृह वर्मा के कोई सन्तान न होने के कारण दोनों राज्यों का शासन संभालना पड़ा। कन्नौज दोनों राज्यों का राजनैतिक केन्द्र बना । इस समय से लेकर अगली कई शताब्दियों तक इस नगर को उत्तर भारत की सर्वश्रेष्ठ राजधानी होने का गौरव प्राप्त हुआ ।

महाराजाधिराज हर्ष उत्तर भारत के इतिहास के प्रमुख उच्चकोटि के शासकों में हुए हैं। उन्होंने उत्तर भारत के सभी राज्यों को अधिकार में करके अपना एकछत्र साम्राज्य स्थापित किया। यही नहीं उनके समय में साहित्य, कला और धर्म की भी उन्नति हुई । बाणभट्ट एवं मयूर जैसे लेखक उनकी राज्यसभा में मौजूद थे। हर्ष स्वयं एक अच्छा लेखक था। उसने कई ग्रंथों की रचना की । नालन्दा विश्वविद्यालय को हर्ष ने बहुत सहायता प्रदान की। उसके काल में बहुत बड़ी संख्या में लेखक, कवि और साहित्यकार हुए जिन्होंने विभिन्न प्रकार के ग्रंथों की रचना करके संस्कृत वांड्मय को उन्नत बनाकर संसार में अमर बनाया है। हिन्दू एवं बौद्ध धर्मों का उत्थान हुआ। अनेक भव्य मंदिरों एवं कलात्मक भवनों का निर्माण हुआ। चीनी यात्री ह्वेनसांग इस काल में यहाँ आया उसने हर्ष के राज्य की बहुत प्रशंसा लिखी है । अन्य विभिन्न नगरों की तथा उनके राज्य की वैभवता एवं सम्पन्नता का वर्णन किया है। राजा हर्ष अत्यन्त दानी, सहिष्णु, उदार एवं साहित्यिक व्यक्ति था । उसका समय भारतीय इतिहास का गौरवमय युग था ।

चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा अहिच्छत्र का वर्णन

चीन का प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ यात्री ह्वेनसांग कन्नौज के इस महाप्रतापी राजा के काल में सन् 637 में भारत आया था। पंचाल जनपद इस समय कन्नौज साम्राज्य का ही अंग था और कन्नौज राज्य से ही जाना जाने लगा था लेकिन अहिच्छत्र नगर उत्तरी भारत का एक समृद्ध एवं महत्वपूर्ण नगर था । ह्वेनसांग कन्नौज रहा और अहिच्छत्र भी आया। उसने अपनी यात्रा का विवरण अपनी पुस्तक में लिखा है जिसमें अहिच्छत्र का वर्णन भी किया है। उसके अनुसार अहिच्छत्र एक वैभवशाली नगर था । यहाँ बौद्ध एवं ब्राह्मण, दोनों ही धर्मों का प्रभाव था । यहाँ 12 बौद्ध मठ

थे जिनमें 1000 भिक्षु रहा करते थे। यहाँ पर नौ विशाल हिन्दू मंदिर भी थे तथा सौ जोगी भी नगर में रहा करते थे। यह नगर सत्रह–अट्ठारह ली अर्थात् तीन मील क्षेत्रफल में था। शहर के बाहर उसने एक सर्प कुण्ड का वर्णन किया है जहाँ महात्मा बुद्ध ने सात दिन तक निवास करके नाग राजा को बौद्ध मतावलम्बी बनाया था। हेनसांग ने अहिच्छत्र में एक स्तूप का भी वर्णन किया है जिसे सम्राट अशोक ने बनवाया था। जिस समय चीनी यात्री इस नगर में आया था यहाँ पर हिन्दू धर्म भी उन्नति पर था।

आयुघवंशीय शासक

सन् 647 में सम्राट हर्ष की मृत्यु हो गई। उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं था अतैव उसका मंत्री अरुणाश्य अथवा अर्जुन कन्नौज का राजा हुआ। यह योग्य शासक नहीं था, हर्ष द्वारा स्थापित साम्राज्य छिन्न–भिन्न हो गया। सारा देश पुनः छोटे–छोटे राज्यों में बट गया। कुछ समय के काल के बारे में पता नहीं चलता कि कौन शासक रहे ? आठवीं सदी के प्रारम्भ में यशो वर्मा नामक राजा के बारे में मालूम होता है इसने कन्नौज के वैभव को पुनः स्थापित किया और उसके द्वारा कला एवं संस्कृति का पुनः उत्थान हुआ। भवभूति नाम के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान इसकी राज्यसभा में थे। लगभग एक शताब्दी तक यहाँ का शासन विभिन्न राजाओं ने किया जिनके नाम के आगे आयुध लगता था। इनमें बज्रायुध, इन्द्रायुध और चक्रायुध नाम के राजा प्रसिद्ध हुए।

पाल, राष्ट्रकूट एवं गूर्जर प्रतिहार शासकों के राज्य में कन्नौज की उन्नति

इस काल में यद्यपि कन्नौज का साम्राज्य रूपी स्वरूप नहीं रहा लेकिन यह उत्तरी भारत का प्रमुख राजनैतिक नगर एवं राजधानी रहा। यहाँ पर पाल, राष्ट्रकूट एवं गुर्जर प्रतिहारवंशी राजाओं ने लगभग तीन सौ वर्षों तक शासन किया। इन वंशों के राजा आपस में लड़ते रहे तथा यहाँ कभी किसी, कभी किसी वंश के राजा का शासन रहा। पूरे पंचाल तथा अन्य क्षेत्र पर इनका अधिकार रहता था। इनके समय में कन्नौज हिन्दू संस्कृति का प्रसिद्ध केन्द्र रहा। शिव, विष्णु एवं देवी के अनेक मंदिर इन राजाओं के काल में बने जिनके अवशेष एवं मूर्तियां यहां से बड़ी संख्या में उपलब्ध हुए हैं। जो मूर्तियाँ यहां मिलती हैं उनमें विष्णु, महाविष्णु, शिव, सूर्य, दुर्गा, ब्रह्मा, गणपति, इन्द्र, कार्तिकेय, महिषमर्दनी चतुर्मुख शिवलिंग आदि प्रमुख है तथा मूर्ति विज्ञान की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। राज्य की सम्पन्नता,

आर्थिक उन्नति एवं साहित्य के निर्माण में कन्नौज की पुनः उन्नति हुई। राजा मिहिर भोज तथा उनके पुत्र के काल में यह नगर अत्यन्त वैभव प्राप्त था। अब राज्य की प्रजा ने एक बार पुनः राजा हर्ष के बाद सुख और शान्ति के दर्शन किए।

महमूद गजनबी का आक्रमण और कन्नौज एवं अहिच्छत्र का विध्वंस

सन् 1019 ई. में गजनी के सुल्तान महमूद गजनबी ने कन्नौज पर आक्रमण किया। इस समय यहां का राजा राजपाल था। बहुत बड़ी सेना के सामने वह नहीं टिक सका और उसने महमूद गजनबी की अधीनता स्वीकार कर ली। महमूद गजनबी कन्नौज की समृद्धि को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसने देखा कि इस नगर की विशाल इमारतें आसमान से होड़ ले रही थीं तथा स्थापत्य कला में उनका कोई मुकाबला नहीं था । उसने इस नगर को बुरी तरह लूटा और समस्त नगर को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया। उसने गजनी के शासक को पत्र लिखा जिसमें लिखा था कि "यहाँ अनगिनत मंदिर हैं। इनके निर्माण में लाखों–लाख दीनार लगे होंगे। यदि कोई इस प्रकार का नगर दूसरा बनवाना चाहे तो वह 200 वर्षों से कम में तैयार नहीं हो सकता लेकिन हमारी सेना ने इसको बहुत थोड़े समय में नष्ट कर दिया । ''

इस प्रकार महमूद गजनबी ने सभी भव्य भवनों को धराशायी कर दिया । सारा नगर ईंटों का ढेर बन गया। हजारों वर्षों का वैभव मिट्टी में मिल गया । नगर का विध्वंस इतने बड़े पैमाने पर हुआ कि पुनर्निर्माण भविष्य में नहीं हो सका। अहिच्छत्र नगर भी आपदा से न बच सका और उसका भी अपकर्ष हो गया। इसके बाद भविष्य में अहिच्छत्र कभी आबाद न हो सका तथा निरन्तर खण्डहरों में परिवर्तित होता रहा ।

गहढ़वाल वंश

कन्नौज कुछ वर्षों तक बहुत दयनीय स्थिति में रहा गहढ़वाल वंश के उत्थान से इसका इतिहास पुनः प्रारम्भ होता है। ग्यारहवीं शताब्दी का अन्त होते–होते उत्तर भारत में इस वंश का प्रादुर्भाव हुआ। राजा चन्द्रदेव से इसका प्रारम्भ हुआ। उसने अपने शासन का विस्तार बनारस तक कर लिया तथा अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया । चन्द्रदेव की मृत्यु के बाद मदनपाल, गोविंद चन्द्र तथा विजय चन्द्र यहाँ के राजा हुए। उनके काल में कन्नौज की बहुत उन्नति हुई। मथुरा, अयोध्या, काशी एवं हस्तिनापुर इनके अधिकार में थे। इस समय बनारस विद्या का बहुत बड़ा केन्द्र बना। राज्य में सुख–शान्ति और समृद्धि थी ।

जयचन्द

सन् 1170 में राजा जयचन्द कन्नौज की गद्दी पर आरूढ़ हुए। वह विद्वानों के आश्रयदाता थे। प्रसिद्ध कवि हर्ष उसकी राज्यसभा में थे। वह प्रतापी एवं शक्तिशाली भी थे। उसकी सेना बहुत बड़ी थी। जयचन्द द्वारा रचित रमामन्जिरी नाटिका तथा रासो से ज्ञात होता है कि जयचन्द ने शहाबुद्दीन गौरी को कई बरी पराजित करके भारत से भगाया था। चाहभान (चौहान) राजा पृथ्वीराज से उसकी शत्रुता थी। जयचन्द की बेटी एवं पृथ्वीराज के प्रेम–प्रसंग तथा अपहरण की बहुत प्रसिद्ध कथा प्रचलित है लेकिन तत्कालीन ग्रंथ पृथ्वीराज विजय, हम्भोर महाकाव्य, रमामन्जिरी नाटिका एवं प्रबंध कोष आदि में उसकी कोई चर्चा नहीं है। जयचन्द के विषय में ऐसा भी कहा जाता है कि उसने विदेशी आक्रमणकारी को बुलावा दिया था। यह भी असत्य सिद्ध हो चुका है।

पृथ्वीराज की पराजय

तत्कालीन भारत में गहढ़वाल, चाहभान, चन्देल, चालुक्य एवं सेनवंशी राजा प्रमुख शक्तिशाली थे लेकिन इनमें आपस में शत्रुता थी। उसका पूरा–पूरा लाभ उठाकर गौर एवं गजनी के शासक शहाबुद्दीन गौरी ने कई बार आक्रमण किए। 1191 ई. में थानेश्वर के पास तराइन के मैदान में पृथ्वीराज और मोहम्मद गौरी की मुठभेड़ हुई। गौरी युद्ध में घायल हुआ और पराजित होकर भाग गया। दूसरे वर्ष वह पुनः बहुत बड़ी तैयारी के साथ भारत की ओर चढ़ दौड़ा। इस बार तराइन पर फिर घमासान युद्ध हुआ जिसमें पृथ्वीराज की पराजय हुई और वह युद्ध में मारा गया। अजमेर और दिल्ली पर मुसलमानों का अधिकार स्थापित हो गया। कुतुबुद्दीन ऐबक भारत में प्रशासक बनाया गया।

कन्नौज पर मोहम्मद गौरी का अधिकार

सन् 1194 में शहाबुद्दीन गौरी ने कन्नौज राज्य पर चढ़ाई की। चन्द्रावर पर युद्ध हुआ। जयचन्द ने बहुत बहादुरी से युद्ध किया। अपनी सेना का संचालन स्वयं किया। लेकिन युद्ध में मारा गया। शहाबुद्दीन गौरी किले में जा पहुँचा जहाँ जयचन्द का खजाना सुरक्षित था। यह सब उसके हाथ लगा। यहाँ से वह बनारस पहुँचा वहाँ उसने लूटमार की तथा अनेकों मंदिरों को नष्ट किया। मौहम्मद गौरी सारा राज्य कुतुबुद्दीन को सौंपकर लूट का सारा सामान हाथियों तथा 1400 ऊँटों पर लादकर गजनी चला गया।

कहा जाता है कि जयचन्द के बाद उसका पुत्र हरिश्चन्द्र कुछ दिनों तक शासक रहा। सन् 1198 ई. में पुनः यहाँ मुसलमानों का अधिकार हो गया। आगामी इतिहास में कन्नौज का उल्लेख तो आया है लेकिन इसका ऐश्वर्य समाप्त हो गया । यह दिल्ली के सुल्तानों के राज्य का एक अंग बन गया । कन्नौज का लगभग छह सौ वर्षों का गौरवमय इतिहास रहा । यहाँ विभिन्न प्राचीन अवशेष शेष हैं तथा जगह–जगह इनकी प्राप्ति भी हो जाती है। इन सबसे प्राचीन वैभव का केवल अनुमान ही किया जा सकता है। अब उत्तरी भारत पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। सुल्तान ने बदायूँ को यहाँ का मुख्यालय बनाकर कुतुबुद्दीन ऐबक को यहाँ का प्रतिनिधि (सूबेदार) नियुक्त किया ।

पंचाल में जैन धर्म

पंचाल एवं पंचाल नगर अहिच्छत्र में जैन तीर्थंकरों ने तपस्या की तथा धर्म प्रचार किया है। यहाँ जैन मूर्तियों के साथ–साथ मंदिरों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। प्रारम्भ से ही यहाँ जैन धर्म का प्रचार रहा। जैन धर्म के लोग पंचाल जनपद की उत्पत्ति ही जैन तीर्थंकर से मानते हैं। इस संदर्भ में उल्लेख मिलता है कि जैन धर्म के प्रथम प्रवर्त्तक भगवान ऋषभदेव ने अपने सारे राज्य को 52 जनपदों या देशों में विभाजित किया था जिसमें पंचाल भी प्रमुख था । यहाँ उन्होंने अपने सन्मार्ग के उपदेश देने को भ्रमण भी किया था । अहिच्छत्र नगर को आदि कोट भी कहा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि आदिनाथ भगवान ऋषभदेव के नाम पर इस किले का नाम आदि कोट पड़ा।

जैन धर्म के बाइसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ ने भी अहिच्छत्र में पावन विहार किया था । यहाँ जब उनका तीर्थ चल रहा था तब अहिच्छत्र के राजा विष्णु गुप्त का जन्म हुआ था । अहिच्छत्र से प्राप्त अवशेषों में भगवान नेमिनाथ की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। इससे ज्ञात होता है कि भगवान नेमिनाथ के मंदिर यहाँ थे जिनमें उनकी मूर्तियां विराजमान थीं।

भगवान पार्श्वनाथ की तपोभूमि अहिच्छत्र

अहिच्छत्र जैन तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की तपोभूमि भी था। जैन धर्म में उल्लेख के अनुसार भगवान पार्श्वनाथ मुनि दशा में विहार करते हुए यहाँ पहुंचे और तपस्या में ध्यानालीन हो गए। भगवान के पूर्व भव के वैरी कमठ (संवर) नामक

दानव ने उनकी तपस्या भंग करने के लिए वर्षा की झड़ी लगा दी और ईंट, पत्थर, प्रचण्ड आँधी और उपल वर्षा द्वारा घोर उपसर्ग करने लगा किन्तु स्वात्मलीन पार्श्वनाथ पर इन उपद्रवों का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा और न वह ध्यान से विचलित हुए तभी नाग कुमार देवों के इन्द्र धरणेन्द्र तथा उनकी पत्नी इन्द्राणी पद्मावती के आसन कंपित हुए । धरणेन्द्र एवं पद्मावती ने तुरन्त आकर प्रभु के चरणों में नमस्कार किया । धरणेन्द्र ने सर्प का रूप धारण कर पार्श्वनाथ को ऊपर उठा लिया और सहस्त्र फणों का मण्डप बनाकर उनके ऊपर तान दिया। देवी पद्मावती भक्ति के उल्लास में वज्रमय छत्र तानकर खड़ी हो गईं। भगवान निर्लेप भाव से ध्यान में लीन थे। उन्हें चौत्र कृष्ण चौदस को उसी स्थान पर केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। उनकी तपस्या के समय अहि (नाग) द्वारा छत्र बन जाने के कारण उस क्षेत्र को अहिच्छत्र कहा जाने लगा। जैन साहित्य अनुसार इससे पूर्व इस नगर का नाम संख्यावती था ।

प्राचीन पार्श्वनाथ मंदिर

जैन साहित्य में वर्णित इस कथा के अतिरिक्त अहिच्छत्र में ऐसी मूर्ति भी मिली है जिसमें नाग के सौ फणों वाला फण मण्डल मूर्ति के मस्तक के ऊपर है, आत्म ध्यान में मग्न मुख मुद्रा तथा तापसिक रूप है। यह मूर्ति प्राचीन काल की भगवान पार्श्वनाथ की है। साहित्यिक उल्लेख तथा मूर्ति प्राप्त होने के साथ–साथ इस ऐतिहासिकता का अभिलेख से भी पता चलता है। कटारी खेड़ा स्थान पर एक वैदिक स्तम्भ प्राप्त हुआ है जिसमें पार्श्वनाथ मंदिर के लिए दान का उल्लेख किया गया है, जो कि निम्न है–
'' महाचार्य नन्दि शिष्य महादरि पार्श्वपतिस्य कोत्तारि ''

कोत्तारि का तात्पर्य मंदिर से है। यह दान पार्श्वपति अर्थात् भगवान पार्श्वनाथ के मंदिर को दिया गया था। इस मंदिर का निर्माण सम्भवतः गुप्त काल (328 ई.–524 ई.) में हुआ था। वर्तमान में नुसरतगंज ग्राम के पूर्व में कटारी खेड़ा नाम से ऊँचा–सा टीला है। इसका अर्थ है मंदिर का ढेर । इस कटारी खेड़े से अन्य जैन मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं। इनमें शेर के चिन्ह वाली मूर्तियाँ भी हैं जो कि भगवान महावीर का चिन्ह है। इनके अतिरिक्त अन्य नग्न मूर्तियां भी प्राप्त हुई हैं। इससे प्रतीत होता है कि प्राचीन काल से ही जब मूर्ति पूजा का प्रचलन हुआ जैन धर्म यहाँ प्रमुख रूप से प्रचलित था। जिस समय पार्श्वनाथ जी को केवल ज्ञान हुआ था उस समय यहाँ प्रिय बन्धु राजा राज्य करता था। वह भगवान के दर्शन करने आया था। यह स्थान भगवान के केवल ज्ञान कल्याणक

मध्यकाल

कठेर सूबा 1192–1730

कठेर का उल्लेख सर्वप्रथम आठवीं शताब्दी में प्राप्त होता है। तब से यह नाम अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य तक प्रचलित रहा। उसके बाद रुहेलखण्ड नाम में परिवर्तित हो गया। वर्तमान मुरादाबाद, रामपुर, बदायूँ, बरेली, पीलीभीत एवं शाहजहाँपुर जनपद के क्षेत्र उस काल में कठेर नाम से जाने जाते थे।

कठेर नामकरण एवं कठेरिया राजपूतों का उद्‌गम

इस क्षेत्र का नाम कठेर पड़ने तथा कठेरिया राजपूतों के उद्‌गम के बारे में विभिन्न मत हैं जो कि निम्न प्रकार हैं–

1. इस क्षेत्र की भूमि कठोर है इस कारण यह कठोर शब्द से रूपान्तरित होकर

कठेर कहा जाने लगा तथा यहाँ के निवासी कठेरिया कहलाए ।

2. पुरालेख सम्बन्धी जानकारी के अनुसार देवल से प्राप्त शिलालेख के अनुसार सन् 714 में उज्जैन के परमार वंश के राजा राम ने 36 वंशों को भेंट स्वरूप राज्य बांट दिया जिसमें यह क्षेत्र केहर को दिया । केहर के वंशज कठेरिया तथा यह क्षेत्र कठेर कहलाया ।

3. क्षेत्रीय जनश्रुति के आधार पर सूर्यवंशी राजपूत भीमसेन को राजा जयचन्द द्वारा बनारस से निष्कासित कर दिया गया तब वह कठेर में आकर बस गए। लखनौर (शाहाबाद, जिला रामपुर) के मूल निवासी अहीरों को निष्कासित करके अपना राज्य आंवला तक बढ़ा लिया उनसे कठेरिया वंश का उद्‌भव हुआ ।

4. अन्य जनश्रुति के आधार पर कठेरिया राजपूत बनारस के पास कठेहर से यहाँ आए थे इसी कारण कठेरिया कहलाए एवं यह क्षेत्र कठेर कहलाया ।

मान्य आधार

5. रोहिला क्षत्रियों का क्रमबद्ध इतिहास के लेखक दर्शन लाल रोहिला व रोहिला तक्षक (टांक) क्षत्रिय वंश भास्कर के लेखक आर. आर. राजपूत ने अपनी पुस्तकों में कठेरिया राजपूतों के उद्‌गम पर विभिन्न तर्क उद्‌घृत किए हैं। जिनके अनुसार प्राचीन काल में भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में रावी और व्यास नदी के मध्य माझा क्षेत्र के अन्तर्गत कठ क्षत्रियों का 'कठ गणराज्य' स्थित था। 326 ईसा पूर्व सिकंदर के आक्रमण का मुकाबला करने में घोर युद्ध करने के कारण विवश एवं शक्तिहीन होने पर कठ लोग वहाँ से कूच करके पंजाब, उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग (उत्तरी – पंचाल) एवं राजस्थान आदि स्थानों पर अपनी–अपनी सुविधानुसार जाकर समय–समय पर वहीं के निवासी हो गए। अरावली (राजस्थान) के कठ वीरों ने दक्षिण में जाकर सौराष्ट्र प्रदेश को अपने अधिकार में लेकर उसे काठियावाढ़ नाम से विख्यात किया। जो कठ क्षत्रिय उत्तरी पंचाल में बसे उन्होंने महाराज हर्ष वर्धन के बाद अराजकता का वातावरण होने के कारण यहाँ अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया तथा इस क्षेत्र को कठेर प्रसिद्ध किया एवं स्वयं कठेरिया कहलाए। कठेरिया राजपूतों के उद्‌गम एवं कठेर के विषय में इन समस्त आधारों में यह आधार ही मान्य प्रतीत होता है।

कटेहर– कठेहर अथवा कठेर

अंग्रेजी भाषा के गजेटियरों एवं अन्य पुस्तकों में इस क्षेत्र को कठेर न लिखकर कटेहर एवं कठेहर लिखा गया है जिसका अनुसरण भारतीय लेखकों ने भी अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा की अपनी पुस्तकों में किया है। इस बारे में कठेहर के स्थान पर 'कठेर' लिखा जाना ही उचित है क्योंकि मध्यकाल की इतिहास पुस्तकों–तारीखे फीरोजशाही, तारीखे मुबारक शाही तथा तबकाते नासरी आदि सभी में कठेर ही लिखा गया है। इस प्रश्न का उत्तर कि अंग्रेज लेखकों ने कठेर को कटेहर क्यों लिखा यह हो सकता है कि उर्दू–फारसी भाषा के अनुसार मध्यकालीन लेखकों ने कठेर को कई प्रकार से लिखा है जिसके अनुसार कठेर को कटेहर एवं कठेहर भी पढ़ा जा सकता है। इसलिए अंग्रेज लेखकों ने कटेहर पढ़ा एवं लिखा। जबकि यह कठेर पढ़ा जाना ही तर्कसंगत लगता है क्योंकि कठ क्षत्रियों के नाम के आधार पर ही इस क्षेत्र का नाम कठेर

पड़ा। इस तर्क के अनुसार ही कठ क्षत्रिय कालान्तर में कठेरिया कहलाए एवं उनके अधिकार का क्षेत्र कठेर कहलाया ।

इस भांति इस क्षेत्र को कठेर ही उच्चारित एवं उल्लिखित किया जाना चाहिए।

सीमाएँ एवं प्राचीन नगर

कठेर की दक्षिण पश्चिम सीमा पर गंगा नदी, उत्तर की सीमा पर कुमायूँ का पहाड़ी क्षेत्र तथा पूर्वी सीमा पर अवध का क्षेत्र था। इसके अन्तर्गत वर्तमान रुहेलखण्ड का लगभग समस्त क्षेत्र आता था ।

मध्यकालीन इतिहास लेखकों ने कहीं–कहीं कठेर को कठेर प्रान्त (सूबा) भी लिखा है। इस प्रान्त में प्राचीनकाल में विभिन्न नगर थे जो कि ख्यातिप्राप्त व प्रसिद्ध थे । अहिच्छत्र के अतिरिक्त यहाँ अन्य महत्वपूर्ण स्थान भी थे जिनकी डॉ. फ्यूरर ने पुरातात्विक खुदाइयाँ की थीं। उनकी खोजों के आधार पर कठेर में पीलीभीत से 20 मील दक्षिण–पूर्व की तरफ बीसलपुर तहसील में देवल एवं देवरिया ग्राम के स्थान पर प्राचीन नगर था जिसको मयूता कहते थे। शाहजहाँपुर से 24 मील उत्तर–पूर्व पुवायां तहसील में मांटी, बरेली से 21 मील उत्तर–पश्चिम बहेड़ी तहसील में कावर, बरेली से 7 मील दूर नकटिया के निकट ग्वाला प्रसिद्ध तथा अमरोहे के स्थान पर अम्बिका नगर थे। वर्तमान में अमेरोहे को छोड़कर सभी समाप्त हो चुके हैं। उनके अवशेष टीलों एवं पुरानी ईंटों के ढेर के रूप में शेष हैं ।

कठेरिया राजपूतों का उत्थान

महमूद गजनबी के आक्रमण के पश्चात् पंचाल का राजधानी नगर अहिच्छत्र समाप्त हो गया। इस क्षेत्र में कोई भी प्रशासनिक एकता नहीं रही । प्रभुत्व एवं स्वामित्व के लिए विभिन्न राजपूत वंशों ने लगभग दो सौ वर्षों तक निरन्तर संघर्ष किया। इन्हीं परिस्थितियों में कठेरिया राजपूतों ने यहाँ अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया । उनका कठेर संभाग पर आधिपत्य किस समय स्थापित हुआ तथा अधिकार करने वाले पहले राजाओं के नामों के बारे में कोई निश्चित उल्लेख प्राप्त नहीं होता। जो उल्लेख प्राप्त है उनके आधार पर उन्होंने यहाँ की मूल जातियों को निष्कासित करके अपना अधिकार जमाया। शाहजहाँपुर गजेटियर के अनुसार रुहेलखण्ड का पूर्वी भाग बाछल राजपूतों के आधिपत्य में था जब तक कि सन् 1174 में कठेरिया राजपूतों ने यहाँ अपना आधिपत्य स्थापित नहीं कर लिया।

मोहम्मद गौरी के आक्रमण के समय इस क्षेत्र का एकमात्र व्यवस्थित नगर बदायूँ था। बदायूँ के अतिरिक्त सारे कठेर पर कठेरियों का अधिकार था। लेकिन इनका कोई राजधानी नगर नहीं था। विभिन्न सैनिक दुर्ग थे जो कि गढ़ कहलाते थे। उस काल में राजा के लिए राय या राव का प्रयोग किया जाता था ।

सुल्तान मोहम्मद गौरी द्वारा बदायूँ को जीतने के बाद यहाँ सरकार (सूबा मुख्यालय) बनाने के समय तथा बाद के काल में राजपूतों का अधिकार इस कठेर के क्षेत्र में कहाँ तक रहा यह निश्चित विदित नहीं है लेकिन दिल्ली के मुसलमान सुल्तानों ने कठेर को अपने आधिपत्य में रखने के लिए समय–समय पर विकराल सैनिक आक्रमण किए तथा भय एवं आतंक बनाए रखने के लिए क्रूरतापूर्वक दमन भी किए जिनका यह राजपूत मुकाबला करते रहे। लेकिन उनमें उनके मुकाबले की वह सैनिक शक्ति नहीं थी जो उनका सीधा मुकाबला करते इसलिए वह लोग अधिकतर वक्र–युद्ध (छापामार युद्ध) पद्वति भी अपनाते थे तथा इस क्षेत्र पर अपना अधिकार बनाए रखते थे । यह क्रम दिल्ली के सल्तनतकालीन बादशाहों के पूरे काल लगभग तीन सौ वर्ष तक चला।

बदायूँ पर कुतुबुद्दीन ऐबक का आधिपत्य

दिल्ली के पृथ्वीराज चौहान तथा कन्नौज के राजा जयचन्द को परास्त करने के बाद शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी ने अपने प्रतिनिधि कुतुबुद्दीन ऐबक को बदायूँ पर आक्रमण करने भेजा। इस समय बदायूँ का राजा धर्मपाल था । ऐबक के आक्रमण का मुकाबला वह नहीं कर सका तथा हार गया। बदायूँ के क्षेत्र पर ऐबक का अधिकार हो गया (सन् 1196) । ऐबक ने सम्भल पर भी अधिकार स्थापित कर लिया। सन् 1202–3 तक ऐबक पुनः बदायूँ आया । यहाँ उसने तुर्कों की जड़ें मजबूत करने का प्रयास किया लेकिन यहाँ के राजपूतों के अस्तित्व को समाप्त कर देना आसान नहीं था । बदायूँ को इस क्षेत्र का सूबा मुख्यालय बनाया गया तथा यहाँ तुर्की शासन प्रणाली स्थापित करके सूबेदार की नियुक्ति की गई ।

आंवला टकसाल नगर (1200 ई.) बनाया गया

आंवला इस समय एक छोटा कस्बा था । यहाँ कठेरिया राजपूतों का गढ़ (दुर्ग) था। वह यहाँ से बदायूँ, अवध तथा गंगा तक के क्षेत्र पर अधिकार स्थापित

रखते थे। तुर्कों ने इस पर अधिकार कर लिया तथा इसको टकसाल नगर बनाया। यहाँ से कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपने स्वामी शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी के नाम से सिक्के ढलवाए। आंवला में जो सिक्के ढले वह तांबे के थे। उन पर मोहम्मद बिन साम (शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी का संक्षिप्त नाम) लिखा हुआ था। यह षठ्भुज रूप में दो त्रिभुजीय रूप से खुदा हुआ था। इसका वजन 2.26 ग्राम तथा इसका नाप 06 इंच है। सिक्के की पलट पर आंवला लिखा हुआ है।' ऐबक ने आंवला में टकसाल स्थापित की और इस समय यहाँ राजपूतों का गढ़ (दुर्ग) था इससे यह विदित होता है कि इस समय से काफी पूर्व से आंवला राजपूतों का शक्तिशाली गढ़ रहा होगा।

कठेर पर अधिकार के लिए दिल्ली सुल्तानों के आक्रमण

इल्तुतमिश के दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के समय तक यहाँ तुर्कों का अधिकार स्थायी नहीं रहा। सन् 1206 में फर्रुखाबाद व बदायूं पर राजा हरिश्चन्द्र ने पुनः अधिकार कर लिया । पुनः इल्तुतमिश ने इस क्षेत्र को अपने अधिकार में किया लेकिन स्थायी रूप से यहाँ तुर्कों का अधिकार इल्तुतमिश के सुल्तान बनने के बाद हुआ जब उसने यहाँ के राय मान को पराजित करके इस क्षेत्र को अपने अधिकार में किया। लगभग तीस वर्षों तक यहाँ शान्ति रही। मिनहाजुससिराज के अनुसार सन् 1242–43 में बदायूं के सूबेदार ताजुद्दीन सन्जर कुतलक खां ने कठेर पर कई आक्रमण किए। बुरी तरह दमन करके क्षेत्र को अपने अधीन किया और बहुत से स्थानों पर मस्जिदों का निर्माण कराया।

नासिरउद्दीन महमूद का कठेर पर आक्रमण सन् 1254

ऐतिहासिक पुस्तक तवकात–ए–नासिरी में कठेर का वर्णन इल्तुतमिश के पुत्र के आक्रमण के समय किया गया है। कठेर के हिन्दुओं ने उसके सम्बन्धी रजीउलमुल्क इजाजउद्दीन दरमाशी को मार डाला अतः सुल्तान नासिर–उद्दीन महमूद ने कठेर पर हमला किया। पुस्तक के वर्णन के अनुसार अपने शासन के नवें वर्ष (सन् 1254) में बादशाह सेना लेकर बदायूं की ओर चला। सहारनपुर जिले में

मायापुर नामक स्थान से गंगा पार करके बिजनौर होता हुआ वह पहाड़ियों के किनारे–किनारे राहिब (रामगंगा) के किनारे पर आ गया और कठेर पर हमला किया। अनेक लोगों का वध करके अपने सम्बन्धी की मौत का बदला लिया। नौ दिन बदायूं में रहकर वापस दिल्ली चला गया। इसप्रकार इस समय दिल्ली सुल्तान का कोई विशेष अधिकार कठेर पर नहीं था तथा बदायूं के सूबेदार भी शक्तिशाली नहीं थे ।

बलवन का आक्रमण

गयासुद्दीन बलवन के शासन काल में कठेर में अराजकता फैली। सम्भल, बदायूं, अमरोहा आदि सभी स्थानों पर राजपूतों ने सल्तनत के विरुद्ध – विद्रोह कर दिया । बलवन इनको दबाने के लिए स्वयं दिल्ली से चल पड़ा तथा इतनी जल्दी चला कि उसने अपने डेरे पीछे छोड़ दिए तथा तीसरे दिन कठेर में पहुंच गया। उसने पांच हजार की सेना देकर सेनापतियों को आज्ञा दी कि कठेर जलाकर तहस–नहस कर दो, नौ वर्ष से छोटे लड़कों, स्त्रियों एवं लड़कियों को छोड़कर प्रत्येक का वध कर दो। तारीखे फीरोजशाही के लेखक बर्नी ने इस अभियान का जिक्र करते हुए लिखा हैं कि बलवन कुछ दिन कठेर में ठहरा एवं व्यक्तिगत रूप से निर्देश दिए। जबरदस्त कत्लेआम हुआ। लोगों के दिलों में आतंक स्थापित किया गया। गांव के गांव समाप्त कर दिए गए यहाँ तक कि लाशों के ढेर प्रत्येक गांव में देखे जा सकते थे। जंगल भी लाशों से पट गए। लाशों की दुर्गन्ध गंगा तक पहुंची। पूरा कठेर पददलित किया गया एवं लूटा गया। इसके परिणामस्वरूप बलवन के शासन काल पर्यन्त यहाँ कोई विद्रोह नहीं हुआ तथा कठेर के क्षेत्र बदायूं, सम्भल तथा अमरोहा आदि सभी शांत रहे।

जलालउद्दीन खिलजी का आक्रमण सन् 1291

इसके पश्चात् तुर्की हस्तक्षेप की जानकारी जलालुद्दीन फीरोज खिलजी के शासन काल में मिलती है। सन् 1291 में बलवन के भान्जे मलिक छज्जू ने विद्रोह कर दिया। सुल्तान ने अपने पुत्र अर्कली खाँ के नेतृत्व में सेना के अग्रिम दस्ते को आगे भेजा। बर्नी के अनुसार युद्ध गंगा के किनारे बदायूं के निकट हुआ। मलिक छज्जू भाग गया और बाद में पकड़ा गया। खिलजी सेनाओं ने कठेर पर भी हमला किया क्योंकि कठेर के कुछ राजपूतों ने मलिक छज्जू का साथ दिया था।

राव खडग सिंह का उत्थान

जलालउद्दीन के आक्रमण के बाद कठेर में बहुत वर्षों तक शान्ति रही लेकिन फीरोज शाह तुगलक के काल में राजपूत पुनः शक्तिशाली हो गए। एक नये वीर खडग सिंह की उन्नति हुई। उन्होंने दिल्ली सल्तनत का जुआ उतार फेंका और कठेर को स्वतंत्र कर लिया। शाहजहाँपुर गजेटियर के अनुसार खडग सिंह ने अहर (उस समय बरेली का क्षेत्र अहर कहलाता था) तथा बीसलपुर के जंगलों पर अधिकार कर लिया तथा रामगंगा से शारदा तक सम्पूर्ण क्षेत्र उनके अधिकार में आ गया। इस समय बदायूं का सूबेदार सय्यद महमूद था। उसको तथा उसके भाई को जान से मार दिया तथा दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।' जब सुल्तान फीरोज शाह तुगलक को इसकी सूचना मिली तब उन्होंने कठेर पर आक्रमण कर दिया । खडग सिंह मुकाबला नहीं कर सके तथा यहाँ से कूच करके कुमायूँ की पहाड़ियों में चले गए ।

फीरोज शाह के कठेर पर आक्रमण सन् 1379–1385

फीरोज शाह ने समस्त कठेर पर अधिकार स्थापित कर लिया तथा यहाँ की निर्दोष प्रजा सुल्तान के क्रोध का शिकार बनी। सुल्तान ने प्रान्तीय मुख्यालय अमरोहा से हटाकर सम्भल बना दिया। सरदार मलिक दाऊद को सेना देकर नियुक्त किया तथा आदेश दिया कि वह उस समय तक इस क्षेत्र को लूटे तथा नष्ट करे जब तक कि सय्यद महमूद को मारने वाला पकड़ा न जाए । इलियट तथा डाउसन के अनुसार शिकार का बहाना बनाकर छः वर्षों तक सुल्तान ने भी इस क्षेत्र में कूच किया। बदायूं में भी उसने नया सूबेदार मलिक कुबूल को नियुक्त किया। इस नए सूबेदार ने बदायूं में एक मोहल्ला कुबूलपुरा स्थापित किया जो अब भी है। कठेर में प्रत्येक वर्ष दमन कार्य से यह प्रदेश वीरान हो गया। इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार छः वर्ष तक यहाँ कोई भी निवासी दिखाई नहीं दिया तथा न ही एक जरीब भूमि जुती हुई नजर आई। सुल्तान फीरोज ने कठेर का दौरा अंतिम बार सन् 1385–86 में किया। तब बदायूं से सात कोस की दूरी पर व्योली में एक किला बनवाया जिसका नाम फीरोजपुर रखा जो कि आखरीपुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 10 फीरोज शाह ने यहाँ के क्षेत्र को 'आंवला का जंगल' घोषित किया और इसे शाही शिकार गाह बनाया।

अतरछेड़ी की स्थापना (लगभग 1400 ई.)

सन् 1398 में तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली जीतकर उसको बुरी तरह लूटा जिससे दिल्ली हुकूमत बहुत कमजोर हो गई। इसका लाभ उठाकर कठेर में राजपूत फिर मजबूत हो गए और फीरोज तुगलक के शिकारगाह आंवला के जंगल पर अधिकार कर लिया और जगह–जगह बस गए। नए–नए गांव भी बसाए। उनमें प्रमुख रूप से ठाकुरगढ़ एवं अतरछेडी बसाए।'' ठाकुरगढ़ समाप्त हो गया लेकिन अतरछेडी अब भी मौजूद है तथा वहाँ कठेरिया राजपूतों के वंशज अब भी रहते हैं। यह आंवला नगर से 8 किलोमीटर दूर है तथा निसोई स्टेशन के पास है।

राव हरिसिंह देव का उत्थान

खडग सिंह के भाई राव हरिसिंह देव ने गोला (गोला रायपुर, जिला शाहजहाँपुर) को अपना मुख्यालय बनाया था। तुगलक वंश के अंतिम दिनों में उन्होंने इतनी शक्ति अर्जित कर ली थी कि बदायूं के सूबेदार उनका सम्मान करते थे। तारीखे मुबारक शाही के अनुसार दिल्ली सुल्तान दौलत खां ने कठेर की यात्रा की तब राव हरि सिंह ने उनसे भेंट की । राव हरि सिंह के बदायूं के सूबेदार महावत खाँ से बहुत अच्छे सम्बन्ध थे। आंवला से लेकर कुमायूँ की पहाड़ियों तक हरिसिंह का अधिकार था। उन्होंने दिल्ली के बादशाह खिज्र खाँ के विरुद्ध विद्रोह किया जिसमें ताज–उल–मुल्क को उन्हें दबाने भेजा गया। इसमें दोनों पक्षों में समझौता हो गया।

खिज्र खाँ के बाद मुबारक शाह दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। उसके समय में भी राव हरिसिंह ने विद्रोह किया जिसे दबाने मुबारकशाह स्वयं कठेर आया । पुनः सुल्तान तथा कठेरिया राजा में समझौता हो गया। माल–ओ–खिदमती तय कर लिए गए। इसके पश्चात् रामसिंह हरिसिंह के पुत्र राव बने। उनके समय में भी दिल्ली हुकूमत से सम्बन्ध सामान्य रहे। कहा जाता है कि रामपुर की नींव इन्हीं रामसिंह ने डाली थी ।

कठेर में शान्ति

दिल्ली के सय्यद वंश के काल में कठेर में किसी विद्रोह का उल्लेख किसी भी ऐतिहासिक पुस्तक से प्राप्त नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि अब राजपूतों ने शान्तिमय जीवन प्रारम्भ कर दिया था। सन् 1494 तक राजपूतों ने कोई विद्रोह नहीं किया। इस वर्ष पुनः

राजपूत लोगों ने संगठित होकर बदायूं सरकार की हुकूमत का जुआ उतार फेंका और विद्रोह कर दिया परन्तु शक्तिशाली दिल्ली सल्तनत के आगे वह टिक न सके। शाडी सेनाओं द्वारा दबा दिए गए। लोदी वंश के शासकों के काल में यहाँ शान्ति रही। इस भांति सल्तनत काल में राजपूतों का इतिहास विद्रोह की एक शृंखला का इतिहास है जिससे उन्होंने दिल्ली के शासकों से स्वतंत्र रहने के लिए संघर्ष किए।

मुगल काल

सन् 1526 में दिल्ली पर बाबर का अधिकार हो जाने के बाद भारत में मुगल वंश की नींव पड़ गई। अकवर के काल से एक सुव्यवस्थित एवं शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित हुआ जिससे सारे देश में परिवर्तन आया। कठेर में भी परिवर्तन आया। बाबर ने जब दिल्ली पर अधिकार किया तब सम्भल सूवा भी उसके अधीन हो गया। यहाँ का सूबेदार अपने बेटे हुमायूँ को बनाया। बावर के बाद दिल्ली का बादशाह हुमायूँ बना। उसको हराकर शेरशाह सूरी ने दिल्ली पर अधिकार किया। उसने ईसा खाँ को यहाँ का सूबेदार बनाया और स्वयं भी कठेर में आया और अपनी स्मृति बनाए रखने के लिए बरेली जिले के कांवर नामक स्थान का नाम बदलकर शेरगढ़ रख दिया जो अब भी इसी नाम से जाना जाता है।

राजा मित्र सेन का उत्थान

इस समय कठेरिया राजा मित्रसेन ने बहुत उन्नति की। वह शेरशाह की अधीनता स्वीकार नहीं करना चाहते थे। लेकिन सम्भल के ईसा खाँ ने सफल प्रयत्न करके उनको दिल्ली साम्राज्य के अधीन किया। राजा मित्र सेन का मुख्य गढ़ (दुर्ग) लखनौर (आधुनिक शाहाबाद, जिला रामपुर) था जब शेरशाह कठेर में आया तब मित्रसेन ने उसे बहुत प्रभावित किया जिससे खुश होकर उसने मित्रसेन को सम्भल का यथार्थ में सूबेदार बना दिया। जब दिल्ली पर पुनः मुगलों का अधिकार हुआ तब भी राजा मित्रसेन सम्भल के वास्तविक सूबेदार रहे।

सम्राट अकबर एवं जहाँगीर के समय में यहाँ मुजफ्फर हसन, मिर्जा आइन उल मुल्क, डसन कुली खी, बहराम खी कटेर (सम्भल) के सूबेदार रहे। इस काल में कठेर में शान्ति रही। जगह–जगह नए–नए गांव बस गए। अधिक मात्रा में कृषि होने लगी। खुशहाली बढ़ गई। यहाँ के राजपूतों ने भी उन्नति की। इस समय लखनौर, कांवर एवं आंवला उनके मुख्य गढ़ थे अकबर के समय में वासदेव एवं

मध्यकाल (कठोर सूबा)

बरलदेव ने दिल्ली के विरूद्व विद्रोह किया था जिसे दबा दिया गया। शाहजहॉ के काल में एक नया परिवर्तन किया गया कि बरेली को सूबा का मुख्लालय बना दिया गया।

राजा रामसुख

शाहजहॉ के काल में राजा राम सुख स्वतंत्र हो गये। जगह–जगह पर अधिकार कर लिया। कठेर में उनका प्रभाव बढ़ गया। दिल्ली से उन पर आक्रमण के लिए सम्भल

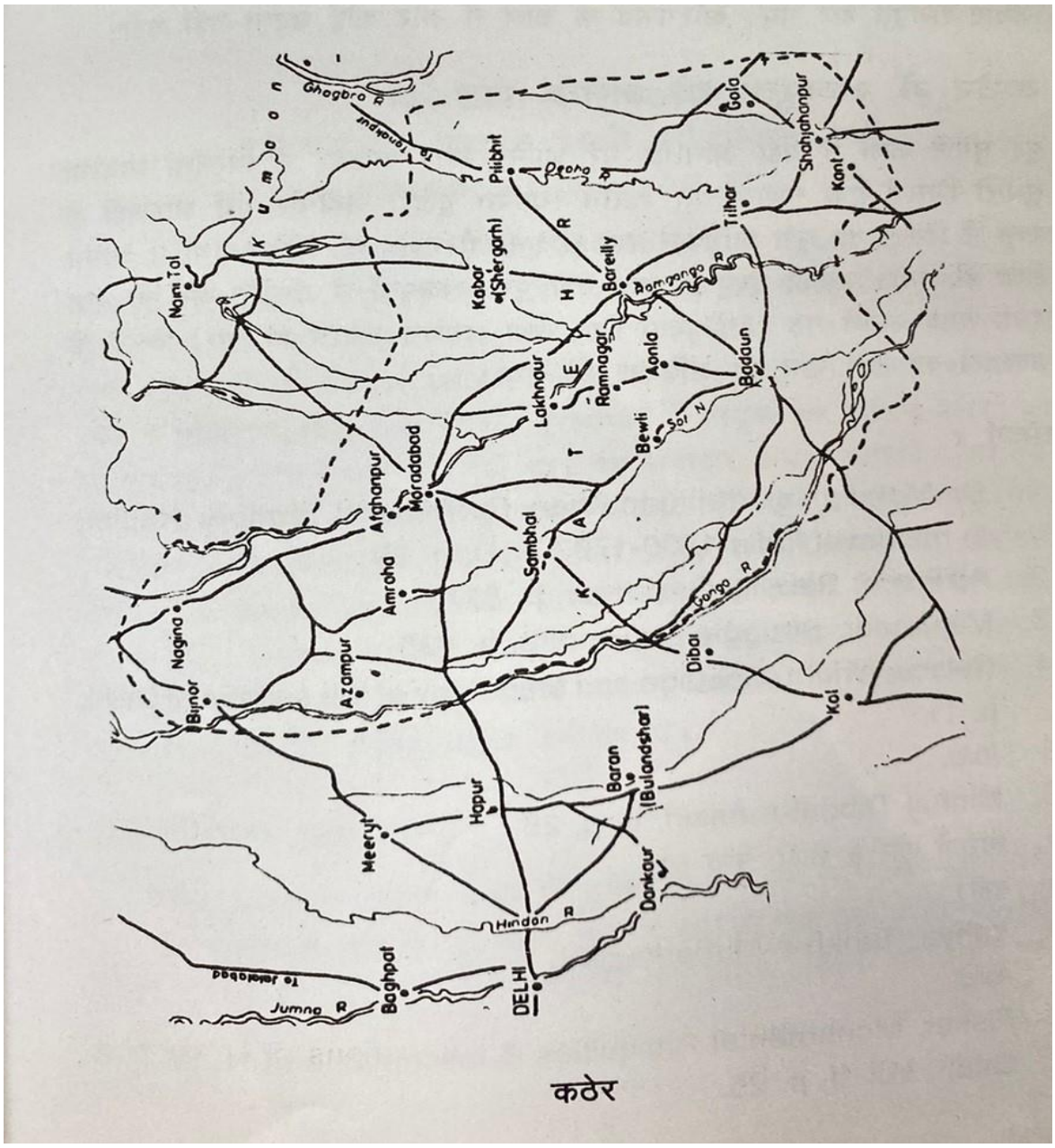

कठेर

के सूबेदार रूस्तम खाँ को भेजा गया। युद्ध में रामसुख की मृत्यु हुई तथा चौपाला (मुरादाबाद) आदि सभी स्थानों पर पुनः मुगल राज्य का अधिकार हो गया। इस काल में मलिहाबाद के अब्दुल्ला खाँ, राजा मानिकचन्द्र खत्री तथा उसका पुत्र मकरन्द राय यहाँ के सूबेदार रहे। मकरन्दराय के काल में पिहानी के बदर खाँ तथा राजपूतों के विद्रोह हुए जो दबा दिए गए। मोहम्मद रफी को यहाँ का सूबेदार बनाया गया। इसके समय में जंघारे राजपूतों ने दिल्ली के विरूद्व विद्रोह किया लेकिन वह भी दबा दिया गया। दयोरिया के समीप खरदिया नामक स्थान पर युद्ध हुआ जिसमें जंघारे राजपूत हार गए। औरगंजेब के काल में और कोई घटना नहीं घटी।

कठेर में राजपूतों के अनेक गढ़

पूरे मुगल काल में यहाँ आमतौर पर शन्ति रही। अकबर ने वित्तीय व्यवस्था सुधारी जिसमें एक सुव्यस्थित शासन स्थापित हुआ। जहाँगीर एवं शाहजहाँ के काल में दिल्ली का पूरा अधिकार रहा लेकिन औरगंजेब के अंतिम वर्षो में शासन ढीला हो गया। उसकी मृत्यु के बाद यहाँ पुनः राजपूतों ने उन्नति कर ली तथा जगह–जगह अपने गढ़ (दुर्ग) बना लिए तथा लगभग स्वतंत्र हो गए। दिल्ली के बादशाहों का नाम मात्र का अधिकार रह गया।

संदर्भ :

1. Dr. Mohd. Ifzalurrehman khan, Rohilkhand Territory (kather) in Medieval India 1200-1707 A.D p.29.
2. Atkinson, Bareilly Gazatteer, p.577.
3. Majumdar, struggle for Empire, p.135.
4. Nelson wright, Coinage and Metrology of the sultans of Delhi, p.11.
5. Ibid.
6. Minhaj Tabqat-e-nasiri, II, p.26.
7. तरीखे फीरोज, शाही, पृष्ठ 69.
8. वही।
9. Yahya, Tarikh-e-Mubarkasahi.
10. Ibid.
11. Fisher, Monumental antiquities & Inscriptions of N.W.P. & Oudh,Vol. II p.25.

रूहेलखण्ड

1730 से वर्तमान तक

रियासत–रूहेलखण्ड

संस्थापक नवाब अली मोहम्मद खॉ

शासन 1730–1749 ई.

अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली के मुगल साम्राज्य के बादशाह बहुत कमजोर हो गए। उनका अपने राज्य के जागीरदारों, जमींदारो आदि पर नियंत्रण बहुत कम रह गया। कठेर क्षेत्र में भी अराजकता फैल गई। यहाँ के जमींदार लगभग स्वतंत्र हो गए। यहाँ का दिल्ली दरबार की ओर से यद्यपि फौजदार तथा हाकिम मुरादाबाद में नियुक्त था लेकिन उसका कोई भी नियंत्रण इन जमींदारो पर नहीं था। यह जमींदार अपने आपको राजा कहते थे तथा प्रभुता एवं सत्ता के लिए आपस में लड़ते भी रहते थे। इस समय पीपली (तहसील स्वार जिला रामपुर) के नरपत सिंह, राजपुर (परगना चौमोहल्ला रामपुर) के कंचन सिंह, आंवला (जिला बरेली) के अर्जुन सिंह तथा बाद में दुर्जन सिंह, रतनगढ़ (बहेड़ी, जिला बरेली) के खेमकरन, मदकर (तहसील शाहाबाद, जिला रामपुर) के मदारा सहाय, आजौन के लक्ष्मण सिंह तथा अकबराबाद के कीरत सिंह प्रमुख जमींदार थे।

रूहेलों का परिचय

इसी समय रूहेला पठानों ने कठोर में प्रवेश किया। यह लोग अफगानिस्तान में रोह नामक क्षेत्र से यहाँ आए। इनके बारे में फारसी एवं उर्दू में अनेकों पुस्तकें लिखी गई है। इनमें गुलरहमत, तारीख फर्रूखाबाद, जाम जहॉ नमा, हयात

अफगानी तथा तारीखे फरिश्ता में इनका मूल स्थान रोह वर्णित किया गया है। जिसका फैलाव सिंध नदी से काबुल व कंधार तक तथा कोह कराकरम से बलोचिस्तान तक था। यहाँ की भाषा पस्तो (पख्तो) थी। पख्तों के कारण से ही रुहेलों को पख्तून भी कहा जाता है। यह पख्तून शब्द ही अपभ्रंश होकर पठान हो गया। अफगानी क्षेत्रों में इन लोगों को अफगान कहा जाता है। इस क्षेत्र में आने के बाद रोह के निवासी होने के कारण इनको रुहेला पठान कहा गया।

दाऊद खाँ

दाऊद खाँ लगभग 1707 ई. में रोह से कठेर में आए थे। वह हाफिज रहमत खाँ के पिता शाह आलम के दत्तक (गोद लिए) पुत्र थे। कठेर में आने से पूर्व वह हरिद्वार आए वहाँ घोड़े खरीदे फिर कुमायूँ में रहे। उसके बाद कठेर में आए। कठेर में वह अपने साथियों के साथ वनगढ़ में रहे जहाँ एक कच्ची गढ़ी बना ली। थोड़े समय पश्चात् अफगानिस्तान से और रुहेले भी उनके पास आकर एकत्रित हो गए जिनसे उनकी एक सेना तैयार हो गई जिसमें लगभग 80 घुड़सवार तथा तीन सौ पैदल सैनिक हो गए।

दाऊद खाँ को उत्तराधिकारी प्राप्त होना

इसके पश्चात् वह अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ राजा मदकर (तहसील शाहबाद जिला रामपुर) के यहाँ पहुंच गए। इसी समय रतनगढ़ के जमींदार ने राजपुर के जमींदार पर आक्रमण कर दिया तथा हराकर कस्बे को लूट लिया। इस पर राजपुर के जमींदार ने मदकर के जमींदार से सैनिक सहायता मांगी जिससे रतनगढ़ के जमींदार से बदला लिया जा सके। मदकर के जमींदार ने सहायता प्रदान की तथा अपनी सेना को दाऊद खां के सैनिकों के साथ रतनगढ़ पर आक्रमण को भेजा। रतनगढ़ के जमींदार से वाकोली (बहेड़ी, जिला बरेली) के स्थान पर युद्ध हुआ जिसमें वह हार गया तथा भाग गया। युद्ध के पश्चात् दाऊद खाँ को एक होनहार बालक प्राप्त हुआ जिसको उन्होंने अपना बेटा अंगीकार करके लालन–पालन किया तथा यही बालक बड़ा होकर रुहेलखण्ड रियासत का संस्थापक नवाब बना।

दाऊद खाँ को दिल्ली के बादशाह द्वारा शाही एवं व्योली की जागीर मिलना

दिल्ली साम्राज्य के सिंहासन पर शहजादा रोशन अख्तर मोहम्मद शाह के नाम से सितम्बर 1719 में बैठा बादशाह बनने के बाद दक्षिण के सूबेदार आसिफजाह को दवाने के लिए शाही सेनाओं ने दिल्ली से कूच किया तथा आगरे में आकर रुकीं। शाही आदेश के अनुसार सभी स्थानों से सेनाएं बुलायी गई जो दक्षिण के आक्रमण में शाही सेनाओं का साथ देने को वहाँ एकत्रित हुई। मुरादाबाद से अजमतउल्ला खाँ ने भी फौज भेजी। इस समय दाऊद खाँ इनकी सेना में रिसालदार थे। उनको आगरा भेजा गया जहाँ पहुंचकर वह शाही सेना के साथ सम्मिलित हो गए। दक्षिण की ओर रवाना हुए थे कि आगरा तथा फतेहपुर सीकरी के बीच में टोड़ा के स्थान पर सय्यद हुसैन अली खाँ का कत्ल कर दिया गया जिससे उसकी सेना तथा बाकी बादशाह की सेना में छोटा सा युद्ध हुआ। युद्ध में दाऊद खाँ ने बादशाह की सेनाओं का साथ दिया जिनको विजय प्राप्त हुई।

इस मुठभेड़ के बाद वादशाह आगरा वापस आ गया। वह यहाँ से अपनी सेनाओं के साथ दिल्ली वापस जा रहा था कि सय्यद हुसैन अली खाँ के भाई सय्यद अब्दुल्ला खाँ ने शाही सेना पर आक्रमण कर दिया। शाहपुर के निकट दोनों ओर की सेनाओं का मुकाबला हुआ। सय्यद अब्दुल्ला खाँ के पास थोड़ी सेना थी जिसमें मरहठे भी थे। दाऊद खाँ अपने रिसाला के साथ बादशाह की तरफ थे। उसका मुकाबला मरहठों से हुआ जिनको उन्होंने पराजित किया। विजय बादशाह को प्राप्त हुई। इस युद्ध से दाऊद खाँ को बहुत लाभ हुआ। उनको बादशाह ने खुश होकर ब्योली परगना सतासी सरकार बदायूँ तथा मौजा शाही परगना आजौन (मीरगंज जिला बरेली) जागीर में दिए। यह व्योली वही स्थान था जहां दाऊद खाँ स्थापित ये तथा यहीं इनके बीवी बच्चे रहते थे उस समय यह दोनों स्थान गाँव के रूप में थे लेकिन अब कस्बों की स्थिति में है।

दाऊद खाँ की मृत्यु–अली मोहम्मद खाँ रुहेला सरदार (1726 ई.)

आगरा से आकर दाऊद खाँ ने राजा कुमायूँ के यहाँ मुलाजमत कर ली। उनका रिसाला तराई के क्षेत्र में तैनात किया गया। कुछ समय पश्चात् राजा कुमायूँ तथा मुरादाबाद के फौजदार अजमत उल्ला खाँ की सेनाओं में युद्ध हुआ। इसमें राजा की पराजय हुई। हेमिल्टन ने रोहेला अफगान में वर्णन किया है कि दाऊद खाँ ने युद्ध

से पूर्व राजा देवी चंद की मुलाजमत से इस्तीफा दे दिया। लेकिन राजा देवी ने दाऊद खाँ को ही अपनी पराजय का दोषी माना तथा पिछली तनख्वाह (वेतन) देने के बहाने से दाऊद खाँ को अल्मोड़ा बुलाया और वहाँ उनको मय उनके चंद साथियों के कत्ल करवा दिया। इनके कत्ल की सूचना जब रुद्रपुर में उनके रिसाला को मिली तब उसने अपना सरदार अली मोहम्मद खाँ को निश्चित किया। मुरादाबाद के फौजदार अजमत उल्ला खां ने अली मोहम्मद खाँ की सरदारी को स्वीकृति दे दी। इनके पिता की जागीर भी उनको दे दी तथा उनके रिसाला को अपनी फौज में शामिल कर लिया।

अली मोहम्मद खाँ दाऊद खाँ के दत्तक पुत्र थे। उनमें सरदारी के सभी गुण मौजूद थे। उनकी आयु इस समय बीस वर्ष थी। उनकी जन्मतिथि के बारे में विभिन्न पुस्तकों में 1117 हिजरी सन् 1706 वर्णित है। मुरादाबाद के फौजदार अजमतउल्ला खाँ के यहाँ रहने के बाद यह मदकर के जमींदार के यहाँ पहुँच गए लेकिन शीघ्र ही वहाँ से भी चले आए तथा ब्योली, जो उनके पिता की जागीर थी, में आ गए तथा यही मे रुहेलखण्ड पर अधिकार करने का अभियान प्रारम्भ किया।

नवाब अली मोहम्मद खाँ का आंवला व मनौना पर अधिकार (1730 ई.)

सबसे पहले अली मोहम्मद खाँ ने आंवला के जमींदार राजा दुर्जन सिंह पर आक्रमण करके यहाँ अपना अधिकार स्थापित किया और आकर बस गए। आंवला में बह जीवन पर्यन्त रहे। उन्होंने जब पूरे रुहेलखण्ड को विजित किया तब भी अपनी रियासत की राजधानी आंवला को बनाया। यहीं पर उनकी मृत्यु हुई। उसके बाद रुहेलों द्वारा रुहेलखण्ड को बांट लेने के पश्चात् भी आंवला रुहेलों का राजनैतिक केन्द्र (मरकज) रहा।

मुरादाबाद के नाजिम अजमत उल्ला खां से पहले से ही उनके मित्रता के सम्बन्ध थे। अब अली मोहम्मद खां ने उनके पुत्र बरेली के नाजिम मुइनउद्दीन खाँ से भी मित्रता बढ़ा ली। उसका यह लाभ हुआ कि शाही वजीरे आजम से उनको इस क्षेत्र की जागीर का ठेका मिल गया। इसके पश्चात उन्होंने मनौना के नाजिम ख्वाजा मोहम्मद सालय पर आक्रमण करके यहाँ पर भी अधिकार कर लिया। इस विजय से उनको बहुत सम्पत्ति, हाथी, घोड़े तथा अन्य सामान प्राप्त हुए तथा आंवला मनौना ब्योली तथा वनगढ़ के क्षेत्रों पर अली मोहम्मद खाँ का अधिकार हो गया।

नवाब अली मोहम्मद खाँ को नवादी खिताब मिलना (1737 ई.)

इस प्रकार अली मोहम्मद खाँ ने अपनी छोटी–सी जागीर बना ली। उनको शक्तिशाली सरदारों में गिना जाने लगा। इस समय फरूखाबाद में वंगश पठान सरदार मोहम्मद खाँ ने अपनी रियासत स्थापित कर ली थी। उस पर बुन्देलों ने आक्रमण कर दिया। मोहम्मद खाँ ने अली मोहम्मदी खाँ से सैनिक सहायता मांगी जो उन्होंने प्रदान की। कुछ समय पश्चात् दिल्ली दरबार की तरफ से जांसठ (सहारनपुर) खाँ को समाप्त करने के लिए शाही फौजों की मदद करने की आज्ञा भेजी गई। अली महोम्मद खाँ ने शाही फोजों के साथ उसके मुकाबले में युद्ध किया। उनकी मदद से सैफउद्दीन खाँ मारा गया। शाही सेना का कब्जा हो गया। इससे उनकी बहुत ख्याति हुई। शाही दरबार में उनकी चर्चा होने लगी जिसके परिणामस्वरूप उनको शीघ्र ही दिल्ली दरबार में 1737 में नवावी का खिताब प्रदान किया गया। उनको सम्मान सूचक ओहदा पंचहजारी भी मिला। कोई भी सेना तथा जागीर अलग से प्रदान नहीं की गई वरन जो क्षेत्र उनके पास था उसको मनसब की जागीर तथा जो सेना उनके पास थी उसको मनसब की सेना के रूप में स्वीकार कर लिया गया। उनको नवाबों के महल के बाहर बजने वाली नौवत प्रदान की गई। वह शाही दरबार की तरफ से परगनात कठेर के हाकिम हो गए।

दिल्ली दरबार द्वारा राजा हरनंद को मुरादाबाद का सूबेदार बनाना

मार्च 1740 में अजमत उल्ला खाँ के स्थान पर मुगल सम्राट की और से राजा हरनंद खत्री को यहाँ का सूबेदार बनाया गया। राजा हरनंद तथा मुगल दरबारी सफदरजंग दोनों ही अली मोहम्मद खाँ से शत्रुता रखते थे। इधर अली मोहम्मद खाँ ने राज्य विस्तार करके यहाँ के जमींदारों के राज्य को अपनी रियासत में मिला लिया। इन छोटे–छोटे शिकायतकर्ताओं ने दिल्ली दरबार में पहुंचकर अली मोहम्मद खाँ के शत्रुओं को बादशाह को उनके खिलाफ करने का मौका प्रदान किया। परिणामतः मुगल दरबार की तरफ से राजा हरनंद को शाही सेना प्रदान करके अली मोहम्मदी खाँ पर आक्रमण करने का आदेश हुआ। अली मोहम्मद खाँ की सैनिक शाक्ति शाही सेना का मुकाबला करने की नहीं थी इसलिए उन्होंने युद्ध न होने देने की काफी कोशिश की लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। आखिरकार मजबूर होकर उन्होंने युद्ध की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

राजा हरनंद का रुहेलों पर आक्रमण तथा पराजय

राजा हरनंद मुगल साम्राज्य की ओर से आक्रमण कर रहा था अतः उसकी सहायता को पिपली के जमींदार नरपत सिंह, रतनगढ़ के जमींदार करन बरेली के नाजिम अब्दुलनवी शाहाबाद कला के हाकिम तथा बहुत से छोटे–छोटे जमींदार उसकी मदद को पहुंच गए। राजा हरनंद ने अपनी सेना लेकर मुरादाबाद के आगे परगना जारई (तहसील विलारी) में अरिल नदी के किनारे पर डेरे डाल दिए। इधर अली मोहम्मद खाँ भी मुकाबले के लिए आंवला से चलकर फतहपुर डाल के निकट असालतपुर से दो मील की दूरी पर आकर ठहर गए। अब दोनों ओर से सेनाएं मुकाबले को हट गई। अनी मोहम्मद खाँ की शक्ति कम थी। आमने–सामने के मुकाबले में उनकी विजय दुष्कर थी अतः उन्होंने कूटनीति से काम लेकर अनायास ही आक्रमण करने की योजना बनायी। आक्रमण करने से एक दिन पूर्व दूसरे दिन राजा हरनंद से स्वयं भेंट करने की अफवाह फैला दी तथा रातभर अपनी सेना को लड़ाई के लिए तैयार करते रहे। प्रातः काल हो ही नहीं पाया था कि दूसरे दिन उन्होंने राजा हरनंद पर आक्रमण बोल दिया।

जिस समय आक्रमण हुआ राजा हरनंद पूजा पर बैठा हुआ था। वह अधूरी पूजा से नहीं उठा। उसका पुत्र मोतीलाल मुकाबले को आगे बढ़ा। यह दिना जानकारी के आक्रमण था अतः कोई मुकाबला नहीं कर सका। थोड़े समय पश्चात् हरनंद जब पूजा से उठकर मुकाबले को पहुंचा तब तक उसकी सेनाएँ काफी हार चुकी थीं। यह लड़ा लेकिन शीघ्र ही तीर खाकर गिर गया और मर गया। उसका बेटा बहुत दिलेरी से लड़ा लेकिन यह भी न टिक सका और मैदान में ही मारा गया। सेना में भगदड़ मच गई। अली मोहम्मद खाँ को बहुत बड़ी संख्या में तोपखाना, हाथी, घोड़े, धन–सम्पत्ति और अस्त्र शस्त्र हाथ लगे।

नवाब अली मोहम्मद खाँ का अधिकांश कठेर पर अधिकार तथा कठेर का नाम रुहेलखण्ड हो जाना (1742 ई.)

इस विजय से अली मोहम्मद खाँ का उन सारे क्षेत्रों पर अधिकार हो गया जिन पर राजा हरनंद का राज्य था। सारे स्थानों–सम्भल, अमरोहा, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, बरेली, शाहाबाद कलां, नगीना तथा अन्य स्थानों पर कब्जा करके अपने नाजिम नियुक्त किए। यह सारा क्षेत्र कठेर के स्थान पर अब रुहेलखण्ड कहलाने लगा।

अली मोहम्मद खाँ ने वजीरे आजम कमरुद्दीन खाँ से सम्पर्क स्थापित करके इस युद्ध के लिए अपने आप को निर्दोष सिद्ध किया तथा उनकी मेहरबानी से शाही कृपा उनको पुनः प्राप्त हो गई। मुगल सल्तनत को मालगुजारी एवं शाही कर खिराज देना तय कर लिए गए और रुहेलखण्ड की सुवेदारी अली मोहम्मद खाँ को प्राप्त हो गई।

कुमायूं पर अधिकार

अब इनको बड़े नवाबों में गिना जाने लगा। नवाब ने आंवला से पाइन्दी छो को पीलीभीत पर अधिकार करने भेजा। वहाँ के बजारे जमींदारों को हराकर शहर व आसपास के क्षेत्रों पर रुहेली का अधिकार हो गया।

इसी वर्ष कुमायूँ के राजा देवीचन्द के पुत्र कल्याण राय पर इन्होंने आक्रमण किया। रुहेले मूल रूप से पहाड़ी जाति के थे, अतः आसानी से कुमायूँ जीत लिया तथा अल्मोड़ा पर इनका अधिकार हो गया। श्री नगर के राजा सिरमौर बन्द ने सालाना खिराज देने का वायदा करके अली मोहम्मद खां से सन्धि कर ली। खिराज देने के बदले कल्याण चन्द के नजदीकी रिश्तेदार को कुमायूं (अल्मोड़ा) दे दिया। लेकिन इस युद्ध में जीते हुए काशीपुर तथा रुद्रपुर अपने राज्य में मिला लिए। कुमायूँ की विजय में रुहेलों को बहुत लाभ हुआ। एक लाख साठ हजार रुपए राजा सिर मौर चन्द्र ने दिया इस आक्रमण में लगभग तीन लाख रुपया ठडेलों के हाथ लगा। उस समय के रुपये का मूल्य वर्तमान के रुपये से सो गुने से भी अधिक था।)

मुगल सम्राट का अली मोहम्मद खाँ पर आक्रमण तथा उन्हें दिल्ली से जाना

अभी मोहम्मद श्री की शक्ति बहुत बढ़ रही थी। मुगल दरबार के दरबारी बराबर परेशान थे। अवध का सूबेदार सफदरजंग जो दिल्ली दरबार में रहता था. अली मोहम्मद खाँ का सबसे बड़ा शत्रु था। उसने तथा अन्य ने मुगल बादशाह मोहम्मद शाह को अली मोहम्मद श्री को अत्यधिक शक्तिशाली होने देने में बहुत बड़ा खतरा समझाया जिसके कारण मुगल बादशाह ने जली मोहम्मद खाँ पर आक्रमण का विचार बनाया वजीरे आजम कमरुद्दीन की सांधा कि यदि उनको आक्रमण करने का आदेश दिया गया और राजा हरनन्द

की तरह वह भी हार गए तो मारे जाएंगे और और बच गए तो वजीरे आजम नहीं रहेंगे। रुहेलों का खोफ शाही सेना में बेठ गया था। इसलिए उन्होंने बादशाह को स्वयं आक्रमण करने की सलाह दी। उसके अनुसार बादशाह मोहम्मद शाह सेना लेकर स्वयं आक्रमण करने दिल्ली से रुहेलखण्ड की ओर बढ़ा। अली मोहम्मद खाँ ने युद्ध न होने देने की बहुत कोशिश की लेकिन नाकामयाब रहे अतः मजबूर होकर शाही सेना का मुकाबला करने के लिए आंवला छोड़कर बनगढ़ चले गए क्योंकि यहां के चारों ओर जंगल थे तथा यहां कच्चा किला बना हुआ था। शाही सेनाएं भी सम्भल होती हुई नगद पहुँच गई। मुगल सेनाओं ने बनगढ़ को चारों ओर से घेर लिया। दोनों ओर से छुटपुट लडाइयाँ हुई लेकिन शाही सेना का अली मोहम्मद खाँ मुकाबला नहीं कर पाए। मजबूरन मुगल बादशाह के समक्ष अपने आपको सुपुर्द कर दिया। उन्होंने बादशाह को एक हजार अशर्फियां भेंट कीं तथा क्षमा चाही। बादशाह ने अली मोहम्मद खाँ को क्षमा कर दिया। भेंट स्वीकार की तथा उनको एवं उनके दो बड़े बेटों अब्दुल्ला खाँ तथा फैजउल्ला खाँ को लेकर दिल्ली लौट गया। वहीं उनको वजीरे आजम की हिरासत में चारबाग में रख दिया गया।

अली मोहम्मद खाँ को सरहिन्द का सूबेदार बनाना

शाही दरबार की ओर से फरीदउद्दीन खाँ को रुलखण्ड का सूबेदार नियुक्त किया गया। अली मोहम्मद खाँ का सारा प्रबन्ध समाप्त हो गया। रुहेले सरदार इधर–उधर चले गए। हाफिज रहमत खाँ कादरगंज चले गए। इन्दे खाँ गंगा के इस पार कादर चौक चले गए। पायन्दा खाँ ने नवाब फर्रुखाबाद के यहाँ नौकरी कर ली लेकिन रुहेले एक सैनिक नस्ल के थे। हिम्मती तथा वीर थे। धीरे धीरे और चुपके–चुपके दिल्ली में अली मोहम्मद खाँ के पास पहुँचने लगे और चार पाँच हजार की संख्या में वहाँ एकत्र हो गए। जहाँ पर रुहेले ठहरे वह अब भी सराय रुहेला कहलाता है। यहां से उन लोगों ने दिल्ली में उत्पात मचाना शुरु कर दिया।

मुगल सल्तनत का एक राज्य 'सरहिन्द' था। यहाँ के राजा स्वतंत्र हो गए थे। उन्होंने खिराज देना बन्द कर दिया था। अली मोहम्मद खाँ के आदमियों की कारगुजारियों को देखते हुए वजीरे आजम ने बादशाह को समझाया कि अली मोहम्मद खां को यहाँ की सुबेदारी देकर वहाँ आक्रमण करके विजय प्राप्त करने के लिए भेज दिया जाए या तो अली मोहम्मद यो विजय प्राप्त करके

मुगल साम्राज्य के सूबे को अधीन कर लेंगे या वहाँ के राजाओं द्वारा समाप्त हो जाएगे। दोनों स्थितियों में मुगल साम्राज्य को लाभ होगा। बात बादशाह की समझ में आ गई और अली मोहम्मद श्री को सरहिन्द का सूबेदार बना दिया गया। सरहिन्द की सूबेदारी पाँच हजार मुगलों की तनख्वाह के बराबर रुपयों खिराज (टेक्स शाही) के बदले में थी इसलिए अली मोहम्मद ने पाँच हजार रुपए पहली किस्त के रूप में जमा कर दिए। रुहेला सरदारों को, जो कि विभिन्न स्थानों पर थे. दिल्ली बुला लिया गया। अपने दोनों बड़े बेटों, अब्दुल्ला खाँ तथा फेजउल्ला खां को दिल्ली में जमानत के रूप में छोड़कर अली मोहम्मद खाँ ने रुहेला सेना के साथ कूच किया।

सरहिन्द का क्षेत्र वर्तमान पंजाब राज्य में पड़ता है। यहाँ इस समय रामपुर के वहारमल, जोतपुर के निकाहीमल तथा कोट व जगरांव के राजा रायकाल्हा बहुत शक्तिशाली थे। अली मोहम्मद खां ने बहुत कूटनीतिक तरीके से उन पर एक–एक करके आक्रमण किए तथा इनको हराकर अपने अधीन किया। उनकी इन विजयों का रुहेलों के हक में बहुत जादू का सा असर पड़ा। छोटे–छोटे सभी सरदारों ने इनकी अधीनता स्वीकार कर ली। मुगल साम्राज्य का यहाँ सिक्का जम गया। अली मोहम्मद खां यहाँ लगभग ढाई वर्ष तक रहे। उनको तथा उनके सैनिकों को यहा से अपार धन–सम्पत्ति हाथ लगी। अली मोहम्मद खाँ की इन विजयों से मुगल दरबार में उनका दबदबा बहुत बढ़ गया। उनका यह अभियान 1746 आखीर से प्रारम्भ सन 1748 तक रहा।

दिल्ली के बादशाह द्वारा अली मोहम्मद खाँ को दोबारा रुहेलखण्ड का सूबेदार बनाना तथा उनका सब पर अधिकार

इसी वर्ष 1748 में अफगानिस्तान के शाह अहमद शाह अब्दाली ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण कर दिया। मोहम्मद शाह बादशाह ने यह विचार किया कि अली मोहम्मद खां एवं अब्दाली एक ही पठान जाति एवं मूल रूप से अफगानिस्तान के होने के कारण सीमाओं पर आपस में मिल न बैठें इसलिए उनको पुनः रुहेलखण्ड की सूबेदारी का फरमान (आज्ञा) जारी कर दिया गया और फौरन रुहेलखण्ड वापस चले जाने को कहा गया। अहमद शाह अब्दाली ने भी अली मोहम्मद खाँ को उसकी मदद करने के लिए निमंत्रित किया। अली मोहम्मद खाँ ने दोनों विकल्पों में रुहेलखण्ड वापस आना ही बेहतर समझा और अपनी

राजधानी आंवला वापस आ गए। यहाँ से उन्होंने नए सिरे से नगीना धामपुर शेरकोट, दारानगर अमरोहा, मुरादाबाद, सम्भल विसौली, मनौना, बरेली पीलीभीत एवं शाहजहाँपुर आदि पर अधिकार कर लिया। अब तक बदायूँ पर रुहेलों का कब्जा नहीं था। इस समय उस पर भी कब्जा कर लिया। सारे रुहेलखण्ड की फिर से शासन व्यवस्था की सब जगह अपने आदमी नाजिम नियुक्त किए। यह सन् 1748 में किया गया तथा पूरे रुहेलखण्ड रियासत की राजधानी पुनः आंवला को बनाया।

सफदरजंग को दिल्ली का शाही वजीर बनवाने में रुहेलों द्वारा सहायता

अहमद शाह अब्दाली को खदेड़ने के लिए मुहम्मद शाह बादशाह पंजाब पहुँचा। वहाँ युद्ध हुआ जिसमें अहमद शाह हार गया लेकिन हारकर अपने देशको सरहिन्द होकर गया जहाँ उसने खूब लूटमार की तथा शाही खजाना भी लूटा तथा अली मोहम्मद खाँ के बेटों को कंधार ले गया। इस युद्ध में एक और बहुत बड़ी क्षति हुई। लड़ाई के दौरान एक गोली लग जाने के कारण वजीरेआजम कमरुद्दीन खां की मृत्यु हो गई।

इस समय शाही वजीरे आजम की मौत ही नहीं हुई वरन् वादशाह मोहम्मद शाह की भी मृत्यु हो गई। उनके बाद दिल्ली के राज सिंहासन पर उनके लड़के अहमद शाह बैठे। इनके सामने सबसे पहला कार्य नया वजीर चुनना था। शाही दरबार में ईरानी तथा तूरानी दो दल थे। सफदरजंग का ईरानी दल शक्तिशाली था। सफदरजंग ने अली मोहम्मद खाँ से सहायता मांगी और विश्वास दिलाया कि पिछले वजीरे आजम की भांति ही वह सदेव उनको विशेष रियायतें देगा। अली मोहम्मद खाँ जानते थे कि सफदरजंग रुहेलों का शत्रु है और नुकसानदेय होगा लेकिन बादशाह सफरदरजंग को चाहता था। बाद में इनको ही यह पद प्राप्त होता। अली मोहम्मद खाँ इस समय बीगार थे अपने बेटों को कंधार से जाने तथा कमरुद्दीन खाँ की मृत्यु के समाचार ने उनको और बीमार कर दिया। अब सभी सरदारों से यह मशवरा हुआ कि सफदरजंग को बजीर बनवाने में मदद की जाए। हाफिज रहमत खाँ को अपना नायब बनाकर आंवला से सेना लेकर दिल्ली भेज दिया। दिल्ली में हाफिज साहब की मदद से मुगल सल्तनत के सफदरजंग वजीरेआजम बन गए।

इस सहायता का सफदरजंग ने हाफिज साहब का बहुत अहसान माना और वजीर बनने के तीसरे दिन हाफिज साहब को वह बादशाह के पास ले गए। उनको शाही दरबार की तरफ से 'खिलअत, नौबत तथा मुकरुद्दौला हाफिज उलमुल्क

बहादुर नसीह जंग' का खिताब दिलवाया। अली मोहम्मद खाँ की तबियत हाफिज

साहब के चले जाने के पश्चात् बहुत अधिक खराब हो गई थी इस कारण पत्र

भेजकर उनको आंवला वापस बुला लिया गया।

नवाब अली मोहम्मद खाँ का गम्भीर रूप से बीमार होना तथा मृत्यु से पूर्व व्यवस्था

रुहेलखण्ड पर दोबारा अधिकार करने के एक वर्ष के अंदर ही अली मोहम्मद खाँ गम्भीर रूप से बीमार हो गए। उनको जलधर की बीमारी थी, सारा शरीर घुल गया था। केवल हड्डिया हड्डियां रह गई थीं। उठने–बैठने की शक्ति भी नहीं रही थी। हालत इतनी नाजुक हो गई थी कि एक दिन जब उनके सिर में दर्द हुआ और हकीम ने उनके सिर पर चन्दन की मालिश कर दी तो उनके कानों को सुनाई देना बिल्कुल बन्द हो गया यहाँ तक कि वह तोप की आवाज भी नहीं सुन सकते थे। इस भाँति अब उनके बचने की कोई आशा नहीं रही।

अपनी इस स्थिति को देखते हुए उन्होंने अपने राज्य का आगामी प्रबन्ध किया। उनके दो बेटों को अहमद शाह अब्दाली कन्धार ले गया था। इसलिए तीसरे बेटे सादउल्ला खाँ को अपना उत्तराधिकारी नवाब बनाया लेकिन कंधार गए बेटों के वापस आने पर फिर सबसे सलाह करके दोबारा निश्चित करके सरदार चुनने की व्यवस्था की हाफिज रहमत खाँ को राज्य का दीवान तथा सैदउल्ला खाँ का संरक्षक बनाया। दून्दे खाँ को सारी सेना का सेनापति, उनके भाई सलामत खाँ व न्यामत खाँ को उनका नायव सरदार खाँ को फोज का बख्शी तथा फतेह खा को खानसामा बनाया। सारी सेना के वेतन का हिसाब–किताब लगवाकर सबका एक–एक कौड़ी भुगतान कर दिया तथा इसके अतिरिक्त और भी धन उनमें बांटा। इन सब कार्यों के अतिरिक्त नवाब साहब ने अपनी बीवियों का महर भी अदा कर दिया।

नवाब अली मोहम्मद खाँ की मृत्यु व्यक्तित्व तथा उनका शासन प्रबन्ध

अब नवाब साहब की हालत अत्यधिक खराब हो गई तथा 14 सितम्बर 1749 ई० को उनका देहान्त हो गया। इनको आंवला में ही दफनाया गया। कुछ वर्ष बाद हाफिज रहमत

श्री ने उनका मकबरा बनवा दिया जो कि आंवला में कटरा के पास स्थित है। अली

यही नहीं अली मोहम्मद खां ने अपना सिक्का भी चलाया। उस समय फर्रुखाबाद एवं लखनऊ में भी टकसाले थीं और वहां के नवाबों का सिक्का भी चलता था। अली मोहम्मद खां के बाद नजीबाबाद तथा बरेली में भी सिक्का चलाया गया था। जो सिक्का आंवला में चला वह साढ़े पन्द्रह आने भर का था। यह अब भी खण्डहरों एवं खेतों आदि में लोगों को मिल जाता है। यह आजकल के पांच रुपये के सिक्के के लगभग बराबर था तथा कच्ची चांदी का मोटाई में चारों तरफ से तराशा हुआ भोंडी सूरत का था।

अली मोहम्मद खाँ की संतानें

इनके कुल ग्यारह संतानें थीं 5 बेटियां एवं 6 बेटे बेटों के नाम 1 अब्दुल्ला खां, 2 फैलाउल्ला खां, 3 सादुउला खां, 4 मुहम्मदयार खां, 5. अल्लाहवार खां तथा 6 मुर्तजा खाँ थे। इनकी लड़कियों के नाम 6 शाह वेगम जो कि रहमत खां के बेटे इनायत खां के साथ विवाह 8–न्याज वेगम जो मोहम्मद खां खानजादा को विवाहीं, 9 मासूम बेगम जो जाविता खां को विवाही 10–इनायत बेगम वहादुर खां खानजादा को विवाही तथा 11 एक बेटी कमरुद्दीन खां के बेटे के साथ विवाही जाने वाली थीं ही मर गई। परन्तु शीघ्र

नवाब अली मोहम्मद खां उस काल के नवाबों, एवं राजाओं में सबसे योग्य कूटनीतिज्ञ थे। एक अदना हैसियत से उन्होंने एक बहुत बड़ा राज्य स्थापित किया और उस समय के मुगल साम्राज्य में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। वह जवानी में ही बीमार हो गए जो बीमारी ठीक न हो सकी और जीवित न रह सके। उनके बारे में इतिहासकारों का कहना है कि वह दिल्ली हुकूमत पर अधिकार करने का विचार अपने मन में रखते थे। तारीखे अवध में भी लिखा है कि ''नवाब अली मोहम्मद खां तख्त नशीनी देहली का इरादा रखते थे

लेकिन मौत ने फुरसत नहीं दी'' लेखक गुरसहाय मल

रोहिला (क्षत्रिय) राजपूत भी

सामान्यतौर पर रोहिला प्रयोग होने पर ठहेले पठानों का बोध ही माना जाता है। लेकिन साक्ष्यों के आधार पर ऐसा नहीं है। रोहिला हिन्दू भी है और अधिकतर क्षत्रिय हैं। इस्लाम धर्म के प्रचार–प्रसार के समय या उससे पूर्व रोह (क्षेत्र अफगानिस्तान से जो क्षत्रिय भारत में आकर बस गए उनको यहा रोहिला

क्षत्रिय कहा गया। तथा इस्लाम धर्म अंगीकार करने के बाद के समयों में जो रोह क्षेत्र से भारत में आए वह रुहेला पठान कहलाए। कठेर के अतिरिक्त सारे देश के अन्य भागों में भी रोहिला क्षत्रिय बसे प्रचीन ग्रंथों में तथा शिला लेखों एवं अभिलेखों में उनका शूरवीर योद्धाओं के रूप में वर्णन किया गया है।

पृथ्वीराज के राजकवि चन्द्रवरदायी द्वारा रचित 'पृथ्वीराज रासो में कविता है जिसमें अन्य वर्ग के राजपूतों के साथ रोहिला क्षत्रियों का वर्णन किया गया है जो कि पृथ्वीराज चौहान के दरबार में प्रमुख सौ वीरों में थे।

कवित्तः कन वाज्जिय जयचन्द चलउ दिल्ली सुर पेषन, ''चन्द्र वर दिया साधि बहुत सामन्त सूर धन चहूं प्रान राठवर जाति पुण्डीर गुहिल्ला, बडगूजर पामार कुरम जांगरा रोहिल्ला। इत्ते सहित भूपति चलउ उड़ी रेन किन्नउनभऊ, एक–एक लक्ष्य लक्ष्य वह चले सथ रजपूत सऊ'' ।।

इसके अर्थ के अनुसार कन्नौज में जयचन्द को देखने के लिए दिल्लीश्वर पृथ्वीराज अपने विरुदिया (विरुद कहने वाले) चन्द्र एवं अन्य बहुत से सामंत एवं सूर के साथ चल पड़ी। वे शूर बहुमान (चौहान), राठौर, पुण्डीर, गुहिल (गहलोत), बड़ गूजर पंवार (परमार) कुरुम (कछवाहे) जागरा (जधारे) तथा रोहिल्ला (रोहिल्ले) क्षत्रिय थे। भूपति इतनों के साथ चल पड़ा। इस प्रमाण में रेनू (धूल) उड़ी उससे नम (आकाश) अंकीर्ण (आच्छादित) हो गया। इनमें से प्रत्येक वीर में एक एक लाख का बल दिखता था ऐसे एक सौ राजपूत चले।

रासो महाकाव्य ग्रंथ का यह कवित्त स्पष्ट करता है कि रोहिला क्षत्रिय पृथ्वीराज चौहान काल में सैनिक सामतों के मध्य उच्च श्रेणी के पद पर कार्य करते

थे तथा उनकी सैनिक शक्ति का महत्वपूर्ण अंग थे।'' उसी काल के प्रसिद्ध कवि जगनिक ने भी अपने महाकाव्य 'आल्डखण्ड में रोहिलों का वर्णन किया है।

माण्डव्यपुर (मण्डोर) जोधपुर राजस्थान से एक शिलालेख 'बाइक' द्वारा उत्कीर्ण कराया हुआ सन 836 ई. का प्राप्त हुआ है। इसका उल्लेख पं गौरी शंकर हरीप्रसाद ओझा ने अपने ग्रंथ राजपूताने का इतिहास के पृष्ठ 147 पर किया है। संस्कृत भाषा के इस शिलालेख में रोहिल्लादि उपाधि का वर्णन है जो हरिश्चन्द्र नामक द्विज शासक को मिली थी और मण्डोर को जीतने की प्रसन्नता में किसी रोहिला शासक ने प्रदान की थी। इस उपाधि का वर्णन जिस दोहे में लिखा है वह इस प्रकार है –

बभूव रोहिल्लद्ध यों, वेद शास्त्र पारगः। द्विजश्री हरिश्चन्द्रारव्यः प्रजापति समोगुरु।।

रोहिले क्षत्रियों ने अपने शासन के स्वतंत्रता काल में सहारनपुर (उ.प्र.) में प्राचीन रोहिले किले का निर्माण कराया। भीमराज राजभाट की पुस्तक ''रोहिला क्षत्रिय जाति निर्णय'' के उल्लेखानुसार दशवीं शताब्दी से ग्यारहवी शताब्दी तक के मध्यकाल में रोहिला शासकों में राजा रणवीर सिंह तथा राजा इन्द्र सेन आदि विद्यमान थे। अतः अधिकृत रूप से यह सम्भावना है कि राजा इन्द्र सेन के द्वारा ही अपने काल में प्राचीन रोहिले किले का निर्माण कराया गया होगा।

सहारनपुर जिले में ही सरसांवा क्षेत्र में रोहिलों के दूसरे किले के अवशेष भी

खण्डहर और टीलों के रूप में मौजूद हैं। रोहिले क्षत्रियों का भी भारत के इतिहास में विशिष्ट स्थान है। राजपूतों के इतिहास के बारे में कर्नल जेम्स टॉड ने बहुत खोजबीन के बाद 'टाड राजस्थान 12 नामक ग्रन्थ लिखा है। इसके परिच्छेद 43 पृष्ठ 456 के अनुसार मारवाड़ के सेनापति जग्गू ने भती व्यवस्था से एक सेना तैयार की थी उसमें सिंधी पुरविए एवं रोहिले थे। इस प्रकार विभिन्न आधारों पर यह पुष्ट है कि रोहिला क्षत्रियों का अपना

अलग वर्चस्व तथा महत्व था तथा उनकी विभिन्न राज सत्ताएं भी थीं। एक तथ्य यह भी है कि क्षत्रियों के अतिरिक्त जातियों के लोग कहीं कहीं रोहिल उपनाम लिखते हैं। सम्भवतः इनके पूर्वज भी पूर्व काल में रोह क्षेत्र से भारत में आकर बस गए होंगे।

रुहेलखण्ड नाम का प्रयोग क्यों ?

रुहेला पठानों के सत्ता स्थापित करने के पश्चात यह क्षेत्र रुहेलखण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मुसलमान सत्ता स्थापित होने पर भी संस्कृत भाषा के शब्द, खण्ड के साथ यह क्षेत्र रुहेलखण्ड क्यों प्रसिद्ध हुआ इस बारे में तथ्य यह है कि 'कठेर' का क्षेत्र पहले 'कठेर रोहिलखण्ड' भी कहलाता था। भारत के प्रसिद्ध इतिहासकारों ने अपने ग्रन्थों में मध्यकाल का वर्णन करते समय यहां के बारे में 'कठेर रोहिलखण्ड प्रयोग किया है। डा. ईश्वरी प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'मध्ययुग का इतिहास' पृष्ठ 176 पर बलवन के आक्रमण का उल्लेख करते हुए. काम्ब्रीहेन्सिव हिस्ट्री आफ इण्डिया पुस्तक में राव खड़ग सिंह एवं राव हरि सिंह के विद्रोह के समय का वर्णन पृष्ठ 617 तथा 636 पर करते हुए, तथा डा आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक 'भारत का इतिहास में पृष्ठ 75 एवं 82 पर विद्रोह का

नवाब सादुल्ला खाँ

1749–1763

नवाब अली मोहम्मद जी की मृत्यु के बाद उनके तीसरे बेटे सादुल्ला श्री रुहेलखण्ड के नवाब बने दोनों बड़े बेटों को अफगानिस्तान का बादशाह भारत पर आ के समय कन्धार ले गया था इसलिए केवल चौदह वर्ष का होने पर भी उनको रुहेला नगाव बनाया गया। हाफिज रहमत खो राज्य के दीवान थे। वास्तविक शासक ही थे। इस समय दिल्ली साम्राज्य की स्थिति और भी कमजोर हो गई थी। नई नई शक्तियां देश में अपना प्रभाव बढ़ा रही थी। मराठे उत्तर भारत में प्रवेश कर गए थे। उन्होंने दिल्ली के बादशाह पर अपना प्रभाव जमाना प्रारम्भ कर दिया था। हेलों के अतिरिक्त फर्रुखाबाद में पठानों ने सहारनपुर नजीबाबाद में नजीबुद्दौला ने तथा अवध (लखनऊ) में सफदरजंग ने अपने राज्य (नवाची) स्थापित कर लिए थे। सफदरजंग दिल्ली सल्तनत का वजीरे आजम भी या लखनऊ में अपना नायव नवलराय को बनाकर स्वयम् शाही दरबार में रहता था यह हेलों से बहुत शत्रुता मानता था और उनको समाप्त करके उनका राज्य अपने राज्य में मिलाना चाहता था।

शाही वजीर सफदरजंग के रुहेलों को समाप्त कर देने के कुचक्र एवं असफलता

हेलों की मदद से सफदरजंग बजीरे आजम बना था लेकिन रुहेलो को समाप् करने के लिए उसने कार्य प्रारम्भ कर दिये। नवाब साउला श्री के नवाब बनते ही दीनामव्यक्ति को मुरादाबाद की सुबेदारी प्रदान कर दी और करने के लिए भेज दिया। उसका करने के लिए यह सेहत की नेपाल थी. अब्दुल सत्तार श्री. इन्दे खी तथा सैयद मासूम को लेकर पुर सईई जिसमे दीन श्री हार गया और उसकी मृत्यु हुई।

रियासत रुहेलखण्ड–नवाव सादुल्ला खाँ

मराठों को लालच देकर उसके विरुद्ध सहायता को तैयार कर लिया। भरतपुर के राजा सूरजमल जाट की भी सहायता प्राप्त कर ली और इन सबके साथ कूँच करके फतेहगढ़ के निकट आकर ठहर गया। इधर युद्ध के लिए पुनः अहमद खाँ ने सादउल्ला खाँ तथा हाफिज रहमत खाँ से सहायता मांगी । रुहेलों में सहायता के प्रश्न पर आपस में मतभेद हो गया। इस होने वाले युद्ध में हारने की आशंका थी इसलिए हाफिज रहमत खाँ सहायता नहीं देना चाह रहे थे। लेकिन बहादुर खाँ नामक सरदार के उकसाने पर सादुल्ला खाँ नहीं माने और सहायता के लिए अकेले चल पड़े। लगभग बारह हजार सेना के साथ फतेहगढ़ पहुँचे। युद्ध हुआ। जैसी आशा थी मैदान में अहमद खाँ की हार होने लगी। बहादुर खाँ मारा गया। हार देखते हुए सादउल्ला खाँ युद्ध के मैदान से अहमद खाँ को अकेला ही छोड़कर आँवला आ गए।'

सादउल्ला खाँ के आने पर अहमद खाँ भी युद्ध के मैदान से भाग खड़ा हुआ और शाहजहाँपुर होता हुआ आँवला आ गया। मैदान में जीत सफदर जंग की हुई। तब रुहेलों एवं अहमद खाँ को यह अंदेशा हुआ कि मराठे और सफदरजंग पीछा करते हुए आँवला अवश्य आयेंगे अतः उन लोगों ने यहाँ से पहाड़ की ओर जाने का विचार बना लिया तथा मुरादाबाद तक पहुँच गए परन्तु वहाँ पहुँचने पर उन लोगों को मालूम हुआ कि सफदरजंग तथा मराठे पीछा करते हुए नहीं आ रहे हैं और सफदरजंग मराठों को छोड़कर लखनऊ चला गया है। तब वे सब लोग वापिस आँवला चले आए और मराठों से लड़ने की दुबारा तैयारियाँ प्रारम्भ कर दीं। बरसात के बाद वह लोग मुकाबला करने के लिए फर्रुखाबाद की ओर बढ़े। मेहंदीघाट (कन्नौज) पर आमना–सामना हुआ लेकिन लड़ाई शुरु भी न हो पाई थी कि विशाल सेना के साथ सफदरजंग लखनऊ से वापस आ गया। रुहेले बिना युद्ध किये ही दोवारा आँवला वापस आ गए। साथ में अहमद खाँ भी आ गया।

रुहेले पहाड़ की ओर

इस आशंका से कि सफदरजंग तथा मराठे पीछा करते हुये आंवला अवश्य आयेंगे रुहेले तथा अहमद खां सभी अपनी सेनाओं के साथ पहाड़ की ओर गए । रुहेले अपने बाल बच्चों को भी साथ ले गए। अपने धन दौलत को जमीन में गाड़कर और बहुत सी को साथ लेकर मकानों को खाली छोड़कर वह लोग आगे बढ़े तथा मुरादाबाद काशीपुर होते हुए चकलिया पर डेरे डाल दिए।[2] इधर सफदरजंग भी

पीछा करता हुआ मराठों के साथ आंवला आया और यहां से पहाड़ की तरफ बढ़ तथा चकलिया पर पहुंचकर पठानों तथा रुहेलों से दो मील की दूरी पर सामने डेरे डाल दिए। रुहेलों के आने जाने का सामने से ही रास्ता था, उसको बन्द कर दिया। लेकिन रुहेले एक पहाड़ी जाति के थे इसलिए वह ऊपर पहाड़ों से अपनी रसद प्राप्त करते रहे। सफदरजंग तथा मराठों की सेनाओं की रुहेलों तथा पठानों की सेनाओं से कई बार लड़ाइयां हुई पर कोई भी निर्णय नहीं हो सका। मराठे वहां पर ठीक प्रकार से नहीं लड़ सके, क्योंकि पहाड़ों की लड़ाई के वह लोग जानकार नहीं थे। उसी समय (1751) अफगानिस्तान के अहमद शाह अब्दाली ने फिर हिन्दुस्तान पर आक्रमण कर दिया। तब दिल्ली के बादशाह ने सफदरजंग के पास तत्काल संधि करने की सूचना भेजी। परिणामतः मराठों के बीच में पड़ने पर दोनों पक्षों में संधि हो गई। अहमद खां नवाब फर्रुखाबाद को पचास लाख रुपये नकद तथा पांच लाख रुपया सालाना खिराज देना तय हुआ। बदले में उसका राज्य उसको वापिस दे दिया गया। संधि के पश्चात् सब अपने–अपने यहां चले गए।

रियासत रुहेलखण्ड का बटवारा

यद्यपि सभी रुहेला सरदारों ने नवाब अली मोहम्मद खां से मृत्यु पूर्व उनकी संतानों के प्रति वफादार रहने के वायदे किये थे लेकिन उनकी मृत्यु के बाद तीन वर्ष में रुहेलखण्ड के तीन बार बंटवारे किए गए तथा आखिरी बार रुहेला सरदारों ने रियासत को आपस में बांट लिया। नबाब अली मोहम्मद खां की मृत्यु के बाद सर्व प्रथम उनके तीसरे नाबालिग बेटे सादउल्ला खां को नाम मात्र का नबाव बनाकर पूरे राज्य को बांट दिया तथा जागीरें रुहेला सरदारों को दे दीं। हाफिज रहमत खां इस समय रुहेलों के सर्वे सर्वा थे नवाब अली मोहम्मद खां के बड़े बेटों के कंधार से वापिस आने पर उनके बेटों में रियासत को बांट दिया लेकिन शीघ्र ही इसे भी बदल दिया और सन् 1752 ई. में रुहेलखण्ड का अंतिम बंटवारा किया गया जिसमें नवाब अली मोहम्मद खां के केवल दो बेटों को कुछ क्षेत्र दिए गए बाकी सारे राज्य को रुहेला सरदारों ने अपने अधिकार में कर लिया जो कि निम्न प्रकार से है।[3]

उझानी, सहसवान एवं सादातपुर के नवाब अब्दुल्ला खां

नवाब अली मोहम्मद खां के बड़े बेटे अब्दुल्ला खां को यह क्षेत्र प्रदान किया गया। उन्होंने उझानी को अपनी राजधानी बनाया। हुकूमत की तरफ इनका कोई ध्यान नहीं रहता था। दरवेशों एवं फकीरों में अधिक समय गुजारते थे। शेर–शायरी का

रियासत रुहेलखण्ड – नवाव सादुल्ला खाँ

बहुत शौक था तथा फारसी भाषा के अच्छे कवि थे। आसी उपनाम से ग्रंथ भी लिखा था। शेर और सांप पालने का बहुत शौक था। सांप के काटने से ही आपकी सन् 1767 ई. में मृत्यु हो गई। आपके बाद आपके बेटे नसरुल्ला खां यहां के नवाव बने। इनका यहां पर 1774 ई. तक अधिकार रहा।

शाहबाद, रामपुर एवं छांछेट के नवाब फैजउल्ला खां

नवाब अली मोहम्मद खां के दूसरे बेटे फैज उल्ला खां को यह क्षेत्र प्रदान किया गया। यह कई वर्षों तक बरेली में ही रहते रहे। यहीं से अपनी रियासत का प्रबन्ध करते थे। बाद में हाफिज रहमत खां के बेटे इनायत खां से सम्बंध बिगड़ जाने के कारण शाहबाद चले गए। शुजाउद्दौला के आक्रमण के समय इन्होंने बहुत दिलेरी से युद्ध किया था लेकिन विजय शुजाउद्दौला की हुई। सभी रुहेले युद्ध के बाद लाल डांग की तरफ पलायन कर गए। वहां पर शुजाउद्दौला ने इनको घेरा लेकिन कामयाब नहीं हुआ, अतः फैजउल्ला खाँ एवं शुजाउद्दौला में संधि हुई। इस संधि के अनुसार रामपुर का क्षेत्र जो पहले से फैजउल्ला खां की हुकूमत में था, उनको प्रदान किया गया। यहीं से, सन् 1774 से रामपुर रियासत की स्थापना हुई। फैजउल्ला खां ही यहां के नवाब बने और सन् 1794 ई. तक यहां के नवाब रहे।

बरेली शाहजहांपुर एवं पीलीभीत हाफिज रहमत खां के अधिकार में

रुहेलखण्ड के इस विभाजन में हाफिज रहमत खां को वर्तमान जिला बरेली, शाहजहांपुर एवं पीलीभीत का पूरा क्षेत्र प्राप्त हुआ। उन्होंने पहले पीलीभीत फिर बरेली को अपने राज्य की राजधानी बनाया। हाफिज रहमत खां पूरे रुहेलखण्ड के सरदार माने जाते थे। उन्हीं से बाहर के सभी राजा नवाब सम्पर्क साधते थे। उनकी मृत्यु से पूर्व कई घटनाएं बहुत महत्वपूर्ण हुई जिनमें उन्होंने बहुत योग्यता से कार्य किए। सन् 1756 ई. में बजीरे आजम इमाद उलमुल्क ने जब अवध के नवाब शुजाउद्दौला पर आक्रमण किया तब हाफिज रहमत खां ने बीच में पड़कर समझौता करा दिया। मराठों ने नजीबाबाद पर आक्रमण किया तब सैनिक सहायता पहुंचा कर उनको खदेड़ा। सन् 1761 ई. में पानीपत के युद्ध में अहमद शाह अब्दाली की तरफ से भाग लिया और विजय प्राप्त की जिससे खुश होकर अहमद शाह अब्दाली ने इटावा एवं शिकोहाबाद का क्षेत्र इनको इनाम में दिया ।

सन् 1762 एवं 1765 में बरेली में बहुत बड़ी, आपदाएं आईं। पहले भीषण

आग ने पूरे शहर को चपेट में ले लिया फिर बहुत भयंकर चक्रवात आया। उत्तम उत्तम भवन नष्ट हो गए, हजारों की संख्या में जाने चली गई। हाफिज रहमत खां ने लाखों रुपया व्यय किए, भवनों का पुनर्निमाण कराया ओर जनता को सहायता प्रदान की। सन् 1764 ई. में नवाब शुजाउद्दौला को अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध में अपने बेटे इनायत खां को सहायतार्थ पटना भेजा पुनः कड़ा के युद्ध में नवाब अवध अंग्रेजों से हार गया और पूरी तरह उन के प्रभाव में आ गया। सन् 1760 ई. के बाद हालात बदल गए। रुहेलों में आपस में सहयोग बहुत कम हो गया। नवाब अवध रुहेलखण्ड पर अधिकार करना चाहता था। सन् 1774 ई में उसने अंग्रेजों की सहायता से आक्रमण कर दिया जिसमें रुहेले हार गए। हाफिज रहमत खां वीर गति को प्राप्त हुये तथा रियासत रुहेलखण्ड का अस्तित्व लुप्त हो गया।

हाफिज रहमत खां के युद्ध के मैदान में मारे जाने के बाद इनके शव को बरेली लाकर उनके द्वारा बनवाए हुए किले के आगे जहां अब बाकरगंज मोहल्ला है दफना दिया गया। उनके पुत्र जुल्फिकार खां ने एक मकबरा उस पर बनवा दिया जो अब कुछ वर्ष पूर्व ढह गया है। उनकी मृत्यु के बाद शुजाउद्दौला ने बरेली, पीलीभीत तथा सारे रुहेलखण्ड को खूब लूटा एवं नष्ट भ्रष्ट किया। और अब सारा रुहेलखण्ड उसके अधिकार में आ गया।

हाफिज रहमत खां नवाब अली मोहम्मद खां के पिता दाउद खां के सौतेले भाई थे। नवाब साहब के विशेष आग्रह पर वह अफगानिस्तान से यहां आए थे। उन्हें धार्मिक ग्रंथ कुरान शरीफ कंठस्थ था। इसलिए उन्हें हाफिज नाम से संबोधित किया जाता था। वह कट्टर धार्मिक व्यक्ति थे। दिल्ली के बादशाह ने उनको हाफिजउल्मुल्क की उपाधि से अलंकृत किया था। नवाब अली मोहम्मद खां ने उनको अपनी सेना का प्रधान एवं रियासत का दीवान बनाया था। उन्होंने उनके काल में कुमायूं पर विजय प्राप्त की। बरेली एवं पीलीभीत में उन्होंने बहुत शानदार इमारतें बनवाई। पीलीभीत में महल सराय दीवाने आम, दीवाने खास एवं जामा मस्जिद बनवाई। इनमें कुछ अब भी मौजूद हैं। हाफिज गंज कस्बे की स्थापना भी उन्होंने ही की।

बिजनौर, मुरादाबाद, काशीपुर तथा बदायूं के कुछ भाग पर दून्दे खाँ की हुकूमत

मुरादाबाद, बिजनौर, सम्भल, अमरोहा, काशीपुर, ठाकुरद्वारा, शिवराजपुर तथा बदायूं के असदपुर, बिसौली, सतासी तथा इस्लामनगर के क्षेत्र दून्दे खां को प्राप्त हुए जिसने अपने राज्य की राजधानी बिसौली को बनाया। वहां पर किला बनवा

कर रहने लगे। उन्होंने बिसौली में जामा मस्जिद हवेली तथा एक अन्य मस्जिद तामीर कराई। वह हाफिज रहमत खां के चचेरे भाई थे तथा अफगानिस्तान से आए थे। वह कुशल सेना नायक एवं कूटनीतिज्ञ थे। सन् 1770 तक जीवित रहे। उनके तीन बेटे महबुल्ला खां, अजीमउल्ला खां तथा फतहउल्ला खां थे। इन तीनों में बाप के मरने के बाद झगड़े हुए परन्तु हाफिज रहमत खां ने बीच में पड़कर राज्य का बटवारा करा दिया। इनकी हुकूमत सन् 1774 तक रही।

बदायूं, उसैत तथा आंवला के कुछ भाग पर फतेह खां खानसामा का अधिकार

यह क्षेत्र फतह खां खानसामा के हिस्से में आया। इन्होंने उसैत को अपने राज्य की राजधानी बनाया। यह मूलरूप से जाति के ब्राह्मण थे। दाउद खां से इनका विशेष प्रेम था इस कारण इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। अली मोहम्मद खां ने इनको विशेष सम्मान दिया। अपने राज्य का खानसामा (खाद्य मंत्री) बनाया। यह स्वभाव से बहुत दानी थे। सन् 1773 में मराठों के आक्रमण का मुकाबला करने के समय लौट कर आने पर बाई ओर फालिज गिर जाने के कारण इन की मृत्यु हो गई। इन्होंने छः बेटे छोड़े। इनक मृत्यु के बाद उनमें झगड़ा हो गया। हाफिज रहमत खां तथा फैजउल्ला खां ने बीच में पड़कर बड़ी मुश्किल से इन बेटों में राज्य का बटवारा कराया । इनका राज्य भी 1774 तक ही कायम रहा ।

आंवला तथा कोट क्षेत्र बख्शी सरदार खां के आधिपत्य में

कोट तथा आंवला का बहुत बड़ा भाग बख्शी सरदार खां को मिला जिन्होंने अपने राज्य की राजधानी आंवला को बनाया। सन् 1772 ई. में पहाड़ पर चार माह रहने के बाद लौट कर आने के बाद इनकी मृत्यु हो गई। यह भी अफगानिस्तान से आए थे। नवाब अली मोहम्मद खां ने इनको अपने राज्य में बख्शी बनाया। इनके आठ बेटे थे। इनके बाद उनमें झगड़ा हुआ। अहमद खां की विजय रही। वही यहां का हाकिम रहा। उसकी हुकूमत केवल दो वर्ष तक रही।

नवाब सादउल्ला खां, नाम मात्र के नवाब

नवाब सादउल्ला खां को नाम मात्र का पूरे रुहेलखण्ड का नवाब बनाया गया। उनको

कोई राज्य नहीं दिया गया। उनकी आठ लाख की पेंशन निर्धारित कर दी गई। 4 जो हाफिज रहमत खां, दून्द्वे खां तथा फतह खां खान सामा दिया करते थे। वह सन् 1763 ई. तक जीवित रहे। अतरछेड़ी के पास एक किला बनवाकर वहीं रहते थे। उनकी मृत्यु के बाद उनके शव को आंवला में उनके पिता के मकबरे के निकट ही दफना दिया गया।

सारी रियासत रुहेलखण्ड का बंटवारा तो हो गया था लेकिन नवाब रुहेलखण्ड अभी सादुल्ला खां ही माने जाते थे। उनके जीवित रहते लगभग दस बारह वर्ष तक जो राजनैतिक घटनाएं हुई उनमें प्रथम सफदरजंग की मृत्यु थी । सन् 1754 में उसकी मृत्यु के बाद उसके बेटे नवाब शुजाउद्दौला अवध (लखनऊ) के नवाब बने। मुगल बादशाह के वजीरे आजम इमादुलमुल्क गाजी उद्दीन हुए दो वर्ष पश्चात सन् 1756 में अफगानिस्तान के बादशाह अहमद शाह अब्दाली ने फिर आक्रमण किया। विजयी होकर उसने दिल्ली को खूब लूटा तथा दस महीने तक वहां रहा। अब्दाली को और अधिक धन की लालसा थी। मजबूर होकर शाही सेना ने अवध के नवाब पर धन देने के लिए आक्रमण कर दिया। नवाब सादुल्ला खां ने युद्ध होने से बचा दिया तथा बीच में पड़कर शुजाउद्दौला से पांच लाख रुपया दिलवा दिया और संधि करवा दी। इसी समय मराठों ने नजीबुद्दौला पर आक्रमण किया जिसमें रुहेलों ने नजीबुद्दौला को सैनिक सहायता दी। सन् 1760 में पुनः अहमद शाह अब्दाली ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया। मराठा सरदार दत्ता जी ने उसका मुकाबला किया। बरारी घाट पर युद्ध हुआ जिसमें मराठे हार गए तथा दत्ता जी की मृत्यु हुई। रुहेलों ने इस युद्ध में अब्दाली की सहायता की।

पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई.)

मराठा सरदार बालाजी राव पेशवा ने जब दत्ता जी की मृत्यु का समाचार सुना तो पठानों को खदेड़ने के लिए उसने महाराष्ट्र से अपने चचेरे भाई सदाशिवराव भाऊ को दिल्ली भेजा। उसने मल्हार राव होल्कर, जनको जी सिन्धिया तथा सूरजमल जाट की सहायता से अहमद शाह अब्दाली के प्रतिनिधि को दिल्ली से खदेड़ दिया और स्वयम् सरहिन्द की ओर बढ़ा। अहमद शाह अब्दाली ने मराठों के पंजाब में घुसने का समाचार सुना तो मुकाबले को आगे बढ़ा। दोनों सेनाएं पानीपत में आकर आमने सामने डट गईं। दो महीने तक कोई लड़ाई नहीं हुई। अन्त में 14 जनवरी सन् 1761 बुद्धवार को घमासान युद्ध हुआ। मराठे हार गए। अब्दाली ने पुनः दिल्ली पर अधिकार कर लिया। शाह आलम को दिल्ली का बादशाह बनाया। दो महीने तक दिल्ली में रहा। उसके बाद काबुल चला गया और फिर कभी हिन्दुस्तान

की ओर नही आया। रुहेलों ने अब्दाली को सैनिक सहायता दी जिसके बदले में उन्हें कई नए क्षेत्र इटावा, शिकोहाबाद आदि प्राप्त हुए।

एक वर्ष के पश्चात् अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने फर्रुखाबाद पर चढ़ाई कर दी। वहां के नवाब ने रुहेलों से सहायता मांगी। रुहेलों ने तत्काल सहायता भेजी लेकिन नजीबुद्दौला के बीच में पड़ जाने के कारण युद्ध होने से बच गया तथा संधि हो गई। शुजाउद्दौला लखनऊ वापिस लौट गया। रुहेले भी रुहेलखण्ड वापिस लौट आए।

नवाब सादुल्ला खां की मृत्यु

जिस समय रुहेले फर्रुखाबाद के नवाब को सहायता देने गए थे उस समय सादउल्ला खां बीमार थे। शीघ्र ही 1763 ई. में उनकी मृत्यु हो गई। उनको सिल की बीमारी हो गई थी। इस समय उनकी आयु केवल सत्ताईस वर्ष की थी। उनके केवल एक लड़की थी जिसकी बाद में नजीबुद्दौला के बेटे अजीबुद्दौला के साथ बहुत शानदार तरीके से शादी कर दी गई। उनकी मृत्यु से रुहेलों को बहुत हानि हुई। उनके कारण रुहेले समय समय पर एक हो जाते थे जो आगे के समय में कभी नहीं हुए। उनके संगठन में बराबर फूट बढ़ती गई और एक दिन रियासत रुहेलखण्ड समाप्त हो गयी।

संदर्भ

1. नज्मुलगनी – अखबार उससनादीद, पृष्ठ 235।

2. वही, पृष्ठ 244।

3. वही पृष्ठ 274–289।

4. वही पृष्ठ, 286 ।

रुहेलों का अपकर्ष

औरतों व लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार किया गया। खड़ी फसलें नष्ट कर दी गई। समस्त स्थानों पर त्राहि–त्राहि मच गई। रुहेले तथा यहां के और निवासी यहां से भाग कर पहाड़ की ओर चले गए। शुजाउद्दोला रुहेलों को समूल नष्ट करना चाहता था। वही उसने किया। सारा सुन्दर उपजाऊ प्रदेश बर्बाद हो गया।

शुजाउद्दौला एवं रुहेलों के मध्य लाल डांग की संधि

फैज़उल्ला खां लाल डांग पहुंच गए थे। उनके पास लगभग चालीस हजार रुहेले इकठ्ठे हो गए। शीघ्र ही विसौली से अंग्रेज सेनाएं एवं शुजाउद्दौला भी कूंच करके लाल डांग पहुंच गए और रुहेलों को घेर लिया। रुहेले पहाड़ी जाति के होने कारण पहाड़ों से रसद लाते रहे। कई महीनों तक दोनों ऐसे ही पड़े रहे। इधर कलकत्ते से अंग्रेज सेनापति चौम्पियन के पास पत्र आया कि फौरन वापिस चला आए। उसने अपने जाने की सूचना शुजा को दी। यह सुनते ही शुजाउद्दौला ने तत्काल संधि की योजना बनाई क्योंकि वह इस योग्य नहीं था कि बिना अंग्रेजों की सहायता के रुहेलों को घेरे रहता व रुहेलखण्ड पर अधिकार बनाए रखता क्योंकि अंग्रेजों की सेना के जाते ही रुहेले फिर सारे क्षेत्र में फैल जाते और शुजाउद्दौला उनको नहीं रोक पाता। दूसरी ओर फैज़उल्ला खां को भी रसद की कमी हो रही थी। रुहेलो का मनोबल टूट गया था। इस कारण शीघ्र ही दोनों पक्षों में संधि हो गई।

रियासत रामपुर की स्थापना (1774 ई.)

संधि के अनुसार चौदह लाख पिचहत्तर हजार रुपयों की वार्षिक आय का रामपुर क्षेत्र फैजउल्ला खाँ को रियासत के रूप में छोड़ा जिसमें तीन परगने शाहाबाद, सरसावन और चौमोहल्ला उनकी पहली जागीर के ही थे। छः परगने आजीन, कावर, बिलासपुर, रिठौरा, ठाकुर द्वारा और सरखड़ा उनको और दे दिए गए। संधि में यह भी तय हुआ कि नवाब फैजउल्ला खां पांच हजार से अधिक सेना नहीं रख सकते। वह शुजाउद्दौला के अतिरिक्त और किसी से मित्रता नहीं रख सकते थे। शुजाउद्दौला को जरूरत पड़ने पर तीन हजार सेना सहायतार्थ देनी होगी। शुजाउद्दौला के शत्रु मित्र उन के शत्रु मित्र माने जाएंगे। इन सब बातों के बदले शुजाउद्दौला रामपुर रियासत की रक्षा करेगा।

शुजाउद्दौला ने संधि के अनुसार ही हाफिज रहमत खां की संतानों, दून्दे खां की संतानों व अन्य सैनिकों को छोड़ देने के लिए इलाहाबाद को अपनी आज्ञा भेज दी।

संधि हो जाने के बाद शुजाउद्दौला बिसौली होता हुआ फैजाबाद चला गया तथा आंवला से बेगम सादउल्ला खां को बुलवाकर अपने साथ ले गया। शुजाउद्दौला का रुहेलों ने सदैव ख्याल रखा और मदद की लेकिन वह तो इस क्षेत्र पर अधिकार करना चाहता था और रुहेलों को समाप्त कर देना चाहता था। इसलिए जैसे ही उसे मौका मिला व अंग्रेजों की मदद मिल गई तो उसने यहाँ पर आक्रमण बोल दिया तथा रामपुर रियासत को छोड़कर बाकी समस्त रुहेलखण्ड पर अपना अधिकार कर लिया।

नवाब शुजाउद्दौला के रुहेलों पर आक्रमण का मूल्यांकन

शुजाउद्दौला ने रुहेलों पर चालीस लाख रुपया न देने के बहाने आक्रमण किया जो कि मानवता की दृष्टि से गिरा हुआ कार्य था। क्योंकि मराठों ने जब रुहेलों से नवाब अवध शुजाउद्दौला पर आक्रमण करने में सहायता मांगी तब रुहेलों ने सहधर्मी शुजाउद्दौला के विरुद्ध विधर्मी मराठों को मदद नहीं दी। जब मराठों ने रुहेलों को इस सहायता के न देने पर उन पर आक्रमण की धौंस दी तब रुहेलों ने शुजा के कारण उसको स्वीकार किया तथा मराठों के आक्रमण को झेला। मराठों के आक्रमण समय युद्ध नहीं हुआ तब शुजाउद्दौला ने बायदा कर दिया था कि वह चालीस लाख का सन्धि पत्र वापिस कर देगा लेकिन उसने ऐसा न करके अंग्रेजों के भड़काने पर रुहेलों पर आक्रमण कर दिया। शुजाउद्दौला ने सादुल्ला खाँ से पगड़ी बदली थी और दोस्ती करके भाई बने थे। यही नहीं नवाब सादुल्ला खाँ तथा बाद में हाफिज रहमत खाँ ने अनेक बार शुजाउद्दौला की सहायता की तथा उनको मुसीबतों से बचाया यहाँ तक कि शुजाउद्दौला के बीबी बच्चे तथा खजाना तक हाफिज रहमत खाँ के पास पड़े रहे। शुजाउद्दौला रुहेलों से मित्रता निभाता रहा और सहायता प्राप्त करता रहा लेकिन केवल अपने लाभ के लिए। जब अंग्रेजों की सहायता से उसकी शक्ति बढ़ गई तब अपने पुराने मित्रों के राज्य पर आक्रमण करने, अधिकार करने, तथा उनके क्षेत्र को नष्ट भ्रष्ट, बर्बाद करने में कोई हिचक नहीं की। वह मन से सदैव अपने पिता सफदरजंग की भांति रुहेलों को समाप्त करके उनके राज्य को अपने राज्य में मिलाना चाहता था जैसे ही अवसर मिला उसने रुहेलखण्ड पर अधिकार कर लिया।

रुहेलों के अपकर्ष के कारण

रुहेला एक वीर पठान जाति थी। उसकी ही सहायता से नवाब अली मोहम्मद खाँ

रुहेलों का अपकर्ष

नें एक रियासत स्थापित की लेकिन इतना शीघ्र रुहेलों का पतन हो गया इसके कई कारण थे। अब रुहेलों के पास अली मोहम्मद खाँ जैसा कोई कूटनीतिज्ञ सरदार नहीं रहा था। रुहेलखण्ड का विभाजन हो गया था। सभी अपने अपने मन के सरदार थें। उनमें एकता नहीं थी। हाफिज रहमत खाँ सरदार माने जाते थे लेकिन सब को एक सूत्र में बांधे नहीं रख सके। पुराने सरदार मर चुके थे। उनके बेटों में उत्तराधिकार के लिए लड़ाइयां हुईं जिनसे सभी रुहेला सरदार एकजुट न हो सके। राजनैतिक कूटनीतिज्ञता इनमें नहीं थीं दूसरी और शुजाउद्दौला आधिक कूट नीतिज्ञ था और उसे मिल गए अंग्रेज, जिनकी कूटनीति का मुकाबला रुहेले नहीं कर सके।

नवाब अवध के अधीन

रुहेलखण्ड

1774–1801

रुहेलखण्ड के सूबेदार

रुहेलखण्ड विजय के बाद अवध का नवाब जब यहाँ रुका था तब उसने यहाँ के सभी स्थानों पर नाजिम नियुक्त किए। बरेली को उसने अपने अधीन रुहेलखण्ड का मुख्यालय बनाया और अपने बेटे सआदत अली को यहाँ का सूबेदार बनाया। शुजाउद्दौला जब यहाँ लूट–पाट कर रहा था तब उसके एक फोड़ा निकल आया था जो किसी भी तिब्बिया अथवा अंग्रेजी इलाज से ठीक नहीं हुआ और वह लखनऊ पहुँचने के बाद शीघ्र ही मर गया। उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा आसिफउद्दौला लखनऊ का नवाब बना। उसने अपने सुसर सूरत सिंह को यहाँ का सूबेदार बनाया। उसके काल में 1788 ई. में एक नवीन कार्य हुआ। इस वर्ष कम्पनी एवं नवाब में एक समझौता हो गया जिसके अनुसार नवाब को उन करों को पुनः लागू करने का अधिकार मिल गया जिनको कि हाफिज रहमत खाँ ने माफ कर रखा था। इसी वर्ष अंग्रेजों की सत्ता अवध एवं रुहेलखण्ड में और बढ़ गई। अंग्रेजों एवं अवध ने पुनः रामपुर स्टेट को नष्ट करने के लिए कुचक्र रचा जिससे मजबूर होकर 15 लाख रुपया फैजउल्ला खाँ ने कम्पनी को दिया और अपनी रियासत को बचाया

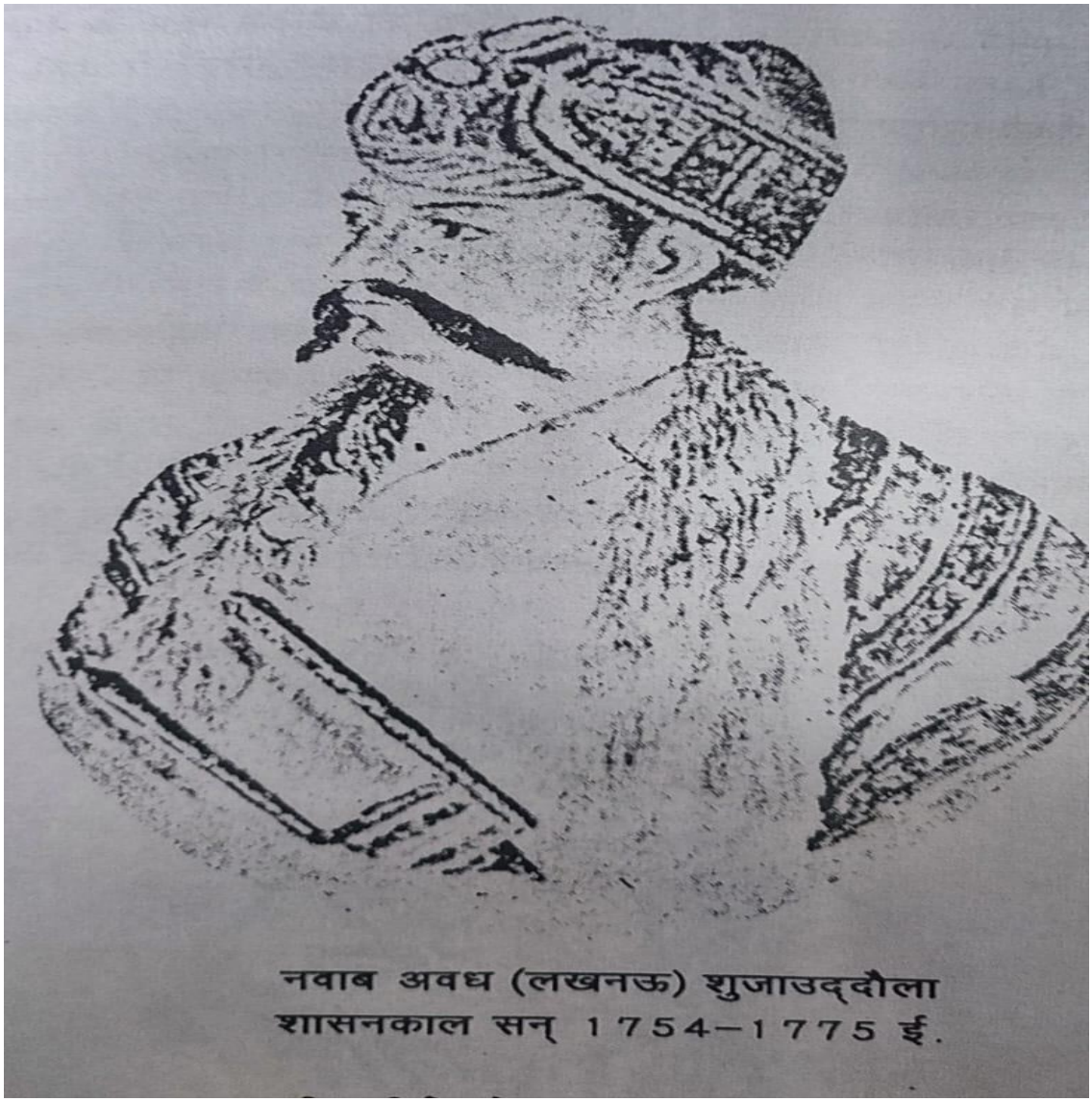

नवाब अवध (लखनऊ) शुजाउद्दौला
शासनकाल सन् 1754–1775 ई.

नबाव अवध एवं अंग्रेजों का रियासत रामपुर पर आक्रमण–जंग दो–जोड़ा (फतेहगंज पश्चिमी)

अंग्रेज कम्पनी का शिकंजा नवाब अवध एवं रियासत रामपुर पर बहुत कस चुका था। उनकी नीति देशी रियासतों को समाप्त करके अथवा वहाँ अपनी सेना रखके, अपना राज्य स्थापित करने की थी। सन् 1794 में नवाब फैजउल्ला खाँ की मृत्यु हो गई। उनके पुत्र मोहम्मद अली खाँ रामपुर के नबाव बने, किन्तु मारे गए तब गुलाम मोहम्मद खाँ रामपुर के नवाब बने। आप बहुत बुद्धिमान और बहादुर थे अतः ब्रिटिश रेजीडेन्ट चेरी

ने उनको नवाब मानने से इन्कार कर दिया और अवध की ब्रिटिश सेना के सेनापति राबर्ट के नेतृत्व में एक सेना लखनऊ से रामपुर भेजी जिसने बरेली से आगे अब सिन्थेटिक रबड़ फैक्ट्री के सामने फतेहगंज के मैदान में पोजीशन ले ली तभी रामपुर से भी सेना आ गई। 26 अक्टूबर को प्रातः काल ही दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई। रुहेला सैनिकों ने दोपहर तक ब्रिटिश सेनाओं का सफाया कर दिया। ब्रिटिश सेना का मैदान छोड़कर भाग गया। दोनों तरफ के काफी सैनिक मारे गए। आज भी लोगों की धारणा है कि बर्षा ऋतु में इस लड़ाई के क्षेत्र में खून के कारण पानी लाल हो जाता है।

रामपुर की सेना खुशियाँ मनाती हुई रामपुर लौट रही थी कि पीछे से एक अंग्रेज सेना और आ गई और उसने आक्रमण कर दिया परिणामतः रुहेलों के दो बड़े वीर नज्जू खाँ एवं बुलन्द खाँ मारे गए। उनकी कब्रें फतेहगंज पश्चिमी में ही बनी हैं। नवाब गुलाम मोहम्मद अपने बचे हुए साथियों एवं सेना के साथ रामपुर को लौट गए।

यह युद्ध दो जोड़ा का युद्ध कहलाता है। इसी नदी के किनारे ब्रिटिश सेना ने पड़ाव – डाला। शीघ्र ही लखनऊ से आसिफउद्दौला आ गया। अंग्रेज एवं नवाब दोनों की सेनाओं

ने रामपुर पर आक्रमण किया परिणाम यह हुआ कि नवाब गुलाम मोहम्मद को रामपुर छोड़ना पड़ा। अंग्रेजों के कप्तान ने नवाब मोहम्मद अली खाँ के पुत्र अहमद अली खाँ को रामपुर का नबाव बनाया तथा इस क्षेत्र को भी अंगेजी शासन के अन्तर्गत सरंक्षण में लिया। नबाव नाबालिग थे। नसरुल्ला खाँ को उनका नायब बनाया गया।

इस युद्ध में अंग्रेजी सेना को विजय के बावजूद बहुत हानि उठानी पड़ी। चौदह अंग्रेज अधिकारी एवं छः सौ चौदह सैनिक मारे गए। अंग्रेज सेना के अधिकारियों की कब्रें भी फतेहगंज के मैदान में ही रुहेला सरदारों के सामने बनी हैं। उनकी यादगार में एक बड़ा स्तम्भ बना है। इस स्थान पर बरेली जिला परिषद के अध्यक्ष पी.सी. आजाद ने सन् 1968 में एक पत्थर लगवा दिया था जिसमे इस ऐतिहासिक युद्ध का वर्णन लिखा है।

रुहेलखण्ड में अराजकता

आसिफउद्दौला नवाब अवध लौट कर बरेली आया। शम्भू नाथ को अवध की ओर से शासक नियुक्त किया गया। पूरे रुहेलखण्ड क्षेत्र की पुनः व्यवस्था की गई। बरेली के अतिरिक्त मुरादाबाद को जिला बनाया गया। मुरादाबाद का नाजिम असालत खाँ को बनाया और उनके बाद चौधरी महताब सिंह विसनोई यहाँ के नाजिम रहे। बिजनौर का क्षेत्र मुरादाबाद में ही सम्मिलित था। पीलीभीत बदायूँ एवं शाहजहाँपुर के क्षेत्र बरेली में सम्मिलित थे। नवाब आसिफउद्दौला के समय में ही हाफिज रहमत खाँ के बेटे हरमत खाँ ने दोआब के क्षेत्र से लगभग बीस हजार सेना को करके पीलीभीत पर अधिकार कर लिया लेकिन वह स्थाई न रह सका । अवध की सेनाओं ने राय गुरदास सिंह के नेतृत्व में आक्रमण किया। रुहेलों को पीलीभीत छोड़ना पड़ा। पहाड़ों की तरफ कूँच कर गए और वहाँ से नैपाल की ओर चले गए।

अवध के नवाबों के अधिकार में पूरे रुहेलखण्ड में बहुत अव्यवस्था हो गई। उनका कार्य केवल यहाँ से धन खींचना रहा। यहाँ की जनता बदहाल हो गई तथा खेती कृषकी के कार्य ठप्प हो गए। जमींदारों के शोषण बहुत बढ़ गए अधिकतर जनता रामपुर राज्य में जाकर बसने लगी। सारा रुहेलखण्ड वीरान हो गया।

सन् 1797 में आसिफउद्दौला का देहान्त हो गया। इस समय तक अंग्रेजों का प्रभाव अवध के शासन पर बहुत बढ़ चुका था यहाँ तक कि यहाँ के नवाबों का बनाना मिटाना भी अंग्रेजों के हाथ में था। पहले वजीर अली को अवध के सिंहासन पर बैठाया गया लेकिन शीघ्र ही उसे हटाकर सआदत अली को नवाब बना दिया।

रुहेलखण्ड पर अंग्रेजों का अधिकार

सन् 1798 ई. में मारकुंश आफ वेलेजली भारत में ईस्ट इण्डिया के का गर्वनर जनरल बनकर आया। उसने अंग्रेजी हुकूमत की जड़ें बहुत मजबूत कीं। आते ही आते अवध के नवाब से रुहेलखण्ड छीन लिया। पहले रुहेलखण्ड दिए जाने के प्रयास किए लेकिन आसानी से सफल न होने पर सन् 1801 में एक सेना लखनऊ भेजी। वहाँ पर नियुक्त अंग्रेज रेजीडेन्ट को आज्ञा भेजी कि नवाब को आधा राज्य कं. को देने को मजबूर करो वरना सेना द्वारा लखनऊ राज्य पर कब्जा कर लो। नवाव सआदत अली अंग्रेजों से लड़ नहीं सकता था अतः आधा राज्य देना पड़ा। 10 नवम्बर सन् 1801 को सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर हो गए और रुहेलखण्ड पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। यहाँ की आमदनी इस समय एक करोड़ पैंतीस लाख रुपये सालाना थी यहाँ का पहला गवर्नर, गवर्नर जनरल का भाई हेनरी वेलेजली बनाया गया।

अंग्रेजों के अधीन रुहेलखण्ड

1801–1947

रुहेलखण्ड कमिश्नरी

नवम्बर सन् 1801 में रुहेलखण्ड पर अंग्रेजों (ईस्ट इण्डिया कं.) का अधिकार हो जाने के पश्चात उन्होने इस क्षेत्र को दो भागों में बांटा। एक भाग बरेली का स्थापित किया जिसमें बरेली के साथ साथ बदायूँ शाहजहाँपुर एवं पीलीभीत का क्षेत्र रखा। दूसरा भाग मुरादाबाद का किया जिसमें मुरादाबाद एवं बिजनौर का क्षेत्र रखा। बरेली का कलेक्टर काकबार्न को तथा मि. डब्ल्यू लेसिस्टर को मुरादाबाद का कलेक्टर बनाया। इन दोनों भागों, जिनको जिला कहा गया, को मिलाकर एक कमिश्नरी की स्थापना की जिसको रुहेलखण्ड कमिश्नरी कहा गया जिसका मुख्यालय बरेली को बनाया। आगे चलकर इस रुहेलखण्ड कमिश्नरी के अधीन कुमायूँ को भी रखा जिसे तराई कहा गया। इस तराई को सन् 1858 में रुहेलखण्ड से अलग कर दिया गया। इस प्रकार पुरानी रुहेलखण्ड रियासत वाला क्षेत्र तथा अवध शासन के अधीन रुहेलखण्ड कहा जाने बाला क्षेत्र अब रुहेलखण्ड कमिश्नरी बन गया।

शाहजहाँपुर पीलीभीत बदायूँ एवं बिजनौर जिलों (जनपद) का सृजन

अंग्रेजों ने पूर्व से चली आ रही शासन प्रणाली में परिवर्तन करके अपनी नई शासन पद्धति लागू की। उन्होंने शुरु से ही लगान के नए बन्दोबस्त प्रारम्भ कर दिए जो

अंग्रेजों के विरुद्ध कुछ विद्रोह और हुए लेकिन वह कुछ महत्व नहीं रखते थे। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से आजादी के लिए तीव्र वातावरण बना तथा आन्दोलन हुए जिनके परिणामस्वरूप अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। देश सन् 1947 में आजाद हो गया। रुहेलखण्ड भी सन् 1801 से 1947 तक अग्रेजों की पराधीनता में रहा।

देश की आजादी के लिए 1857 में महाक्रान्ति हुई तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से अनेक आन्दोलन हुए। सभी जिलों में इनमें क्या–क्या घटनाएं घटीं उनका वर्णन प्रत्येक जिले के अलग अलग वर्णन में किया गया है।

नगर का नाम बिजनौर पड़ गया। जो भी हो, अकबर सम्राट के समय में बिजनौर एक महाल अथवा पट्टी के रूप में मौजूद था। अंग्रेजों के शासनकाल में इसे जिले का मुख्यालय होने का गौरव प्राप्त हुआ। प्रारम्भ में इस जिले का मुख्यालय नगीना रहा। सन् 1824 में बिजनौर जिला मुख्यालय बनाया गया।

प्राचीनकाल

यह जनपद पुरातन युग से अपनी भौगोलिक बनावट के कारण राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। उत्तर में हिमालय की तराई से मिलती हुई इसकी सीमाएं पहाड़ी गतिविधियों का अन्तिम पड़ाव रही हैं। पश्चिम–दक्षिण की सीमाओं को निश्चित करती गंगा की पवित्र धारा साहित्य में वर्णित विदुर कुटी और राजा दुष्यंत की प्रणय लीला की स्थली रही है। एक अन्य जनश्रुति के अनुसार बिजनौर का संबंध राजा वेन से था। एटकिन्सन के विचार से बिजनौर जनपद उत्तर का बहुत बड़ा भाग मध्यकाल तक पहाड़ी गतिविधियों का केन्द्र रहा है। मेगस्थनीज ने जिस एरिनेसिस नदी का वर्णन किया है इसका समीकरण बिजनौर जनपद में प्रवाहित होती मालिन नदी से किया जाता है। कनिंघम महोदय को मोरध्वज के बौद्ध स्तूप तथा मंडावर में उत्तर–पश्चिम की ओर लगभग तीन चार मील की दूरी पर स्थित टीप नाम के स्थान पर 6 मुद्राएं प्राप्त हुई थीं, जिनमें 5 मुद्राएं कुषाण नरेश वासुदेव की तथा एक उत्तरवर्ती नरेश भ्रि की हैं। इस जनपद पर विम से लेकर वासुदेव द्वितीय के समय तक उत्तर पश्चिम का भाग कुषाणों से संबंधित रहा है।

नगीना रेलवे स्टेशन से 9 मील उत्तर पूर्व की दिशा में बढ़ापुर नामक कस्बे से तीन मील पूर्व की ओर एक विशाल किले के अवशेष बिखरे पड़े हैं। जैन साहित्य में वर्णन है कि निर्वाण से पूर्व भगवान पार्श्वनाथ हस्तिनापुर में भ्रमण करते हुए इस स्थान पर भी कुछ दिन रुके थे तथा निर्वाण के बाद अहिच्छत्र होते हुए पुनः इस स्थान पर पधारे थे। इस जनपद के इतिहास की अगली कड़ी जोड़ने में डॉ. वीना त्यागी का महत्वपूर्ण योगदान है। टीप में उन्हें जो ताम्र मुद्राएं प्राप्त हुई हैं, उनका विशद् व्योरा देकर उन्होंने यह सिद्ध किया है कि प्रथम मुद्रा को छोड़कर शेष सभी मुद्राएं कुषाण युग के अवसान से लेकर गुप्त युग के पूर्व की प्रतीत होती हैं। यह वह समय था जब कुणिंद और योधेयों ने मिलकर अपने कंधों से कुषाणों की दासता का जुआ उतार फेंका था। अतः यह सम्भव हो सकता है कि तराई भावर तक शासन करने वाली कुणिंद शाखा का यहां तक शासन रहा हो

और इसी समय उक्त मुद्राओं का प्रचलन हुआ हो। डॉ. सत्यप्रकाश के अनुसार निष्कर्ष रूप में यह निश्चित है कि ईसा पूर्व 877 से लेकर गुप्त युग के अन्त तक अथवा उससे कुछ समय बाद तक जैन धर्म इस क्षेत्र में फलता फूलता रहा। इसकी पुष्टि नजीबाबाद के निकट प्राप्त मयूर ध्वज दुर्ग तथा नहटौर के समीप पाड़ला गांव से प्राप्त अवशेषों से भी होती है। यह भी अनुमान किया जाता है कि पूर्व मध्यकाल में ध्वजवंशी नरेशों ने यहां शासन किया था। हर्ष कालीन युग के संदर्भ में मंडावर नामक नगर का भी अत्यधिक महत्व है। एस. मार्टिन तथा कनिंघम इस स्थल का समीकरण चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा वर्णित mo-ti-pu-Lo करते हैं। उनके अनुसार यहां बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव भी था ।

मध्यकाल

दिल्ली पर अधिकार कर लेने के बाद तुर्क सुल्तानों ने बदायूँ एवं सम्भल को भी अपने अधिकार में कर लिया। तब यह क्षेत्र कठेर प्रांत में आता था। इस पर मुसलमान सुल्तानों ने आक्रमण करके अपने अधीन बदायूं सूबे का अंग बनाया तथा बाद में सम्भल सूबे के आधीन यह क्षेत्र रहा। यहां के मंडावर पर भी उनका आधिपत्य हो गया। 1254 ई. में दिल्ली के सुल्तान नासिर उद्दीन महमूद ने कठेर पर आक्रमण किया। वह दिल्ली से पहले बिजनौर क्षेत्र में आया उसके बाद उसने गंगा को उत्तर में हरिद्वार के पास पार किया। गंगा के किनारे सभी क्षेत्रों पर अधिकार करता हुआ बदायूं गया।

गयासउद्दीन बलवन समय इस प्रांत को अमरोहा के नाम से जाना गया। इस अवसर पर सुल्तान ने कठेर पर आक्रमण किया तब इसी क्षेत्र के रास्ते से होकर गया। सन् 1398 में तैमूर लंग ने दिल्ली पर आक्रमण किया तब वह भी बिजनौर, लालडांग व हरिद्वार के क्षेत्र में आया और खूब लूट–पाट की। कुछ वर्ष पश्चात खिज्र खां ने कठेरिया राजा राव हरसिंह देव पर आक्रमण किया। उस समय बिजनौर का क्षेत्र कठेरियों के अधिकार में था। हरसिंह देव का दिल्ली के सुल्तान से समझौता हो गया। उस समय अमरोहा को सूबा बनाया गया तथा बिजनौर का क्षेत्र सीधा दिल्ली के अधिकार में आ गया। शेर शाह सूरी के समय सम्भल को सूबा बनाया गया तब यह सम्भल के अधीन रहा।

अकबर का वित्तीय प्रबन्ध

मुगल बादशाह अकबर के समय में बिजनौर का क्षेत्र दिल्ली सूबा एवं सम्भल

से उसको दबा दिया गया जिसके इनाम स्वरूप अली मोहम्मद खां को नवाबी का खिताब प्रदान किया गया। सन् 1742 में मुरादाबाद के सूबेदार राजा हरनन्द खत्री ने अली मोहम्मद खां पर आक्रमण किया जिसमें राजा हरनन्द हार गया और मारा गया। रुहेला नवाब अली मोहम्मद खां का उस समस्त क्षेत्र पर अधिकार हो गया जो मुरादाबाद की सूबेदारी में आता था। बिजनौर सहित समस्त रुहेलखण्ड अली मोहम्मद खां रुहेला की रुहेलखण्ड रियासत का अंग बन गया। इसके बाद मुहम्मद शाह ने रुहेलों पर आक्रमण किया। नवाब अली मोहम्मद खां को वह दिल्ली ले गया और सरहिन्द का सुवेदार बना दिया। सन् 1748 में पुनः अली मोहम्मद खां को रुहेलखण्ड का नवाब बना दिया गया। इन दो वर्षो में मुरादाबाद सूवे के सुवेदार फरीदउद्दीन तथा राजा चतुर्भुज रहे।

सन् 1748 में रुहेलों के अधिकार में पुनः रुहेलखण्ड आ जाने पर उनकी व्यवस्था के अनुसार बिजनौर जलालाबाद तथा अन्य परगने नजीबउद्दौला को जागीर में दिए गए। नवाब अली मोहम्मद खां की मृत्यु के बाद दिल्ली के वजीरे आजम ने मुरादाबाद का सूबा कुतुबउद्दीन को दे दिया जिसके परिणामस्वरूप रुहेलों तथा कुतुबउद्दीन में युद्ध हुआ । धामपुर के निकट रुहेला सरदार दून्दे खां ने उसको पराजित किया। जिसमें वह मारा गया। बिजनौर का क्षेत्र पुनः रुहेलों के अधिकार में आ गया। मराठों के आक्रमण के समय रुहेले बिजनौर के लाल डांग क्षेत्र में कुछ समय रहे और पुनः रुहेलखण्ड वापस पहुंच गए।

नवाब नजीबुद्दौला का उत्थान (सन् 1755 – 1770)

इस समय बिजनौर जिले का अधिकांश भाग नजीब खां के अधिकार में था। नजीब खां एक कुमरखेल अफगान था जो भारत में किशोरावस्था में ही आ गया था। प्रारम्भ में उसने फर्रुखाबाद के मोहम्मद खां वंगश के यहां नौकरी की उसके बाद वजीर गाजीउद्दीन के यहां उसकी सेना में सम्मिलित हो गया। उसके बाद वह अली मोहम्मद खां के यहां आ गया जहां उसकी योग्यता की कद्र करते हुए बिजनौर के जलालाबाद तथा अन्य क्षेत्रों की जागीर उस को प्रदान कर दी गई। नजीबुद्दौला ने शीघ्र ही बहुत उन्नति की बिजनौर एवं सहारनपुर दोनों जिलों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया तथा दिल्ली दरबार में भी उच्च स्थान प्राप्त कर लिया। सन 1755 में दिल्ली दरबार से उसको नवाबी का खिताब प्राप्त हुआ। उसने नजीबाबाद की स्थापना की तथा पत्थरगढ़ का किला स्थापित किया।

जिस समय अहमद शाह अब्दाली ने दिल्ली पर तीसरी बार आक्रमण किया

बिजनौर

बिसौली में मृत्यु हुई वही दफनाया गया तााि उनका भी एक सुन्दर मकबरा बाद में बनवाया गया।

नवाब जाबिता खां एवं उनके बाद

नजीवुद्दौला के पश्चात जाबिता खां यहॉ का नवाब बना। गद्दी पर बैठते ही उसको मराठो के आक्रमण का सामना करना पडा। सन् 1770 ई0 में दिल्ली के बादशाह तथा मराठों ने आक्रमण किया तथा शुकुरताल तक आ गए। जाबिता खां उनका मुकाबला न कर सका और रूहेलखण्ड में भाग आया और बाद में मराठों से जावता खां की संधि हो गई।

सन् 1774 में अवध के नवाब शुजाउददौला ने रूहेलखण्ड पर आक्रमण कर दिया जिससे रूहेले हार गए और रूहेलखण्ड पर नवाब अवध का अधिकार हो गया। बिजनौर का क्षेत्र अवध के नवाब के अधिकार में आ गया। जाबिता खां केवल सहारनपुर तक ही सीमित रह गया। जाबिता खां पर दिल्ली की सेनाओं ने सन् 1775 में आक्रमण किया। जाबिता खां सन् 1785 तक जीवित रहा। उसकी मृत्यु के बाद सारा क्षेत्र नवाब अवध के अधिकार में आ गया तथा बाद में यहॉ पर 1801 में अंग्रेजों का अधिकार हो गया। सन् 1947 ई0 तक यहॉ अंग्रेजों का अधिकार रहा। उनके शासनकाल में सबसे बड़ी घटना आजादी का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था।

सन् 1857 की क्रांति

मेरठ के पश्चात बिजनौर में अंग्रेजों के विरूद्व यहॉ के निवासियों ने बिगुल बजा दिया। अंगेज कलेक्टर अलैक्टर अलैक्जैडर शैक्सपियर तथा ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट जार्ज पामर ने विशेष गस्त की व्यवस्था की लेकिन जिले में निरन्तर अव्यवस्था फैलती गई। 19 मई को मुरादाबाद की जेल लूट ली गई जिसकी सूचना मिलते ही अधिकारियों की सावधनी के बावजूद भीड़ ने सरकारी खजाने को घेर लिया और जेल को तोड़ दिया। कैदी स्वतंत्र हो गए। अधिकारियों ने कैदिया का पीछा किया जिसमें कुछ कैदी मारे गए तथा शेष नदी की ओर भाग गए। जिला मजिस्ट्रेट स्वयं खजाने में गए और वहॉ रखा लगभग सवा लाख रूपया उन्होंने कुऍ में फिंकवा दिया तथा जिले के रई लोगों को तथा नजीबाबाद के नवाब महमूद खां को एकत्रित करके सबको अंग्रेजों के पक्ष में करने के लिए प्रयत्न किए लेकिन वह सफल नहीं हो सके। शीघ्र ही बरेली में क्रांतिकारी सरकार की स्थापना हो जाने के बाद बिजनौर को संभालना

बिल्कुल मुश्किल हो गया और हालात देखकर अंग्रेजों ने बिजनौर छोड़ देने में ही कल्याण समझा। नजीबाबाद के नवाब नजीबुद्दौला के परपौते नवाब महमूद खां को जिला सौंप दिया और अधिकार पत्र भी दे दिया।

महमूद खां को दिल्ली के मुगल सम्राट की तरफ से शाही फरमान जारी किया गया। जिसमें उनको नवाब माना गया तथा जितने क्षेत्र में उनका शासन था उस पर उनका अधिकार स्वीकार किया गया। लेकिन बहुत प्रयत्नों के बाद भी महमूद खां अपना प्रभाव जमाने में नाकामयाब रहे। कई लड़ाईयों में उनको मुंह की खानी पड़ी। 6 अगस्त 1857 को हल्दौर के चौधरी महाराज सिंह ने चौधरी नैनसिंह तथा जोध किस के साथ बिजनौर पर हमला किया। उनके पास चार हजार सैनिक थे जब कि नवाब के पास केवल चार पांच सौ सैनिक थे। बुखाारा के बाग के पास लड़ाई हुई जहॉ नवाब हार गए और उनको बिजनौर छोड़कर भागना पड़ा। नवाब की सेनाएं छितर गई और जिले में तीन जगहों पर इकठ्टी हुयीं और अंग्रेजो ने बाद में उन्हें बारी–बारी से हराकर जंगलों में ढकेल दिया।

17 अप्रैल सन् 1858 को अंग्रेजों ने अपनी स्थिति मजबूत करके कनखल के पास गंगा पार की और बिजनौर जिलमें में घुसकर बचे हुए जहॉ उनको नाना प्रकार के कष्ट सहने पड़े। नवाब के छोटे भाई जलालउद्दीन गिरफ्तार कर लिए गए जिनको बाद में फौजी अदालत ने दोषी ठहराकर फांसी पर लटका दिया। अन्य क्रांतिकारियों को जिन्हे गिरफ्तार किया गया, गोलियों से भून दिया गया अथावा फांसी पर लटका दिया। बिजनौर का पामरगंज वही स्थान है जहॉ यह अमानवीय कृत्य किया गया। नजीबाबाद के ऊपर और भी अत्याचार किए गए। समूचे नगर को जला दिया गया। भागते हुए लोगों को गोलियों की बौछार से मौत के घाट उतार दिया गया। बिजनौर के नगीना आदि अन्य स्थानों पर भी इसी प्रकार के अत्याचार किए गए और अंग्रेजों ने भारत पर लगभग नब्बे वर्ष तक और राज्य किया। सन् 1921 से पुनः देख को आजाद कराने के लिए तेजी से आंदोलन प्रारम्भ हो गए जो निरन्तर बढ़ते ही रहे। बिजनौर जनपद में भी विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों ने इसमें बढ़चढ़ कर भाग लिया तथा त्याग एवं बलिदान देकर देश को आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रा आंदोलन

अंग्रेजों के प्रति सबसे पहले विरोध जनपद में प्रथम विश्व युद्व प्रारम्भ होने पर यहॉ के किसानों से बेगार लेने पर प्रारम्भ हो गया। इसके बाद कांग्रेस के एक जन–संगठन के

रूप में आते ही देश में खिलाफत आंदोलन तथा असहयोग आंदोलन दासता के विरूद्व उबल पड़ा । बिजनौर में सर्वश्री चौधरी चंदन सिंह, सोती जगदीश दत्त, लतीफ बेग, श्री विश्वमित्र एडवोकेट एंव महावीर त्यागी आदि लोगों ने बहुत कार्य किया। यह लोग तथा श्री रतन लाल जैन एवं श्री नैमिशरण जैन आदि गिरफ्तार कर लिए गए।

सन् 1924 के लगभग अंग्रेज सरकार ने गंगा स्नान के मेले के अवसर पर बैलगाडियों पर टैक्स लगा दिया जिसका कांग्रेस ने विरोध किया तथा सफलता पाई। नमक सत्याग्रह एवं सविनय आंदोलन में बिजनौर के लोगों ने बढ़चढ कर भाग लिया। सन् 1932 में गांधी जी को गिरफ्तार किए जाने के बाद जिले में जोर शोर से आंदोलन चला। धामपुर क्षेत्र में विशंभरनाथ माहेश्वरी एवं चौधरी होरी सिंह आदि ने नेतृत्व किया तथा बिजनौर में गोविन्द सहाय आदि नेताओं ने सरकार का विरोध किया। सत्याग्रहियों के जत्थे निकलते थे और गिरफ्तार कर लिए जाते थे। लगभग 400 व्यक्ति यहॉ से गिरफ्तार किए गए।

सन् 36–37 के असेम्बली चुनाव में चौ0 खूब सिंह तथा हाफिज मोहम्मद इब्राहीम चुनाव जीते। विश्व युद्व प्रारम्भ होने पर इन्होंने इस्तीफा दे दिया। अगले वर्ष व्यक्तिगत आंदोलन में यहॉ के लोगों ने भाग लिया। उनका गिरफ्तार किया गया और जेलों में डाल दिया गया। सन् 1942 में महात्मा गांधी ने भारत छोड़ों आंदोलन चालाया तब बिजनौर के स्वतंत्रता सेनानियों ने भी स्थान पर प्रदर्शन किए। स्थान स्थान पर लाठी चार्ज हुआ। कांग्रेसियों को बंदी बना लिया गया। धामपुर, चांदपुर, नूरपुर, ताजपुर आदि सभी स्थानों पर आंदोलन हुआ। हजारों की संख्या में जनता ने भाग लिया। नूरपुर में थाने से गोली चलाई गई जिसमें परवीन सिंह एवं रिक्खी सिंह शहीद हुए तथा मुंशीराम सिंह को गोली लगी। अनेक लोगों को गिरफ्तार किया गया तथा जेल भेज दिया गया।

बिजनौर जनपद स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने में अपना प्रमुख स्थान रखता है। यहॉ अनेक नेता ऐसे हुए जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

मुख्य ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक एवं धार्मिक स्थल

कण्व आश्रम

महाकवि कालिदास की अमर रचना अभिज्ञान शाकुन्तलम् के अनुसार गंगा एवं मालिनी नदी के संधि स्थल पर रावली के समी ही ऋषि कण्व का आश्रम था।

महाराज दुष्यंत एवं शकुन्तला का यह स्थान प्रणय स्थली तथा उनकी महान संतान भरत जिनके नाम पर हमारे देश का नाम भरत पड़ा यह स्थाना क्रीडा स्थली था इस अर्वाचनी काल की महत्ता के स्मृति–चिन्ह रावली के पास एक जीर्ण शीर्ण मंदिर के रूप में अब भी शेष हे।

विदुर–कुटी

किंवदती है कि महाभारत काल में सुप्रसिद्व नीतिज्ञ महात्मा विदुर का आश्रम बिजनौर से लगभग 10 किमी दूर गंगा तट पर स्थित था। यहॉ भगवान कृष्ण ने महात्मा विदुर का बथुए का साग खाया था। यहॉ आज भी मंदिर के समीप हर ऋतु में बथुआ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है।

महात्मा विदुर के आश्रम तथा प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्वार भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने सन् 1960 में विदुर कुटी पर महॉमा विदुर की मूर्ति का अनावरण करके किया था। द्वितीय राष्ट्रपति डा0 राधाकृष्णन भी सन् 1961 ई0 में इस पवित्र स्थल पर आए थे। उन्होनें भारत माता के मंदिर का शिलान्यास किया था। विदुर आश्रम में विदुर आरोग्य कुदरी, श्री विदुर गुरू गृह एवं इण्टर कॉलिज चल रहा है।

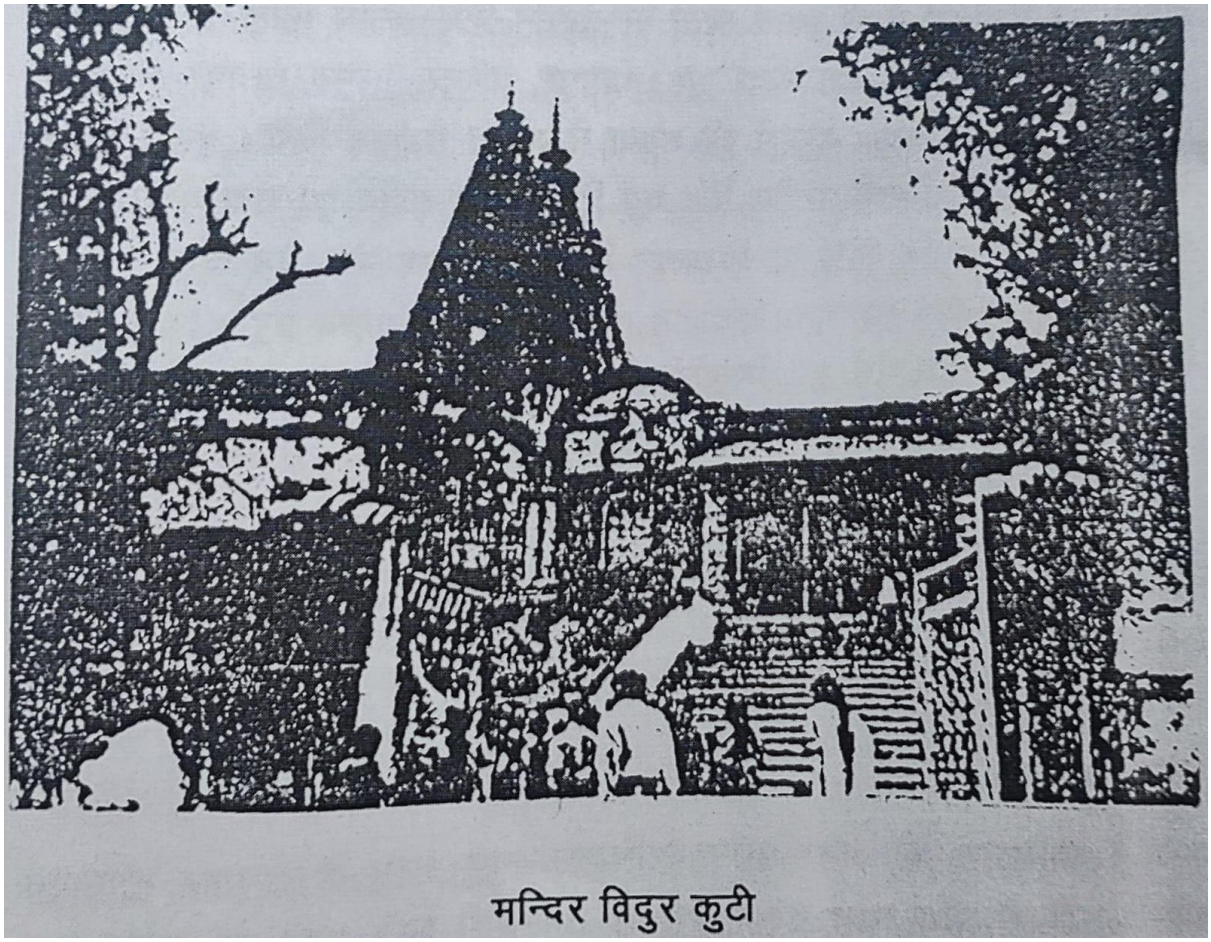

मन्दिर विदुर कुटी

दारा नगर

इस स्थान पर पाण्डवों, कौरवों एवं उनके सेनापतियों की पत्नियों एवं बच्चे महाभारत युद्व के समय ठहरे थे। उनके लिए नए मकान बनाए गए थे जिनकी पूरी बस्ती बस गई थी। बाद में इसका नाम दारा नगर प्रसिद्व हुआ। प्राचीन अवशेष आज भी यहॉ जगह जगह बिखरे पड़े है।

गंज

यह भी प्राचीन कस्बा है। यहॉ पर पुराने मंदिर तथा वर्तमान में विश्नोइयों का आश्रम, वाल्मीकि आश्रम तथा केवलानन्द आश्रम प्रमुख है। प्राचीन काल में बने भवनों के कुछ अवशेष आज भी शेष है।

जहानाबाद

इसके बारे में जनश्रुति है कि मुगल शासनकाल में सम्भवतः शाहजहॉ की बेगम को सर्प ने डस लिया था। जाहर दीवान ने सर्प विष उतार कर बेगम की जीवित कर दिया था जिसके पुरस्कार स्वरूप मुगल बादशाह ने जहानाबाद की रियासत उनको उपहार–स्वरूप दी थी। यहॉ पर आगे के काल में कई महत्वपूर्ण मस्जिदों एवं ईदगाह का निर्माण हुआ। यहां पर जाहर दीवान की मजार है जहॉ पर अब भी मेला लगता है।

सीता का मंदिर

चांदपुर–जलीलपुर रोड नानौर गांव से एक किमी दूर सीता मंदिर मठ है। ऐसी जनश्रुति है कि यहॉ धरती फटी थी। तथा सीता जी उसमें समा गई थी। मंदिर में प्रतिमा नहीं है। एक चौकोर शिला है।

सेना का द्वार

चांदपुर के समीपवर्ती गांव सेदवार का सम्बन्ध महाभारत काल से जोडा जाता है। ऐसी जनश्रुति है कि महाभारत के समय पाण्डवों ने अपनी छावनी यहॉ पर बनाई थी। वर्तमान में गांव में द्रोणाचार्य का मंदिर भी है। यहॉ पर सैकड़ों वर्ष पुराना वट वृक्ष भी है।

अकबर के दो नवरत्नों का जन्म स्थान वास्टा आजमपुर

यहॉ मुगल सम्राट अकबर के नवरत्न अबुल फजल व फैजी का जन्म हुआ था। यही की पाठशाला में उन्होंन प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की थी।

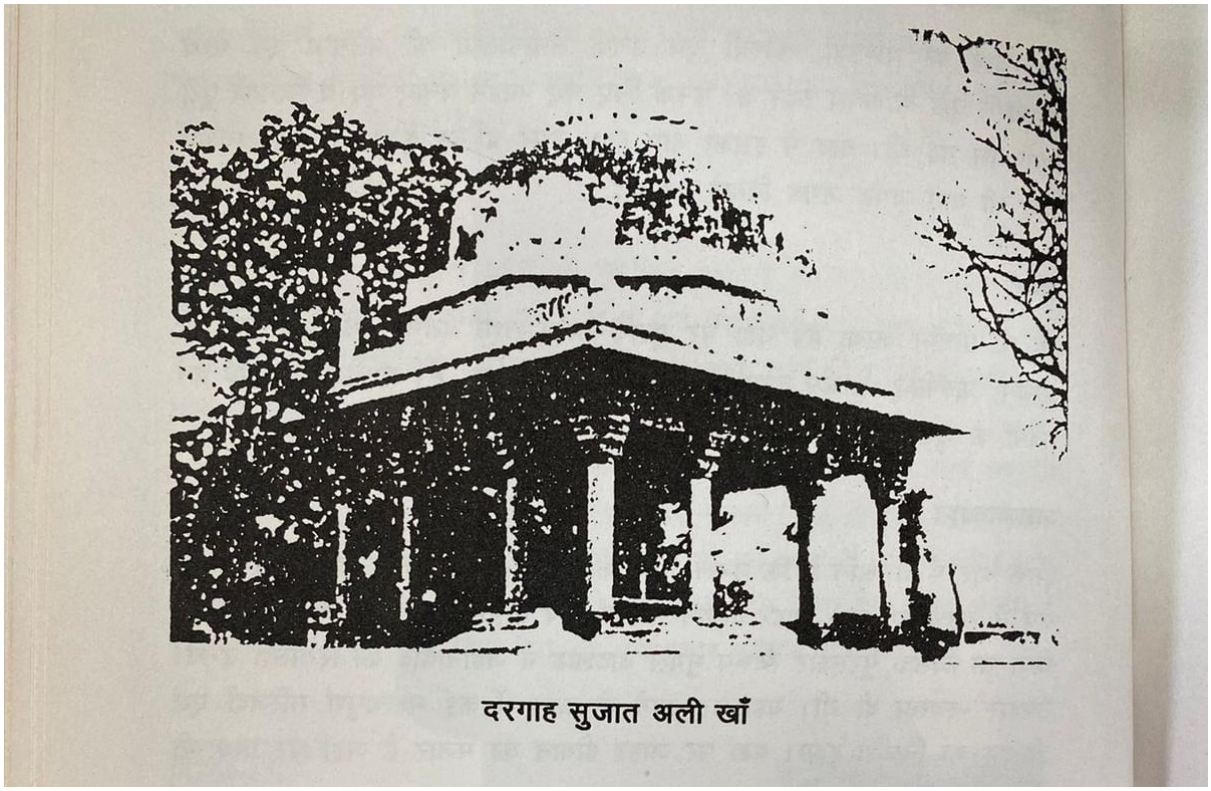

दरगाह सुजात अली खाँ

मयूरध्वज दुर्ग

नजीबाबाद तहसील के अन्तर्गत जाफरागांव के निकट भगवान कृष्ण के समकालीन दानी सम्राट् मयूरध्वज ने दुर्ग बनाया था जिसकी खुदाई गढ़वाल विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग ने की थी।

नजीबुद्दौला का किला

नजीबुद्दौला ने नजीबाबाद की नीब रखी थी तथा यहॉ किला भी बनाया था। जो कि आज भी है। अंग्रेजों के शासन काल में कुख्यात डाकू सुल्ताना ने इस किले को अपनी शरण स्थली बनाया था। जिसके कारण यह सुल्ताना डाकू का किला नाम से प्रसिद्व हो गया।

मंडावर का महत्व

मण्डावर का विशाल महल मुन्शी शाहमत अली का है। मुन्शी जी फारसी के विद्वान थे और महारानी विक्टोरियो को पढ़ाते थे। कहॉ जाता है इसी मुन्शी जी

के लिए रानी विक्टोरिया ने सन् 1850 ई0 के लगभग यह महल बनवाया था। इसी क्षेत्र में मंडावर–वाला रोड पर कुन्दनपुर गांव के पास गलखा देवी के नाम से मशहूर मंदिर है। कहॉ जाता है कि भगवान कृष्ण, पूजा के लिए आई रूक्मिणी को यही से हरकर ले गए थे।

किला पारस नाथ

बढ़ापुर से लगभग चार कि0मी0 पूर्व में लगभग 25 एकड़ क्षेत्र में फैले किले के खण्डर विद्यमान है। इनके टीलों पर उगे वृक्ष तथा झाड़–झंखाडों के बीच आज भी खूबसूरत नक्कासी दार शिलाएं मौजूद है। साहित्यिक विवरणों में इस स्थान की ऐतिहासिकता जैन तीर्थकर पार्श्वनाथ से जोड़ी जाती है तथा इसको पारस नाथ का किला के नाम से जाना जाता है। इस स्थान को देखने से लगता है कि चारों ओर द्वार रहेग होगें। चारों ओर बनी खाई कुछ स्थानों पर आज भी नज़र आती है।

शेरकोट

यह भी एक ऐतिहासिक नगर है। यहॉ पर ऊॅचे–ऊॅचे पुराने टीले महल तथा भवन शेरकोट रियासत की याद आज भी ताजा कराते है।

ताजपुर का चर्च

ताजपुर की रियासत आधुनिक ऐश्वर्य एवं विलास के लिए प्रसिद्व रही है। वहॉ पाश्चात्य शैली की कोठियां बनी है। साइकिल से लेकर दो शायिका वाले वायुयान तक सर्वप्रथम खरीदने के कीर्तिमान यहॉ स्थापित किए गए। राजा विलायत गए तथा मेमों से शादियां की। राजा श्यामरिख ने ईसाई धर्म ग्रहण करने के बाद विशाल मैथोडिस्ट गिरजा घर बनवाया । उसके लिए रोम–इटली से कलात्मक भव्य मूर्तियां मंगवाई गई।

इस विभिन्न स्थलों के अतिरिक्त बिजनौर जनपद में अनेकों स्थानो ंपर ऊॅचे–ऊॅचे टीले विद्यमान है जिनकी खुदाई करने पर प्राचीन ईटें, कुऍ, मूर्तियां तथा अन्य अवशेष प्राप्त हुए है जो जनपद की प्राचीनता पर प्रकाश डालते है।

प्रतिभाएं

बिजनौर जिले में ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक, विधिवेत्ता, साहित्यकार, पत्रकार, कवि, कला कौशल विद्व एवं समाज सेवियों ने जन्म लेकर इसके मान गौरव को बढाया

है। जैसा कि मुझे ज्ञात हुआ है ग्राम नायक नंगला के निवासी बिहारी सतसई के यशस्वी टीकाकार एवं सामलोचक पं0 पद्मसिंह शर्मा, ग्राम रतनगढ में जन्मे संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित रामावतार शास्त्री, चांदपुर में जन्मे ख्याति प्राप्त इंजीनियर गोविंद प्रसाद शर्मा, तहसील धामपुर के हिन्दी पत्रकारिता के दधीचि सम्पादकाचार्य पं0 रूद्रदत्त शर्मा ने बिजनौर जनपद की प्रतिष्ठा को चार चांद लगाए है। संगीत के क्षेत्र में नगीना के पंडित अफजल हुसैन ने अपना सिक्का जमाया। हल्दौर के लाला ठाकुर दास जी अछूतोद्वारक तथा लाला भवानी प्रसाद जी स्त्री शिक्षा प्रसारक के रूप में चिरस्मरणीय रहेंगे। नजीबाबाद के साहू भगवती प्रसाद ने अन्तर्राष्ट्रीय पुष्प प्रदर्शनियों में प्रथम पुरस्कार जीतकर अपने जनपद की सुगन्ध को विश्व में फैलाया।

मंडावर के मुंशी शहामत अली, भोपाल रियासत के प्रधानमंत्री रहे। वे उर्दू के आलिम फाजिल थे। उनको रानी विक्टोरिया को उर्दू सिखाने विलायत भेजा गया। मण्डावर में ही भारत के प्रथम इंजीनियर रजा जवाला प्रसाद का जन्म हुआ। उनके मार्ग दर्शन में काशी विश्वविद्यालय के अनेक भवनों, पटियाला महल, लक्ष्मण झूला (ऋषिकेश) ादि का निर्माण हुआ। उनके पुत्र श्री धर्मवीर जी पश्चिमी बंगाल तथा कर्नाटक के राज्यपाल रहे।

तहसील नजीबाबाद के राजपुर नवादा में जन्मे गजल सम्राट दुष्यंत कुमार पर बिजनौर को नाज है। वह पहले गजलकार हुए जिन्होने गज़ल को एक विधा के रूप में हिन्दी में स्थापित किया।

सेठ रोजेन्द्र प्रसाद जैन के प्रयत्नों से पहले बैंक भारत बैक की स्थापना हुई थी। श्री जैन ने डा0 श्री राम त्यागी के सहयोग से बिजनौर में वर्धमान कालिज की स्थापना की।

प्रसिद्वियां

बिजनौर जनपद के मुख्यालय से बडी उसकी तहसीलें है। तहसील धामपुर में एशिया की सबसे बड़ी चीनी मिल है। यह नगरी लकडी की बडी मण्डी मानी जाती है। यहॉ की रियासतें स्योहारा, नहटौर एवं रतनगढ बहुत प्रसिद्व रही है। रियासत ताजपुर अपनी शान शौकत के लिए प्रसिद्व थी। तहसील नगीना, रियासत हल्दौर व किरतपुर सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्रम के समय संग्राम स्थल रहे। राम गंगा परियोजना के अन्तर्गत कालागढ में एशिया का सबसे बडा मिट्टी का बांध बनाया गया है। निकट ही भारत का सबसे बडा सेक्चुरी जिम कार्बे पाक है। जिम

काबेट अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुस्त 'मैन ईटर ऑफ कुमायू' के लेखक थे और उन्ही के नाम पर इस क्षेत्र का नामकरण किया गया। मंडावर कस्बे का प्राचीनकाल में मूल नाम मधुपुर था। चीनी यात्री हवेन सांग ने अपने लेखों में इसका वर्णन किया है। यहॉ के भिक्षुओं ने तिब्बत, नेपाल, चीन एवं जापान आदि में जाकर अपने धर्म का प्रचार किया।

उत्तरी रेहड गांव के सतियों के मठ बहुत प्रसिद्व है। यहॉ की रियासत साहनपुर के राजाओं के वंशज बिना अस्त्र शस्त्र के केवल अपने हाथों में चमडे के दस्ताने पहनकर खूंखार जानवरों का शिकार करने के लिए प्रसिद्व है। यहॉ से 6 किमी दूर जोगीपुरा गांव में सैयद राजू का मजार है। औरंगजेब के दुर्व्यवहार के तंग आकर वह यहॉ बस गये थे। यहॉ हर वर्ष हजारों मुसलमान जियारत करने आते है। कोट कादर गांव वन क्षेत्र है। इसे रामपुर के नवाब कादर उल्लाह ने हैदराबाद की खूबसूरत शहजादी से शादी करने के बाद उसकी फरमाइश पर बनवाया था। नगीने के पास आबनूस की लकडी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। नजीबाबाद, मिट्टी के सुन्दर बर्तनों, सुराहियों, खिलौनों, कत्था तथा तारपीन के तेल की थोक मण्डी है। कस्बा नहटौर ने कपडों की कलात्मक छपाई तथा कपड़े के खिलौनों के लिए ऊॅचा स्थान पा लिया।

कला कौशल एवं लोक संस्कृति

जनपद में अनेकों स्थानों पर कला कौशल युक्त अनेक सामग्री का निर्माण होता है। किरतपुर में कांच बनाने के घरेलू उद्योग विकसित है। हस्तकला के नमूने यहॉ के विभिन्न मेलों में देखे जा सकते है। पंतग मांझा, ताजियों के निर्माण एवं अतिशबाजी के लिए यहॉ के कारीगर बहुत प्रसिद्व है। यहॉ की लोक कलाएं नौंटकी, कठपुतली नाच, स्वांग, नाटक मण्डलियां रंगमंच कला का उद्वार कर रही है। यहॉ के नात–कव्वाली–मंच, मसखरी, गायन–वादन, नृत्य, वेशभूषा ादि स्पर्धाएं आयोंजित की जाती है। एक समय था जब जिले के भांड, नक्काल बहुरूपिए दूर दूर तक प्रसिद्व थे। ग्रामों एवं उपनगरो में घरों की दीवारों पर लोकला पूर्ण सुन्दर सांझी–मांडने, देवी देवताओं के चित्र बनाए जाते है। देवी–देवताओं की सीपी–कौड़ियों, मिट्टी धातु मोलियों के जेबरों से सजाया जाता है। पिण्डोल, मिट्टी चूने, हल्दी रोली के रंगों से अल्पना पूरे जाते है। ग्रमीण अंचलों में स्त्री पुरूष लोकगीत एवं लोक नृत्यों से अपना मनोरंजन करते है। ढोलक, मजीरे, ढोल, सारंगी बजाए जाते है।

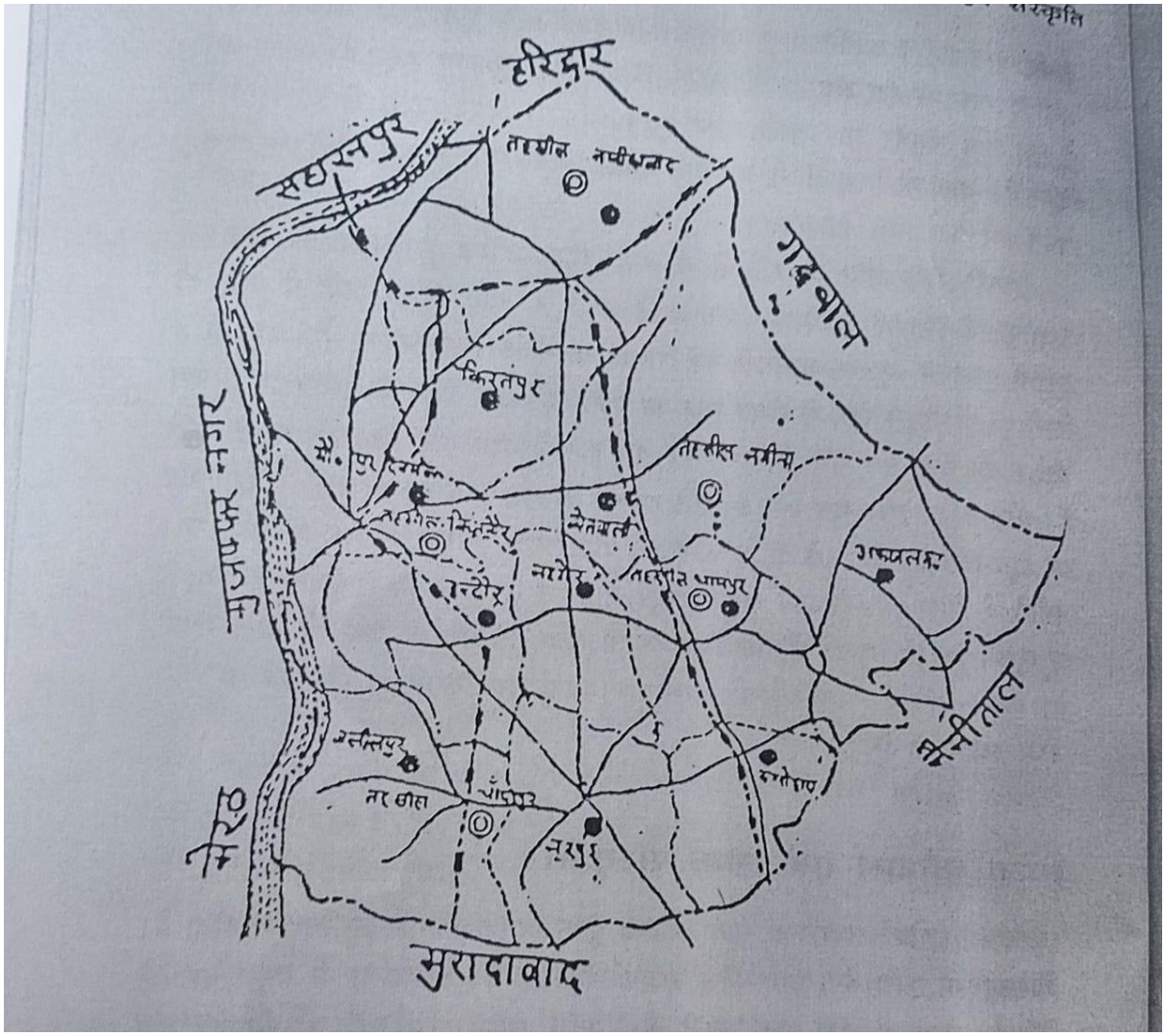

जिला– बिजनौर

सन्दर्भ

1. बिजनौर गजेटियर, वर्धमान । बिजनौर अंक 1998–99 प्रधान सम्पादक श्री गिरिराज शरण अग्रवाल से साभार संकलित।
2. वही।
3. श्री राजन चौधरी, आलेख, वर्धमान, बिजनौर अंक 1998–99, पृष्ठ 35–37।
4. वही पृष्ठ 38–40 ।

जे0पी0 नगर (अमरोहा)

इतिहास पुरातत्व एवं सस्कृति

इस जनपद के निर्माण की घोषणा उ0प्र0 की तत्कालीन मुख्यमंत्री सुश्री मायावती ने 6 अप्रैल 1997 को मुरादाबाद के कम्पनी बाग में आयोजित एक रैली में की थी। महान समाज सुधारक एवं सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत महाराष्ट्र के महात्मा ज्योतिबाफुले के नाम पर इस जनपद का नामकरण किया गया । अमरोहा को जनपद का दर्जा मिलने के पश्चात एक माह के अन्दर जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक की नियुक्ति कर दी गई थी। जिन्होने 22 अप्रैल 1997 को इस जनपद में प्रथम वार कार्यभार ग्रहण किया।

ज्योतिबाफुले नगर का सृजन मुरादाबाद मण्डल के एक जनपद के रूप में उत्तर प्रदेश शासन की अधिसूचना, दिनांक 15 अप्रैल सन् 1997 ई0 द्वारा जनपद मुरादाबाद की तहसील अमरोहा, धनौरा व हसनपुर के क्षेत्रों को सम्मिलित करते हुए किया गया। प्रारम्भ में कांठ को तसहील का दर्जा देकर इसी नए जनपद में सम्मिलित करने की घोषणा की गई थी लेकिन बाद में कांठ को मुरादाबाद में मिला दिया गया। इस जनपद को संक्षेप में जे0पी0 नगर कहा जाता है।

यह जनपद मुरादाबाद मण्डल के सबसे छोटे जनपद के रूप में पश्चिम दिशा में अवस्थित है। इसका भौगोलिक विस्तार 28 26 उत्तर में 29 26 उत्तरी अक्षांशो एवं 78 4 पूरव में 78 35 पूर्वी देशान्तरों के मध्य विस्तृत है। देश की राजधानी दिल्ली से 130 किमी पूर्व में स्थित यह जनपद मुख्यालय उत्तरी रेलमार्ग पर तथा दिल्ली लखनऊ राज मार्ग पर स्थित जोया कस्बे से उत्तर में 7 किमी की दूरी पर और मुरादाबाद से पश्चिम में 31 किमी दूरी पर स्थित है।

जनपद का कुल क्षेत्रफल 2147061 वर्ग किमी है। इसमें अमरोहा, जोया,

धनौरा, गजरौला, हसनपुर एवं गंगेश्वरी 6 विकासखण्ड है। यहॉ गंगा, यागद बागद, गागन, करूला, सोत तथा कृष्णा नदी बहती हैं।

अमरोहा की स्थापना एवं नामकरण

अमरोहा की नींव तथा अमरोहा का नाम के आधार के विषय में विभिन्नमत है।

1. मुरादाबाद के सरकारी गजेटियर के अनुसार अमरोहा की बुनियाद 474 ई0पू0 में पडी।
2. अन्य तथ्य के अनुसार इसकी नींव हस्तिनापुर के राजा अमरज्योद्व ने लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व डाली थी। जनश्रुति के अनुसार अमरोहा के निकट गजस्थल नामक ग्राम पाण्डवों के हाथियों का अस्तबल था।
3. अन्य किंवदन्ती के अनुसार पृथ्वीराज चौहान की बहन अम्बा रानी ने इस नगर का पुननिर्माण तथा सौन्दर्यी करण कराया और उसी के नाम पर अम्बोहा नाम पड़ा जो कि आगे चलकर अमरोहा कहलाया। अकबर तथा जहांगीर बादशाह के तत्कालीन शासनादेशों में तथा अन्य ऐतिहासिक पुस्तकों में इस नगर का नाम अम्बोहा दर्ज है।
4. प्राचीन किंवन्दती के अनुसार यह शब्द 'अम्रोवनम' संस्कृत भाषा से जुडा है जिसका अर्थ आमों के बाग है। उस समय संस्कृत आम बोलचाल तथा संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित थी इसी कारण इसका नाम बिगड़ते बिगड़ते अमरोहा रहा गया।
5. एक अन्य जनश्रुति के आधार पर लगभग एक हजार वर्ष ईसा पूर्व में इन्द्रप्रस्थ के राजा ''अमरचूढ'' ने इसकी नीव डाली थी तथा अपने ही नाम पर इसका नाम अमर–रूह–अमारूह (अमर द्वारा उत्पन्न किया हुआ अथवा नींव डाला हुआ) रक्खा था। यही नाम आगे चलकर बिगड़ते बिगड़ते अमरोहा हो गया।
6. अमरेाहा नाम पड़ने की एक जनश्रुति हजरत शाह विलायत शाह से भी जुड़ी हुई है। जैसे उनको यहॉ के आम तथा रोहू मछली बहुत पसंद आए थे इसलिए उन्होने इन दोनों शब्दों आम और रोहू को मिलाकर इस शहर नाम अमरोहू रख दिया जो बिगड कर अमरोहा हो गया। कुछ ऐसे लोग भी है जो अमरोहा नाम अजीजपुर बताते है।

अमरोहा की नीव तथा नाम पड़ने का कोई भी समय एवं आधार रहा हो अमन और शांति का प्रती अमरोहा, आपसी भाईचारे, साम्प्रदायिक सौहार्द व अपनी गंगा जमनी सभ्यता संस्कृति के लिए दूर दूर तक विख्यात है।

प्राचीन काल

अमरोहा के प्राचीन इतिहास का प्रथक से वर्णन प्राप्त नही है। पुरातन काल में यह क्षेत्र पंचाल राज्य का अंग था। पंचाल राज्य की राजधानी बरेली जिले के आंवला तहसील में रामनगर ग्राम के पास थी। प्राचीन काल में इसे अहिच्छत्र कहते थे। वर्तमान में मीलों तक इस राजधानी के खण्डर फैले हुए है। यहॉ पर विभिन्न राज्य वंशों एवं स्वतंत्र शासकों ने राज्य किया। अमरोहा इनके आधीन रहा।

उस समय अमरोहा क्षेत्र में विभिन्न वस्तियां रही। अब भी स्थान पर विभिन्न टीले अपनी प्राचीनता का दर्श करा रहे है। जहॉ विभिन्न प्राचीन सामग्री समय–समय पर प्राप्त हो जाती है। मौर्य साम्राज्य की स्थापना के बाद इस समस्त क्षेत्र पर मगध का अधिकार हो गया तथा उसके बाद काल में कुषाण वंशी तथा उनके बाद गुप्तवंशी सम्राटों का यहॉ शासन रहा। राजपूतों की उन्नति के पश्चात यहॉ उनका अधिकार रहा। उनके समय के विभिन्न अवशेष, मूर्तियां, भवनों की बड़ी–बडी देवताओं के चित्र एवं नक्काशी की हुई ईटें, आदि यहॉ प्राप्त हो जाती है।

क्रमबद्वता के रूप में अमरोहे का इतिहास संकलित नहीं है। इस महत्व मोहम्मद गौरी के आक्रमण के बाद मुसलमानों का राज्य प्रारम्भ होने से शुरू हो जाता है। मोहम्मद गौरी के दिल्ली पर आक्रमण करने से पूर्व इस क्षेत्र में सय्यद सालार मसूद गाजी का आक्रमण हुआ था।

सय्यद सालार मसूद गाजी का आक्रमण सन् 1028

महमूद गजनवी के आक्रमणों के पश्चात उसके भांजे सय्यद सालार मसूद गाजी ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया था। वह अमरोहा होता हुआ ही गया था। शाहबाजपुर के स्थान पर यहॉ के मूल शासकों से उसका युद्व हुआ था जिसमें विजय सय्यद सालार मसूद गाजी को प्राप्त हुई। इस विजय के उपलक्ष में अब तक सम्भल तथा साथ–साथ अमरोहे में भी नाजे का मेला लगता है।

पृथ्वीराज की बहन महारी अम्बा की जागीर अमरोहा

महमूद अहमद अब्बासी ने अपनी पुस्तक 'तारीखे अमरोहा' में पृष्ठ 4 पर गजेटियर डिस्ट्रिक्ट मुरादाबाद पृष्ठ 142 के हवाले से बयान किया है कि दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज के शासन काल में अमरोहा में एक किला, महलात, मन्दिर तथा चहार

दीवारी का निर्माण कराया गया था। कहॉ जाता है कि उस समय अमरोहा पृथ्वीराज की बहन रानी अम्बा की जागीर में था।

सूरजध्वजी राजा कृपानाथ का अधिकार

रानी अम्बा के पश्चात अमरोहा पर सूरजध्वजी कायस्थों का अधिकार हो गया। इनमें राजा कृपा नाथ एक प्रसिद्व राजा हुए है। अमरोहा से 5 कि0मी0 की दूरी पर अमरोहा नूरपुर रोड पर स्थित वायं का कुऑ इन्ही राजा का बनवाया हुआ बताया जाता है। मौहल्ला चौक तथा मोहल्ला कुरेशी में कई कुएं कंकर पत्थर के बने हुए थे। वह भी राजा के बनवाये हुए बताए जाते थे।

त्यागी सरदारों का आधिपत्य

कायस्थ राजाओं के पश्चात इस क्षेत्र पर कुछ समय त्यागी सरदारों का भी अधिकार रहा । इनमें राजा 'करन' तथा राजा 'सासा चन्दन' के नाम मुख्य रूप से उल्लेखनीय है। यह अत्यन्त ही नामबर हाकिम थे परन्तु 'वरन' के डोर राजपूत राजा हरदत्त के अधीन थे।

दिल्ली के सुल्तानों का राज्य

पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद दिल्ली पर मोहम्मद गौरी का अधिकार हो गया। वहॉ से उसने इस क्षेत्र पर भी अधिकार स्थापित किया। उसके सेनापति कुतुबउददीन एबक ने आक्रमण करके अमरोहा को अपनी आधीनता में किया। इस समय अमरोहा एक खूबसूरत शहर था। अमरोहा के साथ साथ सम्भल एवं बदायूं पर भी तुर्को का अधिकार स्थापित हुआ जिसने सबको एक ही हाकिम की अधीनता में रखा जो कि बदायूं में रहता था। इस समय इस क्षेत्र में त्यागी, आहिर, बढगूजर आदि जातियों शक्तिशाली थीं।

कठेर पर दिल्ली सुल्तानों के आक्रमण

इस समय इस क्षेत्र में तथा मुरादाबाद, बरेली, शाहजहॉपुर एवं बदायूं के इलाके में कठेरिया राजपूत शक्तिशाली थे। वह दिल्ली के सुल्तानों की आधीनता स्वीकार नहीं

करना चाहते थें उनको दबाने के लिए दिल्ली के सुल्तानों ने स्वयम् इस क्षेत्र पर, जो कठेर कहलाता था, आक्रमण किए। इसमें सबसे पहला आक्रमण नासिरउद्दीन महमूद का हुआ। इसके पश्चात यहॉ के विद्रोहियों को दबाने के लिए सुल्तान बलबन अमरोहा तथा सम्भल होता हुआ कठेर आया। तेरहवी शताब्दी के अन्तिम वर्षो में जलालउद्दीन खिलजी ने इस क्षेत्र में आक्रमण किया।

बलबन तथा कैकबाद के समय में विभिन्न हाकिम

दिल्ली सुल्तान बलबन ने मालिक अमीर उर्फ हातिम खां को यहॉ का हाकिम बनाया। यद्यपि अमरोहा बदायूं सूबे का तथा बाद में सम्भल सूबे का अंग रहा लेकिन यहॉ के इन्तजाम के लिए दिल्ली के सुल्तानों का एक नुमाइन्दा 'हाकिम' यहॉ रहता था। सुल्तान कैकबाद के समय मलिक एजउद्दीन गौरी, मलिक अम्बर सुल्तानी यहॉ के हाकिम रहे। अमरोहा की जामा मस्जिद जो सद्दू की मस्जिद भी कहलाती है इसी के समय में सन् 1287 ई0 में तामीर कराई गई थी। इसी के साथ मदरसा मोअज्जिया भी कायम किया गया था।

मलिक छज्जू से अमरोहा में युद्व 1291 ई0

मलिक छज्जू सुल्तान बलबन का भतीजा था उसने बगाबत कर दी। अमीर अली हातिम खां इस समय अमरोहा का जागीरदार था वह अमरोहा आया। यहॉ अर्कली खां की फौज से मलिक छज्जू का मुकाबला हुआ जिसमें बह हार गया। पकड़ कर दिल्ली ले जाया गया। वहॉ सुल्तान ने उसका कुसुर माफ कर दिया तथा उसको मुल्तान का सूबेदार बना दिया गया। इस क्षेत्र में लगभग शान्ति स्थापित हो गई ।

अलाउद्दीन खिलजी के समय मुगल आक्रमण 1305 ई0

इतिहासकार जिया बर्नी ने वर्णन करते हुए लिखा है कि कठेर के मुल्क में कठोरता से शासन किया गया। यहॉ पर गल्ला और अन्य रोजगार सरकारी नियन्त्रण में कर दिए गए। 1305 ई0 में मुगलों के नेता अली बेग ने भारत पर आक्रमण किया तथा वह अमरोहे तक आ गया। सुल्तान अलाउद्दीन ने मलिक काफूर को उसके मुकाबले के लिए भेजा। राम गंगा के किनारे युद्व हुआ। मुगल सरदार हार गए तथा पकड़े गए। उनको दिल्ली ले गया जहॉ उनको मार दिया गया। इस युद्व में शाही लश्कर को बहुत माल हाथ लगा।

अलाउद्दीन खिलजी के समय अमरोहा में शाही छावनी बनाई गई। जहीरउद्दीन जफर खां जोकि बहुत दिलेर योद्वा था यहॉ का नाजिम बनाया गया।

शाहजादा खिज खां अमरोहा में

सुल्तान अलाउद्दीन ने नाराज होकर शहजादा खिज्र खां को अमरोहा भेज दिया। वह यहॉ कुछ दिन रहा। बिजनौर का क्षेत्र इस समय जंगल अधिक था यहॉ उसने शिकार गाह बना कर अपना दिल बहलाया। थोड़े दिन बाद जब सुल्तान ठीक हो गया तब खिज्र खां पैदल दिल्ली गया और निजामुद्दीन औलिया की जियारत की। लेकिन खिज्र खां अपने पिता से सम्बन्ध अच्छे नहीं बना सका । वह पकड़ लिया गया तथा कैद करके ग्वालियर भेज दिया। बाद में उसे मार दिया गया। सन 1317 ई0 में मुबारकशाह खिलजी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। सन 1321 में खुसरों खॉ ने बादशाह को मार दिया। लेकिन गाजी मलिक ने उसे भी मार दिया तथा वह गयासउद्दीन तुगलक के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा ।

हजरत शाह विलायत का शुभ आगमन

सय्यद उल आरफीन सय्यद शर्फुद्दीन शाह विलायत गयासउद्दीन तुगलक के समय में मुल्तान से अमरोहा आए थे। वह बहुत प्रसिद्व बुजुर्ग हुए है। उनकी दरगाह का निर्माण 783 हिजरी सन 1381 में हुआ था।

कठेरिया राजपूतों के विद्रोह एवं दमन

कठेरिया राजपूत दिल्ली के सुल्तानों के विरूद्व विद्रोह करते रहते थे। लेकिन उनके सभी विद्रोह कठोरता से दबा दिए गए। अमरोहा में शाही सेना व लश्कर रहता था। कठेरियों को दबाने के लिए यहॉ से सेनाए भेजी जाती थीं। अवध में जब बगावत हुई थी तब अमरोहा से ही उसे दबाने के लिए फौज गई थी।

इब्नेबतूता की यात्राा

दिल्ली सुल्ताना गयासउद्दीन तुगलक के समय से ही प्रसिद्व यात्री इब्नेबतूता भारत आया था। वह अमरोहा भी आया। सन 1363 में यहॉ पर पहुंचने पर शहर काजी सय्यद

अमीर अली तथा खानकाह के शेख ने इब्नेबतूता की अगवानी की । वह कुछ दिनों (लगभग दो माह) तक यहॉ रहा उसने इसको एक छोटा खूबसूरत शहर बयान किया है।

विभिन्न हाकिम

इस समय गरीज खम्मार यहॉ का हाकिम था। उसका भाई अजीज खम्मार भी यहॉ पर रहा। बाद में अमीर शमशुद्वीन बदख्शानी यहॉ का हाकिम बनाया गया। इनके बाद मलिक महमूद बक शेर खां, मलिक बहरोज यहॉ के हाकिम रहे।

राय हर सिंह एवं दिल्ली सुल्तान में समझौता

दिल्ली सुल्तान फीरोज शाह की मृत्यु के बाद सल्तनत में अराजकता फैल गई। सन् 1398 में तैमूर लंग ने दिल्ली पर आक्रमण किया तथा खूब लूटा। इससे दिल्ली की हुकूमत कमजोर पड़ गई। अमरोहा के हाकिम आजाद हो गए। कठेर में भी कठेरिया राजपूतो ने शक्ति बढ़ा ली। राय हर सिंह देव ने अधिकतर भाग पर अपना अधिकार कर लिया जिसे दिल्ली के सुल्तान दबा नहीं सके। सुल्तान स्वयं यहॉ आया।

कठेर से वापिसी पर उसका देहान्त हो गया। सन् 1418 में ताजुलमुल्क सानी सरदार ने तथा दूसरे वर्ष 1419 के आरम्भ में खिज खां बादशाह ने यहॉ फौज कशी की। सम्भल तथा अमरोहा के जंगल साफ कराये। सुल्तान मुइजउद्दीन मुबारक शाह खुद कठेर में आया। राय हरसिं देव व सुल्तान में समझौता हो गया। इसके बाद विद्रोहियों ने सर नहीं उठाया।

विभिन्न जागीरदार

आठवी सदी हिजरी में बहुत बद–अमनी रही। सय्यद सालिम नामी अमीर की यहॉ जागीरदारी रही। इतिहासकार फरिश्ता ने वर्णन किया है कि यह भटिण्डा का सूबेदार था। उसके बाद उसके दोनों बेटे–सईद खां तथा शुजाउलमुल्क यहॉ के जागीरदार रहे। उनके पश्चात मुबारक शाह के बाद मालिम यूसुफ सरवरउलमुल्क यहॉ के हाकिम बने। थोड़े दिनों बाद मलिक चमन गाजी की जागीरदार बन गया फिर दरिया खां लोदी यहॉ का हाकिम हो गया।

सुल्तान अलाउद्दीन आलम शाह तथा लोदी वंश काल

दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन शाह इसी जमाने में देहली से बदायूँ अमरोहा होकर गया था। उसको यहॉ की आवोहवा अच्छी लगी तब वह दिल्ली को छोड़कर बदायूँ में रहने लगा जिससे अमरोहा की खास हैसियत हो गई। थोड़े दिनों बाद सुल्तान राज सिंहासन से विरक्त होकर बदायूँ में ही रहने लगा। सन् 1478 तक इस क्षेत्र में सुल्तान अमरोहा तक हुकूमत करता रहा। इसके बाद लोदी वंश की सत्ता आ गई। लोदी वंश के काल में अमरोहा में शान्ति रही। यहॉ के बारे में अधिक प्रापत नही है।

अमरोहा तथा सम्भल, ज्ञान तथा विद्वता के केन्द्र

सिकन्दर लोदी 4–5 वर्ष सम्भल में रहा। उसने सम्भल को भारत की राजधानी बनाया। इन वर्षो में सम्भल एवं अमरोहा दोनों ज्ञान एवं साहित्य के क्षेत्र बन गए थे। सूफी–सन्त विद्वान यहॉ बस गए। सिकन्दर लोदी को धार्मिक चर्चाओं का बहुत शौक था। इस समय विभिन्न दुर्लभ ग्रन्थ लिखे गए तथा अमरोहा इस समय ज्ञान का प्रमुख केन्द्र था।

मुगल काल– 1526–1742 ई0

सन 1526 ई0 में मुगल साम्राज्य स्थापित होने पर अमरोहा का क्षेत्र शेख जादा मोहम्मद मूसा उफ्र काला पहाड़ एक नामवर अमीर को जागीर में दे दिया। शेर शाह के काल में यह क्षेत्र ईसा खां कालकापुरी की हुकूमत में था। उसने यहॉ के जंगलों को साफ कराया। यहॉ जो विद्रोह हुए उनको दबाया। ईसा खां के आधीन सम्भल भी था। इसके बाद हैबत खां को सम्भल भेज दिया। पुनः हुमायुं एवं अकबर के प्रारम्भिक काल में ख्वाजा कुतुबउद्दीन कन्नाफ खां हाकिम अमरोहा था। इसके समय की यहॉ पर कई यादगारें है। जामा मस्जिद कैकवादी बडा मदरसा फिर से स्थापित किया गया। फिर सय्यद मीर अदल अमरोहवी ने 1573 में इसे दुबारा बनवाया। 1568 में मीर मोहम्मद खां खान कलां यहॉ के हाकिम रहे। 1594 में मिर्जा मुजफ्फर हुसैन सफवी को यह जागीर दी गई। इनको पंच हजारी मनसव दिया तथा सम्भल का हाकिम बना दिया। 1605 में मिर्जा अली यहॉ के जागीरदार बना दिए गए। चार हजारी मनसव देकर सम्भल का हाकिम जागीरदार बना दिया गया। अकबर तथा जहॉगीर के काल में अमरोहे में शान्ति एवं समृद्वि रही।

शाहजहॉ के समय यहॉ का क्षेत्र मुरादाबाद के अधीन हो गया। इनके काल में मुरादाबाद की स्थापना की स्थापना हुई तथा मुरादाबाद को सूवा बना दिया गया। यहॉ के सूबेदारों में मोहम्मद कासिम खां, राजा मकरन्द राय, अमीनुद्दीन, मौहम्मद मुराद कशमीरी, रूकुनदौला एतमाद खां मुरादाबाद के प्रमुख सूबेदार रहे। रूकनुदौला ने मुरादाबाद का नाम रूकनाबाद रख लेकिन वह चल नहीं सका सन 1719 में वह यहॉ से हटा दिए गए। इसके बाद सैफुद्दीन यहॉ के सूबेदार बने। फिर यह कमयद्दीन खां की जागीर में रहा और उनकी तरफ से शेख अजमतउल्ला खं यहॉ के नाजिम रहे। इस समस्त काल में अमरोहा मुरादाबाद सूबे का अंग रहा।

रूहेला काल सन् 1742 से 1774 तक

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य बहुत कमजोर हो गया। जगह जगह क्षेत्रीय राजा एवं नवाब शक्तिशाली हो गए और नई–नई शक्तियां उभर कर अपना वर्चस्व बनाने लगी। इसी समय इस कठेर के क्षेत्र में रूहेलों की शक्ति बहुत बढ गई। नवाब अली मौहम्मद खां ने मुरादाबाद के फौजदार राजा हरनन्द को हराक रियासत रूहेलखण्ड स्थापित की और सारे क्षेत्र के नवाब बन गए तथा सम्भल, मुरादाबाद एवं अमरोहा पर भी अधिकार कर लिया। सन् 1746 ई0 से 1748 ई0 तक यहॉ उनका अधिकार नहीं रहा । क्योकि दिल्ली के बादशाह ने आक्रमण किया तथा उनको दिल्ली ले गया जहॉ से नवाब अली मौहम्मद खां को सरहिन्द का सूबेदा बनाकर भेज दिया। लेकिन सन् 1748 ई0 में नवाब अली मोहम्मद खां को पुनः रूहेलखण्ड का सूबेदार बना दिया जहॉ उन्होने पूरे तरीके से दोवारा अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इस दो वर्षो में मुरादाबाद के सूबेदा शेख फरीदउद्दीन तथा राजा चर्तुभुज रहे। सन 1752 तक अमरोहा सीधा रूहेले नवाब के अधिकार में रहा। इस वर्ष रियासत रूहेलखण्ड का बंटवारा रूहेला सरदारों में आपस में हो गया। सम्भल, मुरादाबाद तथा अमरोहा दून्दे खां के अधिकार में आया। उनका यहॉ सन 1774 तक अधिकार रहा । इस बीच की अमरोहा की व्यवस्था के बारे में कोई अधिक जानकारी प्राप्त नही है। सन् 1760 ई0 में इलाहाबाद जाते हुए दिल्ली का बदाशाह शाह आलम अमरोहा से गुजरा।

अवध की हुकुमत (1774–1801)

अवध में नवाब शुजाउद्दौला एवं अग्रेजों ने सन् 1774 में रूहेलखण्ड पर आक्रमण

किया जिसमें रूहेले सरदार हार गए तथा इस क्षेत्र पर नवाब अवध का अधिकार हो गया जो कि सन् 1801 तक रहा। इस क्षेत्र में शान्ति नहीं रही। सन् 1785 में रहते थे। यहॉ के कुछ सय्यदों से उनकी अनबन हो गई जिसके बदले में नत्थे खां यहॉ फौज लेकर चढ़ आए।

सन् 1857 की क्रान्ति

मेरठ में क्रान्ति प्रारम्भ होने की सूचना 12 मई को इस क्षेत्र में आ गई। 15 मई को गूजरों ने मेरठ का रास्ता रोक लिया। इस समय अमरोहा के कोतावल सय्यद अफजल अली थे। क्रान्ति में सम्मिलित होने के विषय पर अमरोहे के कई खानदान दरगाह शाह विलायत में एकत्रित हुए। बातचीत एवं चर्चा हुई लेकिन कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता। इस समय सय्यद अकबर अली के बेटे जो, दरबार कलॉ के रहने वाले थे मुरादाबाद में मुख्तार थे। मुरादाबाद में 19 मई को जेलखाना टूट गया। तब कैदियों की जमात के साथ रातों रात अमरोहा आए। यहॉ के सब लोग पहले से ही विद्रोही भावनाओं से परिपूर्ण थे। वह और यहॉ के सब लोग मिल गए। 20 मई सन् 1857 को थाने पर हमला किया गया। मीर मदद अली थानेदार तथा शहामत खां सिपाही को जान से मार दिया गया। वहॉ से फायरिंग करते हुए तहसील पर चढ़ आए। 17000.00 रूपये खजाने से लूट लिया तथा दफ्तर को जला दिया।

अंग्रेज कलेक्टर की तरफ से हसन खां को यहॉ का हाकिम बनाकर भेजा लेकिन उनके आने से पहले ही यहॉ विद्रोह प्रारम्भ हो चुका था। 25 मई को मि0 विल्सन अमरोहा आए। उनकी मौजूदगी में विद्रोहियों पर आक्रमण किया। गुलजार ली के मकानात बीरान कर दिए गए। अमरोहा पर अंग्रेजो ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया तथा यहॉ का नाजिम गुरूसहाय को बना दिया। लेकिन यह कब्जा वहुत दिन तक नहीं रह सका। जब मुरादाबाद पर विद्रोहियों ने अधिकार कर लिया और मुरादाबाद के अंग्रेज अफसर नैनीताल तथा मेरठ चले गए तब अमरोहा के हाकिम गुरूसहाय भी अमरोहा से गजरौला चले गए। 19 मई 1857 से सितम्बर 1857 के बीच दिल्ली के बादशाह के प्रति अमरोहा के लोगो ने बफादारी जाहिर की। उनके प्रति बफादारी दर्शाने के लिए यहॉ की जनता की ओर से विभिन्न लोगों की चिट्ठियां एवं अरजियां दिल्ली भेजी जिनके बदले में वहॉ से जवाब भी आए।

अमरोहा पर विद्रोही क्रान्तिकारियों का अप्रैल सन 1858 तक अधिकार रहा। अप्रैल 1858 में अग्रेजी फौज ने बरेली, मुरादाबाद पर अधिकार कर लिया मि0आर0

एलेक्जेण्डर शैक्सपियर कमिश्नर बरेली, मुरादाबाद आए। अंग्रेजी हुकूमत पुनः स्थापित हुई। 2 मई 1858 को जिले का चार्ज पूर्व डिप्टी कलेक्टर विलायत हुसैन खां को दिया। शीघ्र ही अंग्रेजों के वफदार एवं वागियों की सूची बनाई गई। वफादारों को जमीदारियां एवं औहदे तथा इनाम आदि दिए गए। बागियों की जायदाद जब्त कर ली गई। उनको पकड कर फांसी प चढा दिया गया। अमरोहे के कई पुराने खानदान बर्वाद हो गए। सय्यद शब्बीर अली खां, शेख मोहम्मद अफजल सिद्दीकी, दरवेश अली खां तथा इनके अलावा और खान दानों की मिल्कियत तथा जायदादें छीन ली। राजा गुरूसहाय तथा मुन्शी इनामउददीन आदि विभिन्न लोगों को ओहदे एवं जायदाद व इनामत दिए। अंग्रेजों हुकूमत पूरी तरह काबिज हो गई जो सन् 1947 तक रही।

स्वतन्त्रता आन्दोलन

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में देश में आजादी के लिए आन्दोलन प्रारम्भ हो गए। उसके पश्चात सभी आंदोलनों में अमरोहा के वीर सपूतों ने भी खूब बढ चढकर भाग लिया तथा देश को आजाद कराया। सन् 1932, 1936, 1941 तथा 1942 के आंदोलनों में जिन महानुभावों ने बढचढ कर भाग लिया तथा कारागार की सजाएं पायी उनमें वीर सवतंत्रता सेनानी सर्व श्री रत्न रस्तौगी एवं रामेश्वर लाल खण्डेलवाला, सर्व श्री छिददा खां, मौहम्मद मोसीन, मौलाना 'माजिद' शहमत उल्ला, इनाम उल हक तथा राम कुमार वैद्य आदि के नाम उल्लेखनीय है। स्वतंत्रता की लहर के साथ–साथ अमरोहा की यह विशेषता रही है कि यहॉ सदैव साम्प्रदायिक सौहार्द रहा। पाकिस्तान की मांग पर जब जमात–ए–उलेमा अधिवेशन अमरोहा नगर में बुलाया गया तब इस नगर का गौरव था कि निर्णय उसकी परम्पराओं के अनुकूल साम्प्रदायिक आधार पर भारत को बांटने के विरूद्व किया गया। दुर्भाग्यवश पाकिस्तान बनकर ही रहा पर अमरोहा का जन जीवन सामान्य रहा।

सूफी संत एवं महात्मा

अमरोहा प्रसिद्व सूफी संत एवं महात्माओं की तपो भूमि रहा है। बडे सूफी संतो ने दूर–दूर से आकर यहॉ निवास किया। लोगों को परस्पर प्रेम एवं भाइचारे का संदेश देते हुए उन्होने सच्चाई का मार्ग दिखाया। जिनमें बाबा फरीदी, शाह एजउद्दीन सहरवर्दी, हजरत शरफुददीन शाह विलायत, हजरत अशरफ जहॉगी, सय्यद मोहम्मद अब्दाल दूधारी, सय्यद अशरफ दानिश्मंच, शाह नसीरउद्दीन, शाह

इब्बन बदरे चिश्ती, शाह अब्दुल हादी, शाह मो0, अजउददीन (जो मियां मौज के नाम से मशहूर है), संत बाबा गंगानाथ, संत अभिलाष दास(हुलास दास), संत ब्रहा वक्र दास, संत बाबा सीताराम आदि प्रमुख है। अमरोहा जहॉ प्रसिद्व वासदेव तीर्थ तथा वहॉ लगने वाले मीरा की जात के लिए विख्यात है, वही हजरत शाह विलायत, जहॉ बिच्छू डंक नही मारता है के लिए भी दूर–दूर तक मशहूर है।

शाही दरबार से सम्बंधित व्यक्तित्व

अनेक ऐसी प्रतिभाएं अमरोहा में हुई है जिनकी शाही दरबार से विशेष सम्बन्ध रहा तथा उनकी विशिष्ट स्थान प्राप्त था। सय्यद मोहम्मद मीर अदल शाही मंसबदार थे जो सम्राट अकबर के दरबार में काजी उल कज्जात के अहम् ओहदे पर तैनात थे। उस समय यह पद आज के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीष के समकक्ष माना जाता था। बाद में इन्हें रियासत भक्कर(वर्तमान में सिन्ध पाकिस्तान) का गर्वनर बना दिया गया था। इनकी मृत्यु के बाद इनके बड़े बेटे सय्यद अबुल फजल भी इस रियासत के गर्वनर रहे। इनके अतिरिक्त शाही मनसबदारों में सय्यद मुबारक दीवान सय्यद महमूद, सय्यद गुलाम अली (जिनके नाम पर मोहल्ला कटरा गुलाम अली आबाद है) मीर असद उल्ला खां आदि के नाम उल्लेखनीय है।

काजियों में काजी जहीर उर्फ काजी खुदा दिए सोना बरस और उनके पोते काजी सय्यद अल्ला दिए सिंकदर लोदी व अकबर के समय में प्रख्यात व्यक्तित्व हुए। अकबर के अंतिम समय में सय्यद मोहम्मद अशरफ दानिशमंद अमरोहा आए थे। सुल्तान गयासुद्दीन बलबन के काल में एक और महत्वपूर्ण शख्सियत अमरोहा में हुई जिनका नाम था, ख्वाजा खतीर, जो बलवन के मुख्य परामर्श दाता व मंत्री थे।

अमरोहा में कायस्थ परिवार के लोग भी अकबर के समय में अमरोहा में आकर बसे। इस परिवार में बडे–बडे नामी गिरामी लोग हुए। जो मुगल सम्राअ शाहजहॉ तथा औरंगजेब के शासनकाल में (मंत्री, वजीर) के महत्वपूर्ण ओहदों पर तैनात थे।

ज्ञान एवं साहित्य

एक जमाने से अमरोहा ज्ञान व साहित्य (इल्मोअदब) विशेषकर उर्दू साहित्य का एक बहुत बडा केन्द्र रहा है। उर्दू अदब की एक से बढकर एक प्रतिभाएं यहॉ उत्पन्न हुई है जिन्होनें देश व विदेश में अमरोहा का नाम रोशन किया है। मीर सआदत अली मुसहफी अमरोहवी, स्माईल अमरोहवी व गिरधारी लाल तर्ज जैसे मशहूर व मारूफ

शायर यहॉ हुए जिनके तलकरे के बगैर उर्दू अदब पर बात करना बेमानी ही कहा जाएगा। जिसके प्रमाण में मैहशर लखनवी का यह शेर काफी माने रखता है।

अमरोहा दर हकीकत एवाने शाइरी है।

मूलद है मुशहफी का मैहशर जरा सम्हल के।।

गजल के बादशाह समझे जाने वाले मशहूर उस्ताद शायर मीर तकी मीर के उस्ताद मीर सआदत ली अमरोहवी थे जिसका जिक्र स्वंय मीर तकी मीर ने अपनी फारसी की पुस्तक जिक्रे मीर में किया है।

फिल्म जगत में अमरोहा की हस्तियां

अमरोहा की विभूतियों में सर्वप्रथम नाम कमाल अमरोही का आता है जिन्होंने बतौर निर्माता, निर्देशक एवं लेखक के रूप में एक अमिट पहचान बनाई है। फिल्म दायरा, पाकीजा, महल, रजिया सुल्तान आदि उनकी यादगार फिल्में है जो फिल्म दायरा, पकीजा, महल, रजिया सुल्तान आदि उनकी यादगार फिल्में है जो फिल्म इण्डस्ट्री में हमेशा उनकी याद दिलाती रहेंगी। फिल्मी दुनिया में कमाल अमरोही से पूर्व एक निर्देशक के रूप में सय्यद नजमुल हसन, जो फिल्म इन्डस्ट्रीज में नजम नकबी के नाम से मशहूर थे, उन्होने अच्छी शोहरत पायी। उनके निर्देशन में बाम्बे टाकीज बैनर तले बनी कंगन, बंधन, पुनर्मिलन आदि उनकी यादगार फिल्में थी। आर्ट डायरेक्टर के रूप में मंजूर नकबी अमरोहवी आपनी पहचान बनाने में सफल रहे। वर्तमान समय में भी फिल्म निर्माण, अभिनय तथा गीत लेखन आदि में अमरोहा के नौजवान फिल्म इन्डस्ट्रीज तथा दूरदर्शन में अपने आप को अच्छी तरह स्थापित कर चुके है।

गवर्नर

सर जमीन अमरोहा को नाज है कि इण्डियन सिविल सर्विस (I.C.S) के दो उच्चाधिकारी मान्य भगवान सहाय व विष्णु सहाय को यहॉ जन्म दिया, जिन्होने विभिन्न उच्च पदों पर रहते हुए गवर्नर (राज्यपाल) के अति महत्वपूर्ण पद को सुशोभित किया। सम्भवतः भारत के इतिहास में यह पहली मिसाल है जो दो सगे भाई आई0सी0एस0 हुए। आई0सी0एस0 ब्रिटिश काल में सर्वोच्च पद था जिसका चयन ब्रिटेन में किया जाता था। योग्यतम व्यक्ति ही उसमें आ पाते थे जबकि भारतवासियों के लिए उसमें चयनित होना अत्यन्त दुष्कर था। अमरोहा को अपने इस सपूतों पर गर्व है।

ऐतिहासिक महत्व के स्थान

जनपद जे0पी0 नगर में अमरोहा के अतिरिक्त कुछ अन्य स्थान भी है जिनका महत्वपूर्ण स्थान है। उनमें निम्न उल्लेखनीय है।

बछरांव

इस बारे में कहा जाता है कि दिल्ली सम्राट पृथ्वीराज चौहान के समय से यह बसा था। इसको बच्छराज (त्यागी) ने बसाया था। लेकिन यह शीघ्र ही मुसलमानों के राज्य के बाद उनके अधिकार में पहुंच गया। इस कस्बे में मुउइज्जुददीन कैकूवाद के समय में सन् 1288 में एक मस्जिद का निर्माण हुआ था।

आजमपुर

यह भी हसनपुर तहसील में है। मुगल सम्राट अकबर के समय में यह स्थान दिल्ली साम्राज्य के विरूद्व मिर्जाओं के विद्रोह का प्रमुख केन्द्र रहा था।

हसनपुर

कहा जाता है कि हसन खां के नाम पर हसनपुर स्थापित हुआ था। इसका भी पुराना महत्व है।

धनौरा

इस नगर को अवध शासनकाल में सम्भल के डिप्टी गर्वनगर नत्थे खां ने 1783 में बसाया था। आरम्भ से ही व्यापारिक मण्डी रहा हे। आज भी स्थानीय उत्पादों की प्रमुख मण्डी एवं जिलें का प्रमुख नगर एवं तहसील मुख्यालय है।

हस्त शिल्प

अमरोहा की प्रसिद्वि यहॉ की कई शिल्प कलाओं के कारण है। यहॉ लकडी से बनाई जाने वाली विभिन्न वस्तुओं में ढोलक, छडी, चकला–बेलन एवं बैठने की पीढ़िया अपनी सुन्दरता एवं मजबूती में मशहूर है। कामदार टोपियां, खिलौने, लकडी तथा मिट्टी के बर्तन, कालीन तथा बुगचे का पंलग बनाना यहॉ के शिल्प में अपना विशिष्ट स्थान रखते है जिसमें यहॉ के हजारों परिवार अपनी जीविका उपार्जन में लगे है। हसनपुर में मंजू के बान, देशी कपडा व सरकण्डों के मूढे बनते है। गंगा के खादर का यह घरेलू उद्योग धंधा है।

उत्सव एवं मेले

जनपद जे.पी. नगर में अमरोहा, गजरौला, धनौरा, हसनपुर आदि स्थानों पर रक्षाबन्धन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा फूलडोल (रामडोल) पर स्थान स्थान पर मेले लगते हैं। जो छड़ियां एवं फूल डोल आदि नामों से भी जाने जाते हैं। कार्तिक स्नान पर देश प्रसिद्ध तिगरी का मेला गंगा किनारे लगता है। दशहरा, दीपावली, शिवरात्रि, होली, रामनवमी आदि पर्वों पर विशेष उत्सव मनाएं जाते हैं। उझारी, रजबपुर अमरोहा आदि स्थानों पर उर्स के मेले लगते हैं। पूरे जनपद में अनेक स्थानों पर मोहर्रम मनाए जाते हैं। धनौरा आदि स्थानों पर देवी की जात लगती है।

इमारतें एवं दरवाजे

मध्यकाल में मुसलमानों की हुकूमत स्थापित होने के बाद से अमरोहा में विभिन्न मस्जिदें बनीं जो कि अब भी अच्छी हालत में मौजूद हैं। उनके अतिरिक्त अन्य इमारतों में मजार मकबरे, दरगाह, रौजे प्रमुख रूप से बने हुए हैं। यहां ईदगाह से लेकर दरगाह विलायत शाह तक कब्रिस्तान बना है। शाहजहां काल के दो दरवाजे जो बड़ा दरबार मोहल्ले में बने हुए हैं–छंगा दरवाजा तथा मुरादाबाद दरवाजा कहलाते हैं। मुरादाबाद दरबाजा सय्यद अब्दुल माजिद उर्फ दीवान सय्यद मोहम्मद ने 1051 हिजरी सन् 1631 में बनवाया था । यह उनके किले का पूर्वी दरवाजा है। आम रास्ता मुरादाबाद को जाता है इसलिए मुरादाबाद दरवाजा प्रसिद्ध है। इसके अन्दर एक घंटा बना है जिसमें एक बाजार लगता है जो बड़ा बाजार कहलाता है। छंगा दरवाजा भी अब्दुल माजिद के किले का उत्तरी दरवाजा बताया जाता है। अब इस मोहल्ले का नाम छंगा दरवाजा मोहल्ला हो गया है।

पुरातात्विक अवशेष

अमरोहा में हिन्दू काल की कोई इमारत मौजूद नहीं है। लेकिन उस जमाने की इमारतों की ईटें यदाकदा प्राप्त होती रहती हैं। यहां पर प्राचीन काल में सुन्दर किले और मंदिर रहे होंगे। उनमें इन ईटों का प्रयोग होता होगा जो ईंटें यदा–कदा मिली हैं उन पर बहुत सुन्दर नक्कासी तथा चित्र बने हुए हैं। बायं का कुआं हिन्दू काल की यादगार बताई जाती है। यह शहर से बाहर उत्तर पश्चिम में दो मील के फासले पर बाउली हैं। यह सूरजध्वज खानदान के राजा कृपा नाथ के बाग में है। यह कंकड़ के पत्थर से बनी है सीढ़ियां पानी तक बनी हुई हैं। सन् 1904 में इसकी मरम्मत कराई गई थी यहां प्रत्येक वर्ष छड़ियों का मेला लगता है।

तालाब वासदेव भी अमरोहा के बहुत प्राचीन स्मारक हैं। यह वासदेव नामक साधु का बनवाया हुआ बताया जाता है। कुछ लोग ख्याली राम खत्री निवासी काला कुआं मोहल्ला के निवासी का बनवाया हुआ बताते हैं। यहां बाद में मंदिर था शिवालय बन गए हैं। इसके अतिरिक्त मुकन्द वाले बाग के पास पुराने कुएं बने हुए हैं जो हिन्दू काल की यादगार हैं। कुछ मस्जिदों में सदू मस्जिद पुरानी मौजूदा इमारतों में सबसे प्राचीन है। इसे जामा मस्जिद भी कहते हैं। इसका निर्माण कैकूबाद ने कराया था तथा अकबर के काल में इसका पुर्ननिर्माण कराया गया। मलिक सुलेमान की मस्जिद बादशाही चबूतरा मोहल्ले में है जिसका निर्माण 1066 हिजरी सन् 1656 में शाहजहां के काल में कराया गया था। मस्जिद के समीप ही चबूतरा ए शाही 1061 हिजरी सन् 1651 में बनवाया गया था । मस्जिद–ए–चिल्ला का निर्माण बादशाह जहांगीर के समय मे 1029 हिजरी सन् 1619 में कराया गया था। शेख शर्फुद्दीन शाह विलायत की दरगाह का निर्माण 783 हिजरी सन् 1381 ई. में सल्तनत कालीन बादशाह के समय में हुआ ।

संदर्भ :

1. मौलाना महमूद अहमद अब्बासी, तारीखे अमरोहा तथा जनपद स्मारिका प्रवेशांक 2001, प्रधान सम्पादक अशोक रुस्तगी से साभार संकलित ।
2. डॉ. पी. सी. जैन 'काल की गहराइयों में अमरोहा जनपद स्मारिका प्रवेशांक 2001, पृष्ठ 67 ।
3. भुवनेश कुमार शर्मा भुवन 'हमें नाज है जिन पर', स्मारिका प्रवेशांक 2001, पृष्ठ 36 ।
4. वही, पृष्ठ 36 ।
5. वही, पृष्ठ 37 ।
6. वही, पृष्ठ 40 ।
7. वही, पृष्ठ 41 ।

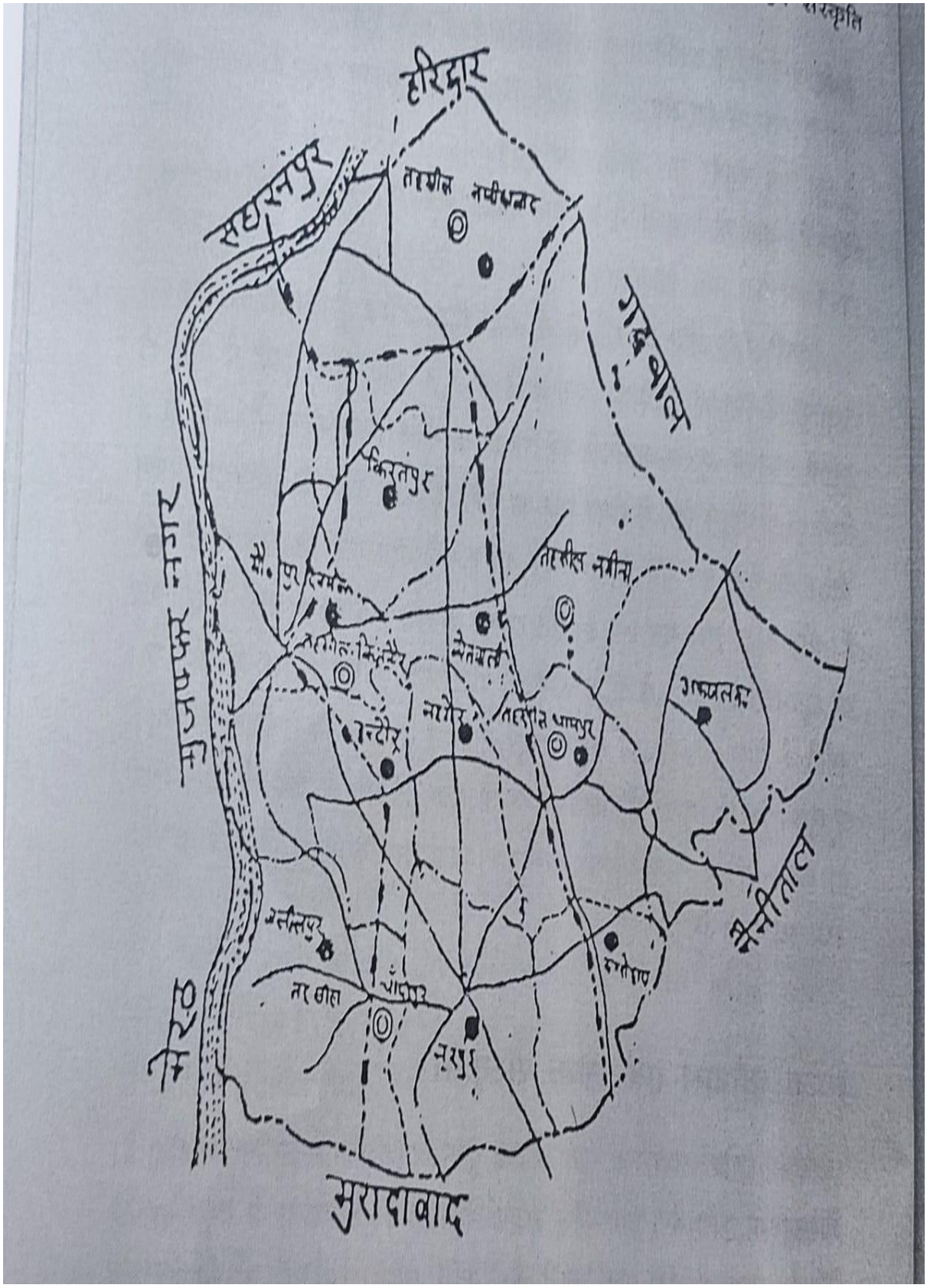

हरिद्वार
सहारनपुर
गढ़वाल
किरतपुर
मुजफ्फर नगर
नैनीताल
नूरपुर
मेरठ
मुरादाबाद

बायें का कुँआ, बिजनौर रोड, अमरोहा

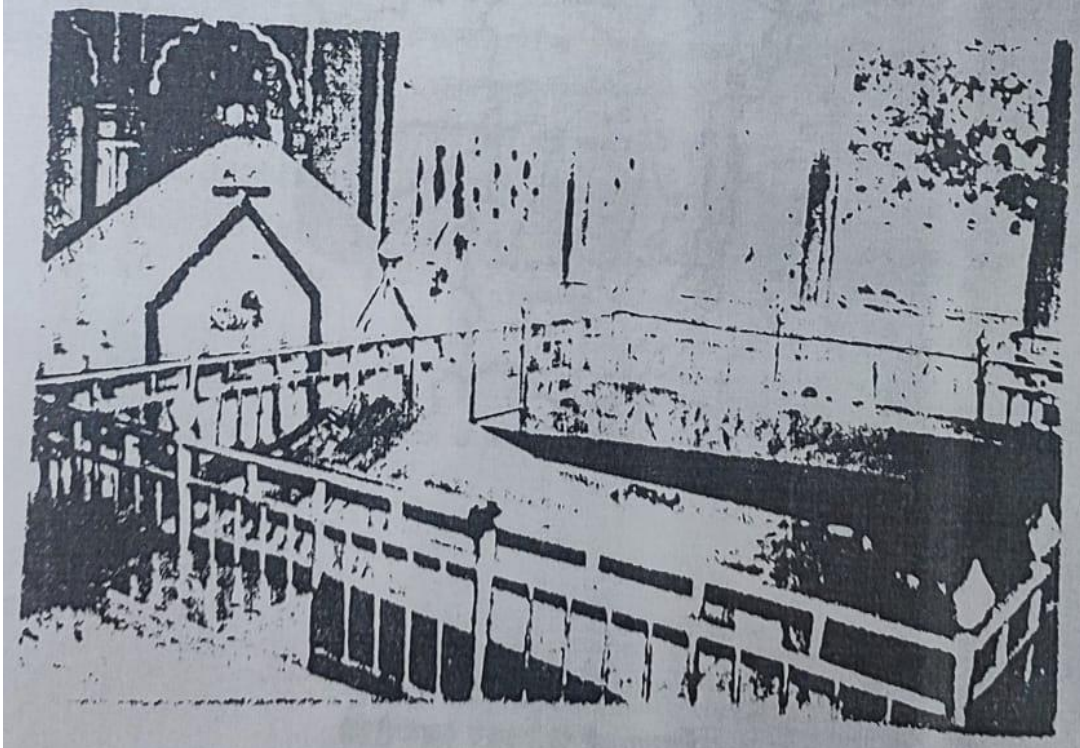

शाह विलायत शाह का मजार अमरोहा

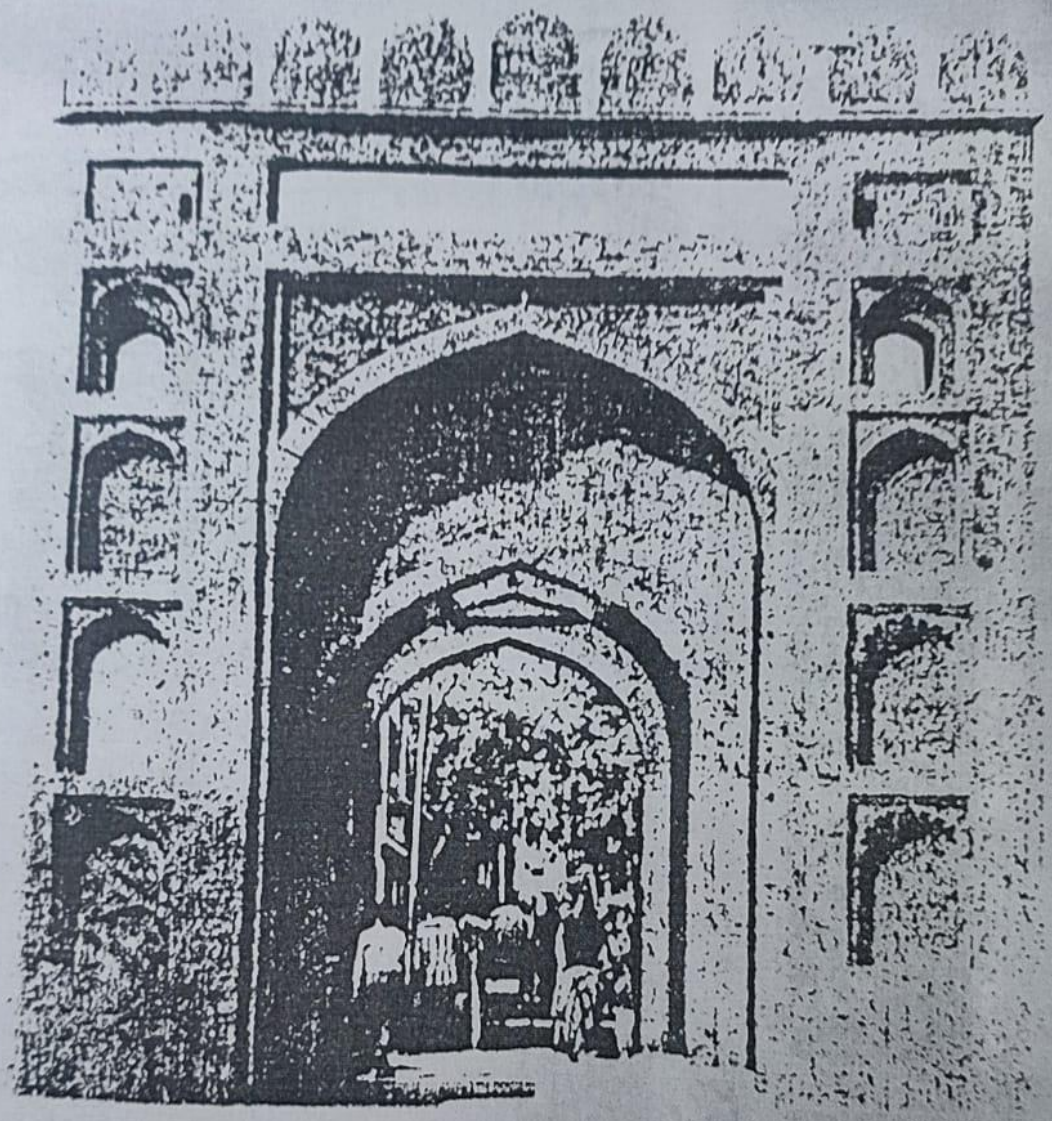

मुरादाबाद दरवाजा, अमरोहा, निर्माण–1631 ई.

मुरादाबाद
इतिहास (पुरातत्व) एवं संस्कृति

मुरादाबाद रुहेलखण्ड का एक भाग है। यह महानगर रामगंगा नदी के दाहिने पार्श्व मं बसा है। यहां सोत, रामगंगा, गांगन, आरा, ठेला, रझेड़ा एवं कोसी नदियां बहती हैं। सन् 1997 ई. तक जब कि ज्योतिबाफुले नगर जिला सृजित किया गया, अमरोहा, हसनपुर एवं धनौरा तहसील भी मुरादाबाद जिले के भाग थे। वर्तमान में चंदौसी, सम्भल, बिलारी, मुरादाबाद खास, ठाकुरद्वारा एवं कांठ इस जिले की तहसील तथा ठाकुरद्वारा, डिलारी, सम्भल, पवांसा, असमौली, मुरादाबाद, मूढ़ापाण्डे, भगतपुर टांडा व छजलैट विकास खण्ड हैं ।

स्थापना एवं नामकरण

विश्व विख्यात पीतल नगरी मुरादाबाद मध्यकाल में चौपाला नाम से जानी जाती थी। इस चौपाला के अर्न्तगत दीनदार पुरा, भदौरा, मानपुर–नारायनपुर एवं देहरी नामक चार गांव थे। इसमें कठघर का अधिकांश भाग भी सम्मिलित था। मुरादाबाद ने इस नाम से इसकी स्थापना सन् 1632 ई. में हुई थी। यहां के राजा राम सुख वर्ष कुमायूं को जीत लिया तब वहां के राजा ने दिल्ली के बादशाह शाहजहां से उसकी शिकायत की तब बादशाह ने सम्भल के सूबेदार रुस्तमखां दक्खिनी को आदेश भेजा कि वह राजा रामसुख को दबाए। रुस्तम खां ने बहुत शक्ति के साथ आक्रमण किया जिसमें राजा रामसुख मारा गया। रामसुख के अन्त के बाद उसने चौपाला पर अधिकार कर लिया तथा यहां एक किला निर्मित कराया एवं एक मस्जिद बनवाई। उस स्थान का नाम रुस्तमाबाद रख दिया। जब शाही दरबार को

नाम रखे जाने की जानकारी हुई तब उसको बुलाकर जवाब तलब किया गया। उसने तत्काल शाहजहां के बेटे राजकुमार मुराद के नाम पर इस स्थान का नाम मुरादाबाद रखे जाने की सूचना दी तब से मुरादाबाद नाम प्रचलित है।'

प्राचीन काल

इस जनपद का भू–भाग पंचाल देश (राज्य) का एक भाग रहा है जो हिमालय से चम्बल नदी तक फैला हुआ था। बाद में जब पंचाल दो भागों में विभक्त हुआ तब वर्तमान जनपद का क्षेत्र उत्तरी पंचाल में आ गया जहां की राजधानी अहिच्छत्र थी। प्राचीन ग्रन्थों तथा पुराणों में इस क्षेत्र की सांस्कृतिक उन्नति का वर्णन प्राप्त होता है। यह भाग कुरु राज्य एवं पंचाल राज्य की राजधानियों के मध्य स्थित था तथा यह क्षेत्र मध्यदेश के अन्तर्गत आर्य संस्कृति के एक प्रमुख केन्द्र ब्रह्मर्षि देश का भाग प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित किया गया है।

प्राचीन सभ्यता के समय में मुरादाबाद की रामगंगा नदी के दक्षिण–पश्चिम का क्षेत्र दीख क्षेत्र कहलाता था। बाल्मीकि रामायण में रामगंगा नदी को उत्तर गंगा कहा गया है। इतिहासकार वी.एच. वडेर ने रामायण कालीन स्थान परिचय में इस स्थान को अपर ताल माना है। प्रोफेसर नन्द लाल डे ने भी मुरादाबाद को अपरताल के अर्न्तगत प्रलम्ब प्रान्त से जुड़ा हुआ माना है।

वर्तमान मुरादाबाद जनपद के नगर, बहजोई, बिलारी, ठाकुरद्वारा तथा इनके निकटवर्ती क्षेत्रों में प्राचीन सभ्यता मुखरित थी। महाभारत काल में जरासंध नाम का योद्धा यहीं का था। पंचाल राज्य का यह भाग कुरु राज्य की सीमाओं से मिला हुआ क्षेत्र था। उसके बाद कालान्तर में जब नन्द वंश का उत्थान हुआ तथा मगध साम्राज्य की नींव पड़ी तब पंचाल राज्य जो उस समय जनपद एवं महाजनपद कहलाता था, मगध साम्राज्य की आधीनता में आ गया उसके साथ यह क्षेत्र भी उसका अंग बना तथा सम्राट अशोक तथा उनके पश्चात के काल में गुप्त साम्राज्य के काल तक यह उनके साम्राज्य का भाग रहा।

सर विलियम जोंस के अनुसार जरासन्ध के पुत्र सहदेव की परम्परा में पचपनवां राजा वासुदेव था । सन् 546 ई. में यह क्षेत्र उसी परम्परा के राजा. सुश्रमण के आधीन था।

गुप्त वंश के पतन के पश्चात सम्राट हर्षवर्धन का यहां राज्य रहा। कन्नौज इनकी राजधानी थी। हर्ष की मृत्यु के बाद राजपूतों का उत्थान हुआ तथा कन्नौज एवं इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में राजपूतों की प्रमुख सत्ता के काल में यह क्षेत्र कन्नौज के

राजपूतों के अधिकार में रहा तथा बाद में इस जनपद का क्षेत्र इन्द्रप्रस्थ की अधीनता में आ गया। यहां के चौहान वंश के राजा पृथ्वीराज द्वारा इस जिले के सम्भल एवं अमरोहा क्षेत्र में किले बनवाने का उल्लेख मिलता है।

मध्यकाल (1192–1632 ई.)

पृथ्वीराज चौहान की पराजय के पश्चात इस क्षेत्र पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। तब से लेकर मुगल साम्राज्य की स्थापना तक मुरादाबाद जनपद का भाग सम्भल सूबे का अंग रहा। इस समय में दिल्ली के सुल्तानों के राज्य का सम्भल एक महत्वपूर्ण सूबा था जहां से दिल्ली के शासन के अधीन यह क्षेत्र रहा। दिल्ली के सुल्तानों के काल में मुरादाबाद तथा उसके आसपास के जिलों में कठेरिया राजपूतों का उत्थान हुआ, जिनका इस समस्त क्षेत्र पर अधिकार रहा तथा उनके नाम के आधार पर यह क्षेत्र कठेर कहलाता था। उनका तथा दिल्ली सल्तनत का निरन्तर संघर्ष रहा। दिल्ली के सुल्तानों ने कठेर पर अनेक आक्रमण किए लेकिन कठेरिया राजपूत उनका मुकाबला करते रहे तथा अपना बर्चस्व उन्होंने बनाये रखा।

दिल्ली पर मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद कठेरिया राजपूतों एवं मुगल सेनाओं में प्रारम्भ में संघर्ष हुए लेकिन बाद में एक दूसरे से सामन्जस्य स्थापित हो गया तथा यह क्षेत्र मुगल साम्राज्य का अंग वना । इस समय भी सम्भल एक महत्वपूर्ण सूबा था जिसके आधीन यह समस्त क्षेत्र था । सम्राट जहांगीर के समय से सम्भल सूबे के अतिरिक्त बरेली का महत्व भी बढ़ गया। शाहजहाँ के समय में सम्भल के सूबेदार रुस्तम खाँ ने कठेरिया राजा रामसुख को परास्त करने मुरादाबाद जो उस समय चौपाला कहलाता था उस पर अधिकार करके इसकी स्थापना की जो कि इस समय के बाद सम्भल के स्थान पर इस सूबे का मुख्यालय बना।

दिल्ली साम्राज्य का सूबा मुरादाबाद

सूबा बनने के बाद से मुरादाबाद का महत्व बढ़ गया। रुस्तम खाँ सन 1658 ई. तक यहाँ का सूबेदार रहा। इसके बाद मोहम्मद खाँ तथा सन 1661 में राजा मकरन्द राय को बरेली एवं मुरादाबाद दोनों सूबों का सूबेदार बनाया गया। सन 1685 में अमीनउद्दौला, सन् 1713 में मोहम्मद अमीन खाँ एतमादुदौला तथा सन 1716 में इन्तजामुद्दौला को यहाँ का सूबेदार बनाया गया। इस समय दिल्ली हुकूमत बहुत कमजोर हो गई थी। इस सारे क्षेत्र में स्थानीय जमीदारों ने तरक्की कर ली और अपने स्थानों के राजा बन बैठे। नाम मात्र को यहाँ के चिनकिलीज खाँ, मोहम्मद मुराद, सैफउद्दीन खाँ, हैदर अली खाँ

कमरउद्दीन खाँ एवं अजमत उल्ला खाँ सन 1737 तक सूबेदार रहे। इसी समय यहाँ इस क्षेत्र में रुहेलों ने शक्ति संचित करके अपने सरदार अली मोहम्मद खाँ के नेतृत्व में अधिकार कर लिया एवं रुहेला हुकूमत की स्थापना की ।

रियासत रुहेलखण्ड के अधिकार में

सन् 1742 में मुरादाबाद के सबूदार राजा हरनन्द खत्री को हरा कर नवाब अली मोहम्मद खाँ ने रुहेलखण्ड रियासत स्थापित की। मुरादाबाद का क्षेत्र उनके अधीन रहा। सन् 1752 ई. में दून्दे खां के हिस्से में बंटवारे में जब यह क्षेत्र आया तब से सन् 1774 ई. तक उनका यहाँ अधिकार रहा।

नवाब अवध के अधीन

सन् 1774 में रुहेलखण्ड पर नवाब अवध का अधिकार हो गया। रुहेलों को केवल रामपुर रियासत छोड़ी गई। सन् 1801 ई. तक अवध के राज्य का मुरादाबाद अंग रहा । अवध काल में मुरादाबाद के नाजिम असालत खाँ तथा बाद में चौधरी महताब सिंह विश्नोई रहे। इस सारे समय यहाँ अराजकता रही।

ब्रिटिश साम्राज्य का अंग

सन् 1801 में अंग्रेजों ने रुहेलखण्ड को नवाब अवध से छीन कर अपने अधिकार में कर लिया। प्रारम्भ में इसको दो भागों में बांट कर प्रशासनिक व्यवस्था की। सन् 1805 में पिण्डारियों के सेनापति अमीर खाँ, जो सम्भल के पास सरायतरीन का ही रहने वाला था, ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया लेकिन अंग्रेजी सेनाओं ने उसे टिकने नहीं दिया तथा खदेड़ दिया।

सन् 1857 में देश में बहुत बड़ी क्रान्ति हुई। मुरादाबाद में भी कुछ समय देशी हुकूमत रही लेकिन शीघ्र ही पुनः अंग्रेजों का अधिकार हो गया। सन् 1947 तक अंग्रेज लोग भारत के शासक रहे। मुरादाबाद पर भी उनका अधिकार रहा।

सन् 1857 की क्रान्ति

मेरठ में क्रान्ति के प्रारम्भ की सूचना जैसे ही मुरादाबाद में आई, यहाँ के गूजरों ने

15 मई सन् 1857 को अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत प्रारम्भ कर दी। 20 इन्फैन्ट्री के बिद्रोहियों की पार्टी गंगा पार करके 29 नेटिव इन्फैन्ट्री के विद्रोहियों की पार्टी से मिल गई तथा जेल में घुस गई तथा यहाँ के सैकड़ों देशी कैदियों को आजाद कर दिया । अंग्रेजों ने विद्रोहियों को दबाने का भरसक प्रयास किया जिसमें विद्रोहियों के नेता मीर मन्नू को मारने में सफल हो गए लेकिन बिद्रोह दबाने में कामयाब नहीं हुए। इसी समय सय्यद गुलजार अली ने मुगल सम्राट की ओर से अपने आप को मुरादाबाद का हाकिम घोषित कर दिया। इसी समय अमरोहा में भी विद्रोह की आग फैल गई और 22 मई को यहाँ के थानेदार को विद्रोहियों ने जान से मार दिया। इसी समय बरेली की क्रान्ति की सूचना जंगल में आग की तरह फैली विद्रोहियों ने अंग्रेजी सरकार का खजाना अपने कब्जे में ले लिया जिसमें 2,70,000 रुपया था। तब अंग्रेज मुरादाबाद से भाग गए, शेष बचे मौत के घाट उतार दिए गए। 14 जून सन् 1857 को बख्त खाँ के नेतृत्व में बरेली की सेनाओं ने मुरादाबाद में प्रवेश किया। 29 जून को रामपुर की सैनिक टुकड़ी ने मुरादाबाद पर अधिकार करने की कोशिश की लेकिन सफल नहीं हो सकी।

15 जून सन् 1857 को सम्भल के पठान एवं अंसारियों ने विद्रोह कर दिया दिल्ली के शहजादे फीरोज शाह ने सम्भल मुरादाबाद की तरफ कूच किया। पहले यह मुरादाबाद आया फिर बरेली की ओर चला गया। मुरादाबाद पर क्रान्तिकारियों का अधिकार और मजबूत हो गया । मज्जू खाँ ने शाही शहजादों एवं सेना की मदद से यहां देशी राज्य कायम रखा लकिन दिल्ली एवं लखनऊ के पतन के बाद अंग्रेज सेनाओं द्वारा आक्रमण किये जाने पर मज्जू खाँ उनका मुकावला न कर सका। कर्नल जे. काक तथा आर. एलेक्जेण्डर के नेतृत्व में अंग्रेजी सेनाओं द्वारा वह पकड़ा गया और मारा गया। दोनों शहजादे तथा, अन्य लोग गिरफ्तार किए गए तथा वह भी जान से मार दिये गए। मुरादाबाद पर भी अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के असफल होने के पश्चात जनता को बुरी तरह दबा दिया गया। लेकिन मुरादाबाद जनपद में आजादी के दीवानों की मशाल जलती रही। यहां के वीर नागरिक सूफी अम्बा प्रसाद का सम्पूर्ण जीवन स्वतन्त्रता संघर्ष में व्यतीत हुआ। सन् 1897 ई. में अंग्रेजों ने उन्हें जेल में डालकर डेढ़ वर्ष तक यातनाएं दीं। वे देश की आजादी के लिए बलिदान हो गए। उन पर मुरादाबाद को गर्व है।

सन् 1920 में उत्तर प्रदेश काग्रेस का विशेष अधिवेशन मुरादाबाद में हुआ। इसमें गांधी जी उपस्थित थे। सर्वप्रथम इसी अधिवेशन में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन चलाने का प्रस्ताव पारित हुआ था। इस प्रकार आजादी की दूसरी लड़ाई के प्रारम्भ करने के लिए बिगुल बजाने का गौरव मुरादाबाद को प्राप्त है। इस असहयोग आन्दोलन में जिला मुरादाबाद के सुपूतों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया इनमें प्रोफेसर रामसरन, पं. शंकर दत्त शर्मा, सर्वश्री बनवारी लाल, रहबर, जफरहसन वास्ती वकील, लाला भगवत सरन, मास्टर अश्फाक हसन, मुख्तार एवं अलीमुद्दीन मुरादाबाद नगर से तथा सर्वश्री मौलाना मो. इस्माईल, लाला चन्दूलाल सम्भल से, डॉ. नरोत्तम शरण, सर्वश्री नाथूराम वैद्य, बाबू लाल सर्राफ, छिद्दा खाँ, बख्स उल्ला, अशफाक अहमद, मुमताज अली, चौधरी रियासत अली खाँ, मास्टर रूप किशोर अमरोहा से तथा लाला लक्ष्मी चन्द्र सर्व श्री मुन्नी लाल, लच्छू भगत गणेशी लाल तथा सादिक साहब आदि चन्दौसी के उल्लेखनीय व्यक्ति थे जिन्हें अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया।

सन् 1930, 1932, 1940 तथा 1942 के आन्दोलन में जो सत्याग्रही चारों बार जेलों में रखे गए वह प्रोफेसर रामसरन, प. जुगलकिशोर पं. शंकर दत्त शर्मा, श्री दाऊदयाल खन्ना, लाला भगवत शरण, श्री राधेश्याम टंडन, मुंशी अयोध्या प्रसाद, लाला चन्दू लाल, श्री छोटे सिंह, डा. प्रीतम शरण, श्री रामेश्वर दयाल तथा श्री शिव स्वरूप सिंह आदि थे। महिला सत्याग्रहियों में श्रीमती भू देवी अपने पति पं. वृज नन्दन शर्मा के साथ दो बार जेल गई तथा श्रीमती भगवती देवी श्रीमती सीता तथा श्रीमती गंगा देवी जैन एक बार जेल गई।

मुरादाबाद के अन्य अनेक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों ने भी अपने त्याग एवं बलिदान की मिसाल कायम करके मुरादाबाद जनपद का नाम रोशन किया। इन स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों में सर्व श्री सन्त सरन अग्रवाल, छदम्मी लाल शर्मा, ओम प्रकाश, हृदयनारायण खन्ना, शान्ति प्रसाद अग्रवाल, रामकुमार अग्रवाल, रामगुलाम, इफ्तिखार फरीदी, नाथूराम वैद्य, देवेन्द्र गुप्ता, राधेश्याम, भगवत सरन, गनेशीलाल चेतन स्वरूप, बृज पाल सरन रस्तोगी एवं महेन्द्र नाथ आदि का योगदान भी उल्लेखनीय रहा ।

जिन लोगों ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपनी जान की कुर्बानी दी उनमें जनपद मुरादाबाद में शहीद होने वाले लोगों में सर्व श्री प्रेम प्रकाश अग्रवालः जमील उर रहमान, झाऊ लाल, रहमतउल्लाह साहब, मदन मोहन, मोती लाल, मुमताज, जगदीश प्रसाद शर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

आजादी के आन्दोलन काल में मुरादाबाद को यह गौरव प्राप्त हुआ कि यहां

मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, आचार्य नरेन्द्र देव तथा सम्पूर्णानन्द आदि राष्ट्रीय नेता समय समय पर पधारे तथा यहां निवास भी किया। अमरोहा गेट स्थित व्रजरत्न लाइब्रेरी का उद्घाटन महात्मा गांधी के करकमलों द्वारा हुआ था

मुरादाबाद कमिश्नरी (मण्डल)

मुरादाबाद तथा इसके मण्डल के जिले पहले रुहेलखण्ड मण्डल (बरेली) के अन्तर्गत सम्मिलित थे। सितम्बर सन् 1980 ई. में मुरादाबाद बरेली एवं बिजनौर मेरठ मण्डल से अलग करके नया मुरादाबाद मण्डल बना दिया गया। मुरादाबाद जनपद से तीन तहसीलें अलग करके अप्रैल 1997 में अमरोहा, ज्योतिबा फुलेनगर नाम से नया जिला बना दिया ।

सर का खिताब पाने वाली हस्तियां

अंग्रेजी शासन काल में ब्रिटिश साम्राज्य का सर्वोच्च खिताब 'सर' का था जो विशिष्ट लोगों को प्रदान किया जाता था। मुरादाबाद जनपद को यह सौभाग्य प्राप्त है कि यहां के चार लोगों को 'सर' के खिताब से सम्मानित किया गया। इनमें मौलवी सर रजा अली कुन्दरकी के रहने वाले थे। आप अंग्रेजी हुकूमत में पहले हिन्दुस्तानी गवर्नर हुए। सर याकूब साहब मुगलपुरा में रहते थे आप केन्द्रीय असेम्बली के मैम्बर थे। मुरादाबाद में एक रोड सर याकूब के नाम से प्रसिद्ध है। सर जगदीश प्रसाद गुजराती स्ट्रीट के रहने बाले थे। आप भी वायसराय को सलाह देने वाली काउन्सिल के सदस्य थे। सर शफाअत अहमद खाँ नवाबपुरा के रहने वाले थे जिनको सर के खिताव से सम्मानित किया गया। मुरादाबाद में चार सर होने के कारण इसको पत चतवकनबपदह बपजल कहा जाने लगा था ।

इलाहाबाद के आनन्द भवन का मुरादाबाद से सम्बन्ध

स्वतन्त्रता अन्दोलन काल में इलाहाबाद का आनन्द भवन राष्ट्रीयता का प्रतीक था। पं. जवाहर लाल नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू ने इसे बहुत भव्यता प्रदान की थी प्रारम्भ से यह उनकी सम्पत्ति नहीं था । लेफ्टीनेन्ट गवर्नर सर विलियम म्यूर सन. 1870 ई. में पूर्वोत्तर सीमा प्रान्त के गवर्नर बने। उनकी बड़ी इच्छा थी कि इलाहाबाद

में, जो उस समय प्रांत की राजधानी थी, में एक ऐसा भवन बने जहां शासक वर्ग के लोग आराम के क्षण में वहाँ बिता सकें। सर सय्यद अहमद म्यूर साहब के घनिष्ठ विश्वास पात्रों में से एक थे। उन्होंने ही गवर्नर की इच्छापूर्ति हेतु एक सुन्दर तथा आराम अशायश के तमाम साधनों से भरपूर भवन बनवाया। अपने द्वितीय पुत्र के नाम पर इसका नाम महमूद मंजिल रखा । सर सय्यद के पुत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रथम भारतीय न्यायाधीश बने। पद से निवृत होने पर उन्होंने महमूद मंजिल मुरादाबाद के राजा परमानन्द के हाथ बेच दी। राजा साहब ने इसका नाम पाठक निवास रखा। पं. मोती लाल नेहरू ने इस भवन को सन् 1899 में बीस हजार रुपए में खरीदा। उन्होंने इसमें अनेक परिवर्तन किए तथा इसका नाम 'आनन्द भवन' रखा। इस प्रकार यह आनन्द भवन कभी मुरादाबाद की शख्सियत की सम्पत्ति था ।

हस्त शिल्प

मुगल काल से मुरादाबाद में कलात्मक उद्योगों जैसे स्वर्णकारी, छपाई रंगाई व बर्तन कला का व्यवसाय होता रहा है। यहां के हस्त शिल्पियों द्वारा निर्मित आधुनिक आकर्षक कलात्मक वस्तुएं, पीतल के बर्तन, आभूषण, पीतल की बस्तुओं की नक्काशी का कार्य तथा ट्राफियां यहां के मुख्य शिल्प हैं। आभूषणों में कुन्दन का शीशा जड़ाई का काम बहुत प्रसिद्ध था । पीतल, तांबा, जर्मन सिल्वर पालिश के बुन्दे, चूड़ी व कड़े योरोप को निर्यात किए जाते हैं।

ग्रामीण एवं उप नगर स्तर पर वस्त्र रंगाई व छपाई का कार्य यहां बड़े स्तर पर होता है। ठाकुर द्वारा, शेरकोट, पाकबाड़ा आदि स्थानों पर यह कार्य होता है तथा यहां छपाई के लिहाफ, तोषक आदि बनते हैं। शरीफनगर भोजपुर, बिलारी, सम्भल, पाकबाड़ा आदि क्षेत्रों में गाढ़ा तथा दरियां तैयार होती हैं। खादगूजर, मछरिया करोंदी तथा गंगेश्वरी के सघन क्षेत्रों में अम्बर चर्खे आदि के केन्द्र हैं। सम्भल सींग की कंघियों के लिए प्रसिद्ध है। चंदौसी में पलंग की पट्टियां, फूल कांसी के कटोरे व थालियां, पीतल के कलसे, तौलिए, साबुन तथा गजक बनती है। भोजपुर, पीपल साना हुक्के के सुन्दर पाइप को बनाने की कला के कारण आस–पास के क्षेत्रों में प्रसिद्ध हैं।

प्रसिद्ध पीतल व्यवसाय एवं उसका इतिहास

मुरादाबाद पीतल के बर्तनों एवं उन पर नक्काशी के काम के लिए प्रसिद्ध है। यहां का पीतल व्यवसाय कई शताब्दी पुराना है। ऐसी जनश्रुति है कि मुगल सम्राट

शाहजहां के शासनकाल में कतिपय शिल्पी–परिवार दिल्ली से मुरादाबाद आकर बस गए थे तभी से यह नगर धीरे–धीरे पीतल व्यवसाय के लिए प्रसिद्ध हो गया ।

मुगल काल में पीतल के बर्तनों पर नक्काशी के काम का रिवाज था । इसी नक्काशी के सवब से यहां के बर्तन, जिनमें खास तौर पर आफताबा तथा फूलदान, से नवाबो, राजाओं आदि के ड्राइंग रूम सजाये जाते थे। ईस्ट इण्डिया कंपनी के अधिकार के बाद अंग्रेजों ने भी इस फन की कद्र की जिससे इस व्यवसाय की उन्नति हुई तथा सन् 1856 तक यहां इस नक्काशी के कार्य ने बहुत उन्नति कर ली तथा इस कार्य को कलात्मकता (आर्ट) की दृष्टि से देखा जाने लगा एवं अब मुरादाबाद से विदेशों को बर्तन भेजे जाने लगे। (एक्सपोर्ट होने लगा)

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में दिल्ली के लाल किले में काम करने वाले एक कुशल शिल्पकार शेख मोहम्मद बख्श मुरादाबाद आकर रहने लगे। उन्होंने इस व्यवसाय को कलात्मक रूप प्रदान किया जिसको उनके भतीजे निजामुद्दीन उस्ताद ने बढ़ाया। पीतल के बर्तनों पर नक्काशी के काम को उलचाई तथा इसके शिल्पकार (कारीगरों) को उलचाइया कहा जाता था । उस समय इस उलचाई कला को बेहद खूबसूरत एवं बारीक तरीन बनाया गया तथा इस कला में बेहतरीन नमूने बनाए जिनको मरोड़ी, दर्मियानी, नीलीचिकन, मामूली जाली, नेचुरल विदरी, शील्ड, बेल, जापानी छोटी व मोटी चिकन मेमारी आदि नाम दिए ।

बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में यहां पीतल के बर्तनों पर रंगाई का काम शुरु हुआ। पहले पहल यह कच्चा रंग कहलाता था। इसमें घरेलू काम के बर्तनों पर गहराई से फूल–पत्ती बनाकर उनमें रंग भर दिया जाता था । स्याह कलम का काम तो उन्नीसवीं शताब्दी तक में किया जाता था। इसका रिवाज आज भी है। इसके बाद आक्सोडाइज्ड रंग बर्तनों पर किया जाने लगा। 1947 ई. तक यह रंग बैट्री या स्प्रे मशीन से चढ़ाया जाने लगा था आजकल नाइलान कलर, पेण्ट मिर्गान, सीप कलर, लेकर पेन्ट वगैरह होता है । आजकल लोहे के बर्तन भी पेंटिंग करके एक्सपोर्ट किए जा रहे हैं । ''

आजकल बर्तनों पर कलर में अनेकों प्रकार के डिजाइन बन रहे हैं। जैसे दृश्यावलि, गुलदस्ते, व्यक्ति चित्र, लाइनिंग, एन्ग्रेविंग एवं मॉर्डन आर्ट आदि । वर्तमान में बर्तनों पर रंग में खुदाई व उभार का काम भी लोकप्रिय हो रहा है। परम्परागत डिजाइनिंग में झर्रा, बारीक, मरोड़ी, चिकन, दाना आदि भी पूर्ववत् प्रचलित हैं।

रंग कला का क्षेत्र अब बहुत व्यापक हो गया है। मुरादाबादी लोटा, गिलास, थाली जैसे परम्परागत बर्तनों के साथ आधुनिक रंग कला का प्रयोग धार्मिक मूर्तियों,

पशुपक्षियों की मूर्तियों, खेल उपकरणों, प्लान्टर्स तथा वाल प्लेट्स एवं विभिन्न धार्मिक कथानक सम्बंधी दृश्यों में भी किया जा रहा है। कांस्य प्रतिभाएं एवं पीतल के पात्रों को रंगने में स्वाभाविकता का ध्यान रखना आजकल की रंग कला की विशेषता है।

मुरादाबाद के कलात्मक बर्तनों तथा साज सज्जा आदि के सामान का बहुत बड़ी मात्रा में निर्यात (एक्सपोर्ट) होता है। यहां की लगभग 300 बड़ी छोटी फर्में एक्सपोर्ट के व्यवसाय में लगी हैं तथा लगभग सौ करोड़ रुपए का व्यवसाय यहां होता है। मुरादाबाद के कई एक्सपोर्टरों को राष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त हो चुका है।

मुरादाबाद के नक्काशी कलाकारों का यहां के व्यापार एवं एक्सपोर्ट को बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान है। निरन्तर नई नई कलात्मक कृतियां बनाकर यह अपना स्थान विश्व स्तर पर स्थापित कर रहे हैं। भारत सरकार एवं प्रदेश सरकार दोनों ही यहां की कला को प्रोत्साहित कर रहे हैं। मुरादाबाद के अनेकों नक्काशी कलाकारों को राष्ट्रीय अवार्ड एवं राज्य पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

किस्त व्यापार

मुरादाबाद का एक प्रसिद्ध व्यापार किस्तों का व्यवसाय भी है जिसका देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसार है। इस उद्योग में यहां के साहूकार सभी जगहों पर अपने प्रतिनिधि भेजते हैं जिनको किस्तिया कहा जाता है। शहर, कस्बे तथा गांव–गांव जाकर यह किस्तिए वहां के निवासियों को ऋण बांटते हैं। तथा उसको बाद में ब्याज सहित वसूल करते हैं। इस व्यवसाय में काफी बड़ी संख्या में यहां के लोग लगे हुए हैं। इस व्यावसाय की यह विशेषता है कि ऋण लेने वाले से किसी प्रकार की बंधक (गिरवीं रखी जाने वाली वस्तु) प्राप्त नहीं की जाती है ऋण लेने वाला समय से किस्त देता है तथा कानूनी बंधन रहते हुए भी यह व्यवसाय विवाद रहित ही रहता है।

चंदौसी पुरातत्व संग्रहालय

सन् 1955 में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जनपद के चंदौसी कस्बे के एक तरुण कवि सुरेन्द्र मोहन मिश्र ने अपने क्षेत्र के हस्तलिखित ग्रन्थ, मृण्मूर्तियों और सिक्कों का संग्रह करके चन्दौसी पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना की। यह सारी सामग्री बदायूं मुरादाबाद, रामपुर और बरेली जनपदों के प्राचीन ध्वंसावशेषों से प्राप्त की गई। 35 वर्षो की अनवरत साधना ने इस संग्रहालय को देश का सबसे विशाल संस्थान बना दिया। इसी संग्रह की 70 के लगभग गुप्तकालीन कला कृतियां इलाहाबाद म्यूजियम

में सुरक्षित हैं। श्री मिश्र के ज्येष्ठ पुत्र अतुल मिश्र द्वारा संग्रहीत अहिच्छत्र की कलाकृतियों से संग्रहालय की भी वृद्धि हुई। संग्रहालय में शुंगकालीन, कुषाण कालीन तथा गुप्तकालीन अनेकों अमूल्य धरोहर मौजूद हैं। संग्रहालय में 15.11.97 तक 4,500 मृण्मूर्तियां, 200 प्रस्तर मूर्तियां 55 मृत पात्र, 1500 सिक्के, 9 अभिलिखित मोहरें, 250 लीथो चित्र 2,000 हिन्दी संस्कृत की पाण्डुलिपियां, 700 लीथो प्रकाशन और 600 प्राचीन हिन्दी पत्र पत्रिकाएं संग्रहीत हैं। इस संग्रहालय का भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशकों तथा अन्य विद्वानों ने निरीक्षण किया है जो कि इसके प्रशंसक रहे हैं।

वर्तमान में यह संग्रहालय दीन दयाल नगर मुरादाबाद में स्थित है ।

ज्ञान एवं साहित्य

मुरादाबाद जनपद में भी ख्याति प्राप्त विभूतियां हुई हैं। जिन्होंने देश में मुरादाबाद के नाम को रोशन किया है। इनमें सबसे पहले नाम अली सिकन्दर उपनाम जिगर मुरादाबादी का आता है जिन्होने यहां सन् 1890 में जन्म लिया तथा शायरी में देश का ही नहीं वरन् विश्व में मुरादाबाद के कीर्तिमान को स्थापित किया। वह इतने बड़े शायर थे कि उस समय मुरादाबाद को शहरे–जिगर नाम से सम्बोधित किया जाता था। मुरादाबाद को जिगर के नाम से बहुत प्रसिद्धि मिली। जिगर को शहनशाहे गजल तथा रईस उल मुता गज्जेलीन के खिताब से सम्मानित किया गया।

जिगर के जीवन काल में ही मुरादाबाद में एक और चिराग रोशन हुआ वह था सिराज उल हक 'कमर मुरादाबादी'। कमर साहब भी बहुत मशहूर शायर थे। उन्होंने भी बहुत प्रसिद्ध दीवानो (ग्रन्थों) की रचना की ।

संस्कृत एवं हिन्दी को भी इस नगर ने अनेक युगान्तकारी साहित्यकार दिए हैं। संस्कृत भाषा में प ज्वाला प्रसाद मिश्र का नाम विशेष उल्लेखीय है जिन्होंने लगभग 200 संस्कृत ग्रन्थों का प्रणयन किया है। वह विद्या वारिध (पी.एच.डी) उपाधि प्राप्त करने वाले प्रथम व्यक्ति थे ।

हिन्दी साहित्य के दैदीप्यमान सितारे श्री दुर्गादत्त त्रिपाठी भी यहीं के थे। आप कुशल सम्पादक, कवि, लेखक, गीत, महाकाव्य के रचयिता, गद्य, उपन्यास एवं कहानीकार थे, आपके द्वारा रचित लगभग 56 साहित्यिक ग्रन्थ अत्यन्त उच्च श्रेणी के हैं।

हिन्दी जगत में ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रथम लेखक श्री बल्देव प्रसाद मिश्र का जन्म इसी नगर में हुआ था। टोक्यो विश्वविद्यालय में हिन्दी एवं भारतीय दर्शन का

अध्ययन करने वाले प्रथम भारतीय प्रोफेसर सन्तराम वर्मा इसी नगर के थे। मुरादाबाद के श्री मेहदी अली खाँ जंकी अवध नवाब के दरबार में राजकवि थे। मुगल सत्ता की समाप्ति पर मिर्जा गालिब को पांच वर्षों तक आश्रय देने का गौरव इस नगर को प्राप्त है। दीर्घ काल तक यह नगर सर सय्यद अहमद खाँ का कार्य क्षेत्र भी रहा है

सूफी अम्बा प्रसाद मुरादाबाद के एक ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने साहित्य सेवा के साथ साथ सम्पादन की विशेष भूमिका निभाकर मातृ भूमि की स्वतन्त्रता के लिए देश में एक उपयुक्त वातावरण बनाया तथा अंग्रेजी हुकूमत से विरोध लेकर जेलों की सजा काटी तथा यातनाएं सहीं ।

आर्य समाजी विद्वानों की श्रृंखला में मुंशी इन्द्रमणि संस्कृत, अरबी तथा फारसी के उद्भट विद्वान थे। आपने बाईबिल तथा कुरान का हिन्दी में अनुवाद किया। आपके अनुवादों को ही केन्द्र में रखकर स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तेरहवें एवं चौदहवें समुल्लास की अपनी स्थापनाएं प्रस्तुत की। महात्मा नारायण स्वामी, पं. जीवाराम उपाध्याय, पं. गोपी नाथ एवं मौलाना सत्यदेव मुरादाबाद के प्रमुख प्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान थे। किसी समय मुरादाबाद से प्रकाशित 'अरुण' पत्रिका की गणना हिन्दी की पारिवारिक पत्रिकाओं में विशेष रूप से होती थी। इसके संस्थापक संपादक स्व. पृथ्वी राज मिश्र का जन्म अमरोहा में हुआ था। ग्रेनाइट की खोज करने वाले डॉ. आनन्द गोपाल झिगरन आदि विभूतियों ने वहां जन्म लेकर इस जनपद की ख्याति को बढ़ाया है।

संगीत

उत्तर भारतीय संगीत में मुरादाबाद का बहुत योगदान रहा है। प्रसिद्ध सितार बादक मसीत खां, तबला वादक अहमद जान थिरकवा, सारंगी नवाज शराफत हुसैन खां, साबरी खां, का सम्बन्ध भी इसी मिट्टी से जुड़ा हुआ है। स्व. पुरुषोत्तम व्यास न केवल प्रथम पंक्ति के साधक भक्त थे वरन् कंठ तथा वाद्य संगीत (सितार तथा दिलरुवा) की विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न थे ।

नाट्य कला–चित्रकला

मुरादाबाद में रामलीला कलाकारों की पहली संस्था रोचल ड्रामाटिक क्लब की स्थापना 1916 ई. में हुई। उसके बाद लाला सालिगराम वैश्य तथा उनके पश्चात पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र ने अनेको नाटक रचनाएं सृजित कीं। जिनका यहां के

विभिन्न कला क्लबों ने मंचन किया। देश की आजादी के बाद जनपद में अनेकों संस्थाएं बनीं। अभिनय कला से जुड़े प्रमुख व्यक्तियों में पारसी नाटक सम्राट मास्टर फिदा हुसैन नर्सी का नाम अविस्मरणीय हैं जिन्हें बुलन्द आवाज में बोलने तथा गाने का बेताज बादशाह माना जाता है।

मुरादाबाद की भूमि में कला के क्षेत्र में अग्रणी कलाकारों ने जन्म लिया है। भारत में वाश पेंटिंग के प्रथम उन्नायक डा. रामपाल सिंह ने देश में मुरादाबाद के गौरव को है। स्व. राम सिंह प्रसिद्ध चित्रकार एवं मूर्तिकार थे जिनके अनेकों शिष्य मुरादाबाद में मूर्तिकला एवं चित्रकला को उन्नतिशील रूप में जीवन्त रखे हुए हैं। प्रो. जगदीश जौहरी एवं स्व. सर्वेश्वर सरन 'सर्वे' यहां के ख्याति प्राप्त कलाकार रहे हैं।

मेले एवं उत्सव

मुरादाबाद जनपद में सबसे बड़ा मेला चंदौसी का गणेश चौथ का प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त भी अनेकों मेले लगते हैं जिनमें रघुनाथ आश्रम, सीता आश्रम (चंदौसी) शाह बुलाकी साहब की ज्यारत (मुरादाबाद) शिव रात्रि (सादात बाड़ी) बूढ़े बाबू की जात (असमौली) देवी की जात (चंदौसी) ज्यारत एवं उर्स (जनेटा) के मेले उल्लेखनीय हैं। जिले में उझारी, सिरसी, इनायतपुर, मुकर्रबपुर, पाकबड़ा के उर्स, सम्भल के नेजे, एवं फेरी, कांठ, सरायतरीन एवं बिलारी के रामडोल, लोधीपुर जवाहर नगर की चौती प्रमुख रूप से मनाएं जाते हैं। पूरे जनपद में अनेकों स्थानों पर मोहर्रम, दशहरा, दीपावली, शिवरात्रि, होली, रामनवमी, रामलीला आदि त्योहार विशेष उत्साह से मनाए जाते हैं। मुरादाबाद में राम गंगा स्नान कार्तिक पूर्णिमा पर विशेष रूप से किया जाता है।

ऐतिहासिक भवन

मुरादाबाद में ऐतिहासिक भवन अधिक शेष नहीं हैं। सन् 1632 ई. में चौपाला के स्थान पर मुरादाबाद की स्थापना यहां के सूबेदार रुस्तम खां ने जब की तब यहां रुस्तमखानी मस्जिद का निर्माण कराया जो अब सुन्दर भवन में परिवर्तित हो गई है। नगर में एक किला भी था जिस पर आज राजकीय इण्टर कालिज है। इसके बाद के नवाब अजमत उल्ला खाँ का मकबरा, असालत खाँ का मकबरा, शाह बुलाकी शाह का मकबरा एवं हाफिज साहब का मजार यहां के प्रसिद्ध प्राचीन भवन हैं।

धार्मिक स्थल

काली मंदिर (दशनामी नागा सन्यासियों का साधना क्षेत्र) कामेश्वर नाथ (चौरासी

घंटा भगवान शिव मंदिर) अस्थल मंदिर (किसरौल), गंगा मंदिर (उदासी सम्प्रदाय के संतों का कर्मस्थल), राम जानकी मंदिर, (रामानन्दी उदासीन साधुओं का केन्द्र), झारखण्डी महादेव मंदिर (नाथ सम्प्रदाय के गोस्वामी के अधीन) होलिका मंदिर (जोगी सम्प्रदाय के पुजारी द्वारा सेवित), हनुमान मंदिर अन्नपूर्णा मंदिर तथा हाथी वाला मंदिर प्राचीन एवं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

नगर के मध्य मैथोडिस्ट चर्च 1849 का निर्मित है। एक अन्य चर्च दांग मोहल्ला में व बड़ा गिरजाघर पीलीकोठी चौक पर है। इस्लाम धर्म सम्बन्धी मुख्य बाजार में स्थित शाही मस्जिद किले वाली जामे नईमिया, जामे–उल–हदा तथा जामा मस्जिद प्रमुख मानी जाती हैं। यहां सिख समुदाय के गुरुद्वारे कंजरी सराय में तथा दूसरा दिल्ली रोड पर स्थित विशेष उल्लेखनीय हैं। दिल्ली रोड पर ही संत कृपाल सिंह महाराज का आश्रम है। आर्य समाज के भी तीन मंदिर नगर में हैं एक मण्डी बांस में स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित, दूसरा स्टेशन रोड पर तथा तीसरा हरथला कालोनी में स्थित है।

बुजुर्गों के मजारों में बाबा शाह अलाउद्दीन, शाह इब्राहीम साहब (रोजे वाली ज्यारत) रोशन मियां साहब (इसमें मज्जू खां की ज्यारत) भी है शाह मुकम्मल साहब (ईदगाह) मौलवी नईमउद्दीन साहब के मजार उल्लेखनीय हैं।

डा. भीमराव अम्बेडकर उ.प्र. पुलिस एकेडेमी

पुलिस अधिकारियों की यह प्रशिक्षण एकेडेमी है। इसका एक शानदान इतिहास है। मूल रूप में इसकी स्थापना पुलिस ट्रेनिंग स्कूल के नाम से सन् 1902 में हुई थी। सन् 1934 में इसका स्तर पुलिस ट्रेनिंग कालिज (च्ण्ज्ण्ब) का हो गया। तब से इसकी निरन्तर प्रगति हुई। आजादी के पश्चात सन् 1978 में इसके साथ–साथ एक पुलिस ट्रेनिंग कालिज (च्ण्ज्ण्ब प्प्) और स्थापित किया गया। सुश्री मायावती के मुख्यमंत्रित्व में इसको ऐकेडेमी का स्तर प्रदान कर दिया गया। यह ऐकेडमी मुरादाबाद की प्रसिद्धियों में है जिससे मुरादाबाद गौरवान्वित है।

पुरानी बस्तियां

मुरादाबाद जनपद में सम्भल, अमरोहा एवं चंदौसी विशेष महत्वपूर्ण नगर रहे हैं। अमरोहा अब जिला बना दिया गया है अतः उसका इतिहास अलग अध्याय में दिया गया है। सम्भल एवं चंदौसी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं इसलिए उनका भी अलग से वर्णन किया गया है। इनके अतिरिक्त कुछ और नगर भी पुराने हैं जिनका वर्णन निम्न प्रकार है।

अगवानपुर

यह एक प्राचीन नगर है। गुलाम वंश शासनकाल में सम्भल के गर्वनर मलिक जलालुद्दीन ने अफगानों, पठानों को इस नगर में बसाया तथा इसका नाम अफगानपुर रखा। यह 1248 ई. की बात है परन्तु 1309 ई. में मुगल जाति के लोगों के यहाँ बसने पर इसका नाम मुगलपुर हो गया तथा मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में भी इस नगर का नाम मुगलपुर ही था। यह नगर उस समय सम्भल सरकार के अधीन एक परगना था, बाद में इसका नाम अगवानपुर हो गया जो अफगानपुर का अपभ्रंश है। अवध शासन काल 1790 ई. में यह नगर मुरादाबाद के गर्वनर चौधरी महताप सिंह विश्नोई की जांगीर में था जिसमें 21 गांव और सम्मिलित थे। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात 1858 ई. में अंग्रेजी सेना ने इस नगर को बुरी तरह लुटा। नगर में दो एक मस्जितें बीुत पुरानी हैं तथा नगर के बाहर मुगलों का एक किला था जिसके खण्डहर अब तक दिखाई देते हैं।

कुन्दरकी

इसकी गणना भी जिला मुरादाबाद के प्राचीन नगरों में है राजपुत काल से इसे गुसाईं कुन्दनगिरि ने बसाया था और गुसाईं लोग ही इसके स्वामी थे। उस समय इस नगर का नाम कुन्दनगढ़ था बाद में बिगड़कर कुन्दरकी हो गया। कुछ समय पश्चात अहरों ने इस नगर पर अधिकार कर लिया। मुस्लिम काल में इस नगर के स्वामी सैयद लोग बन गये। मुगल सम्राट अकबर के समय में कुन्दरकी एक परगना था जिसका कानूगो एक कायस्थ परिवार था। जिसको अकबर ने एक बड़ी जागीर भी प्रदान की थी। इस परिवार को उस समय 400 पैदल तथा 40 घुड़सवार सैनिक रखने का अधिकार प्राप्त था।

ठाकुरद्वारा

इसके बारे में कहा जाता है कि मुगल सम्राट महोम्मद शाह के समय में कठेरिया राजा महेन्द्र सिंह ने इसे बसाया था। नवाब अलीमोहम्मद खां के समय में वह यहां के शासक थे लेकिन रूहेलों का प्रभाव बढ़ने के बाद यह दून्दे खां की जागीर में आ गया। दून्दे खां के बेटे फतह उल्ला खां ने यहाँ दक्षिण की तरफ फतहउल्लागंज बसाया तथा जमनावाला भी उसी समय का बसा हुआ है। सन् 1805 में अमीर खां पिण्डारी ने यहां आक्रमण किया था।

काव्य की पंक्तियों में मुरादाबाद की महत्ता

नगर मुरादाबाद

दयानन्द ने नगर में रच सत्यार्थ प्रकाश।
जीवन को जैसे दिया पुनः नया विश्वास।।
गांधी ने पाया यहां असहयोग का मंत्र।
सबने मिलकर कर लिया अपना देश स्वतंत्र।।
ज्वालादत्त, नरोत्तम दुर्गादत्त त्रिपाठी।
और जिगर ने भर दी गीत गंध से माटी।।
चारवर्ण में सात जातियां भिन्न पन्थ व्यापार।
पीतल नगरी को देते हैं दमक भरी चमकार।।
लिए हृदय में समय के कड़वे मीठे स्वाद।
शुभ इच्छा में आपकी नगर मुरादाबाद।।

—डॉ. अजय अनुपम

वह बांकपन है मुरादाबाद

तमाम भारत की गुफ्तगू का हंसी. सुखन है मुरादाबाद।
जो दिल है हिन्दोस्तां का दिल्ली तो पैरहन है मुरादाबाद।।
जहां पे कविता के फूल महके, जहां पे गीतों में राग खनके।
जहां पे नाटक भी खूब पनपे, जहां के चित्रों में रंग बरसे।।
जहां पे साहित्य—ज्ञान चमके, जहां हुनर हृदय बन के धड़के।
जहां पे रकसा हैं कामरानी, वो अन्जुमन है मुरादाबाद।।
चमकते पीतल के बर्तनों से चमक रहा है तमाम आलम।
सभी को जिस पर है नाज 'आमिर' वह बांकपन है मुरादाबाद।।

—जावेद रशीद 'आमिर'

संदर्भ :

1. मुरादाबाद गजेटियर, पृष्ठ 152।

2. पुष्पेन्द्र वर्णवाल, मुरादाबाद नगर का ऐतिहासिक महत्व, वसन्त विहार हिन्दी साप्ताहिक वर्ष 7, अंक 36 सोमवार, दिसम्बर, 1984, अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 5।

3. मोहम्मद मुराद को दिल्ली दरबार की ओर से रुकुनुद्दौला एतकात यां की उपाधि देकर मुरादाबाद का सूबेदार बनाया गया था। उसने मुरादाबाद का नाम रुकनाबाद कर दिया लेकिन उसके वापस जाते ही इसका नाम पुनः मुरादाबाद ही प्रयोग होने लगा।

4. दाउ दयाल खन्ना, मुरादाबाद नगर की अविस्मरणीय घटनाए–संस्कार–दीपिका, विशेषांक 1992, पृष्ठ 26–27, सम्पादक श्री अजय अनुपम।

5. जावेद रशीद 'आमिर' ''मैं मुरादाबाद हूँ'', पृष्ठ 132, 133।

6. चन्दौसी पुरातत्व संग्रहालय–एक परिचय, से संकलित।

7. श्री वीरेन्द्र गुप्त के साहित्य से संकलित।

8. संस्कार दीपिका, मुरादाबाद नगर विशेषांक 1992 में संकलित।

हजरत शाह बुलाकी साहब की ज्यारत श्री झारखण्ड बाबा का प्राचीन शिवलिंग

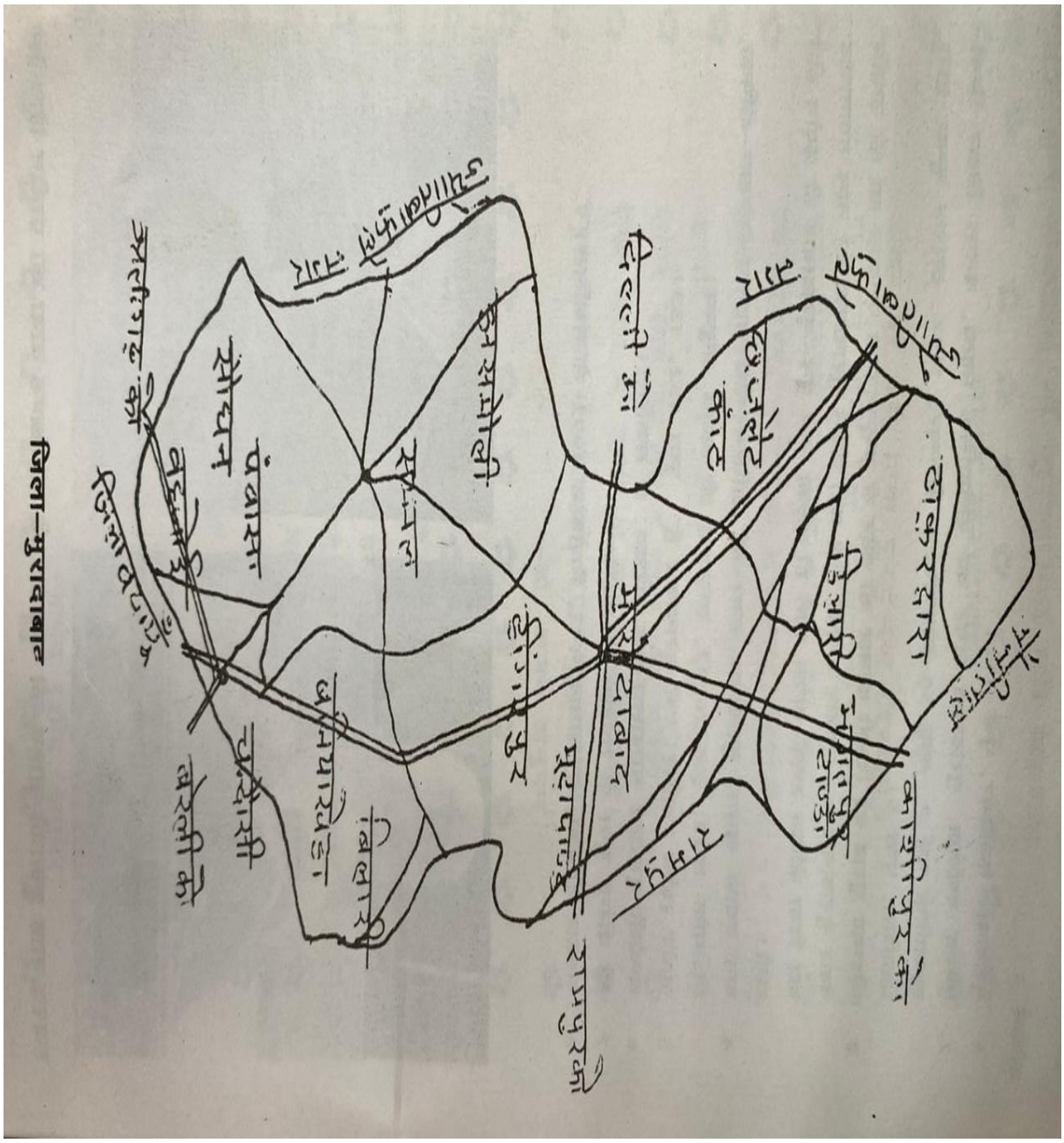

जिला—मुरादाबाद

सम्भल (जिला मुरादाबाद)

इतिहास (पुरातत्व) एवं संस्कृति

नामकरण

सम्भल मुरादाबाद जिले में सबसे प्राचीन स्थान है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इसे सतयुग में सत्यव्रत अथवा शम्भलेश्वर त्रेता में महादगिरि, द्वापर में पिंगल कहते थे तथा कलियुग में इसका नाम सम्भल प्रसिद्ध है। सम्भल वस्तुतः शम्भल का अपभ्रंश है। ऐसी जनश्रुति है कि शम्भ के नाम पर यहाँ का नाम शम्भलय पड़ा जो बाद में शम्भल तथा कालान्तर में सम्भल प्रचलित हुआ।

प्राचीन काल

दिल्ली के सुल्तानों का शासन प्रारम्भ होने से पूर्व सम्भल एवं मुरादाबाद का क्षेत्र दिल्ली के तोमर राजाओं के अधिकार में था। 11वीं शताब्दी के प्रारम्भ में महमूद गजनवी के आक्रमण के पश्चात सय्यद सालार मसूद गाजी ने इस क्षेत्र 1028 ई0 में आक्रमण किया था। यहाँ सम्भल के पास शहबाजपुर में उससे युद्ध हुआ था। तोमर के राज्य के बाद यहॉ चौहानों का अधिकार हो गया। पृथ्वीराज चौहान ने सम्भल एवं अमरोहा दोनों में किले बनवाए थे। उन्होंने सम्भल में एक विष्णु मन्दिर की भी स्थापना की थी। ऐसा कहा जाता है कि पृथ्वी राज चौहान का जयचन्द से युद्ध सम्भल के पास ही हुआ था।

मध्यकाल

पृथ्वीराज चौहान एवं राजा जयचन्द की पराजय के बाद कुतुबउद्दीन ऐबक ने इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। बदायूँ को यहां का सूबा बनाया तथा बाद में सम्भल को भी सूबा बना दिया गया। दिल्ली के सुल्तानों के समय में लगभग दो सौ वर्षों तक यह क्षेत्र कठेरिया राजपूतों के वर्चस्व में रहा तथा उनका संघर्ष उनसे निरन्तर होता रहा। सर्व प्रथम संघर्ष नासिर उद्दीन महमूद के समय में हुआ। यहां के निवासियों ने विद्रोह कर दिया जिसको दबाने को सुल्तान स्वयं यहां आया। दिल्ली का सुल्तान बलवन यहां के विद्रोहियों का दमन करने के लिए अमरोहा एवं सम्भल होता हुआ कठेर में आया। तेरहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में जलाउद्दीन खिलजी ने इस क्षेत्र के विद्रोहियों को दबाने के लिए सन् 1291 में आक्रमण किया।

दिल्ली सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समय चंगेज खां के वंशज अली बेग ने 1305 में इस क्षेत्र पर आक्रमण किया जिसे सुल्तान के नायब मलिक काफूर ने नाकाम कर दिया। सन् 1315 में सुल्तान अलाउद्दीन ने अपने बेटे खिज्र खां को अमरोहा भेज दिया। सन् 1379 में कठेरिया राजा खड़ग सिंह के विद्रोह को दबाने के लिए दिल्ली के सुल्तान फीरोज शाह ने मलिक दाउद को सम्भल भेजा तथा यहां के विद्रोहियों को दबाने के लिए प्रत्येक वर्ष सन् 1385 तक आक्रमण करने आता रहा। सुल्तान फीरोज शाह की मृत्यु के पश्चात सम्भल का क्षेत्र आजाद हो गया। यहां के मूल राजपूतों ने उन्नति कर ली और अपना अधिकार स्थापित कर लिया। लेकिन शीघ्र ही दिल्ली सल्तनत का यहां पुनः अधिकार हो गया।

जौनपुर के इब्राहीम खां शर्की का अधिकार

दिल्ली सुल्तान महमूद शाह के समय में जौनपुर के शासक इब्राहीम खां शर्की ने सम्भल एवं वारन (बुलन्दशहर) पर अधिकार कर लिया तथा तातार खां को सम्भल का सुबेदार बना दिया। वह दिल्ली पर आक्रमण की तैयारी में था कि उसने गुजरात के शासक जफर खां द्वारा मालवा पर अधिकार कर लेने की खबर सुनी तो उसका सारा सपना चूर–चूर हो गया। तथा उसको यहां से जाना पड़ा तब दिल्ली सुल्तान महमूद शाह ने शीघ्र ही सन् 1408 ई. में पुनः सम्भल पर अधिकार स्थापित कर लिया और असद खाँ लोदी को यहां का सूबेदार बना दिया।

सम्भल भारत की राजधानी सन् 1499–1504

इस समय के बाद से सम्भल पुनः दिल्ली सल्तनत का सूथा बना रहा। एक दो विद्रोह इस काल में हुए लेकिन दवा दिए गए। सन् 1486 ई में जौनपुर के हुसैन शाह ने सम्भल पर अधिकार कर लिया लेकिन दिल्ली के सुल्तान बहलोल लोदी ने शीघ्र ही अपने अधिकार में ले लिया। इसके बाद फिर सम्भल दिल्ली सल्तनत का एक महत्वपूर्ण सूबा रहा। तथा सिकन्दर शाह लोदी के काल में पूरे देश की राजधानी भी रहा। सम्भल के उत्तम वातावरण से प्रभावित होकर तथा दिल्ली से विरक्त होने पर सिकन्दर शाह लोदी ने सन् 1499 ई. में अपने राज्य की राजधानी सम्भल को बनाया। जिसे सन् 1504 तक बनाए रखा। उसने आगरा नगर की स्थापना की तथा उसको सम्भल के स्थान पर राजधानी बना लिया। सम्भल में अपने निवास के काल में सिकन्दर शाह लोदी ने शिक्षा साहित्य के उत्थान के लिए विशेष प्रोत्साहन दिया। विदेशों से विभिन्न विद्वानों को आमंत्रित किया तथा उनको अपने राज्य में महत्वपूर्ण स्थान भी प्रदान किए।

मुगल साम्राज्य का समृद्धिशाली अंग

पानीपत युद्ध में विजय के पश्चात मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर सम्भल आया था एवं उसने यहां अधिकार स्थापित किया था। उस समय सम्भल का सुबेदार मोहम्मद कासिम सम्भली था। शीघ्र ही उसके स्थान पर बाबर ने अपने बेटे हुमायूँ को यहां का सुबेदार बना दिया। कुछ समय रहने के बाद वह यहां से चला गया लेकिन पुनः सम्भल आ गया। यहां बीमार होने के बाद वह पुनः आगरा बुला लिया गया जहां वह ठीक हो गया तथा बाबर की मृत्यु हो गई। उसके बाद वह मुगल सिंहासन पर बैठा। उसके काल में सम्भल में कोई विशेष घटना नहीं घटी केवल यहां के मिर्जाओं ने विद्रोह किया जिसको मिर्जा असकरी को भेजकर दबा दिया गया। सम्भल सन् 1540 तक मुगल साम्राज्य का समृद्धिशाली अंग रहा।

सूरीवंश (1540–1555 ई.)

इस वर्ष मुगल बादशाह हुमायूँ को शेरशाह सूरी ने हराकर दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार कर लिया। सम्भल पर भी उसने अधिकार स्थापित करके नासिर खां को सूबेदार बनाया। नासिर खां बहुत ही कठोर शासक था अतः शीघ्र ही उसके स्थान पर ईसा खां कालकापुरी को नियुक्त किया गया। शेर शाह की

1545 में मृत्यु के बाद इस्लाम शाह के काल में ताज खां किरानी सम्भल के सूबेदार बनाए गए। इस्लाम शाह की 1553 ई. में मृत्यु के पश्चात लखनौर (वर्तमान शाहाबाद, जिला रामपुर) का राजा मित्र सेन कठेरिया सम्भल का यथार्थ में सूबेदार बन गया। सन् 1555 ई. में मुगल बादशाह हुमायूँ ने शक्ति अर्जित करके दिल्ली के सुरवंश के बादशाह को हराकर पुनः दिल्ली पर अधिकार स्थापित कर लिया। सम्भल का सुबेदार अली कुली खां शायवानी को बनाया गया।

हेमू के अधीन

हुमायूँ की मृत्यु के बाद मोहम्मद आदिल शाह के वजीर हेमू ने हुमायुं के सारे राज्य पर आक्रमण करके उसको अपने अधिकार में ले लिया तथा सरहिन्द से ग्वालियर तक उसका राज्य स्थापित हो गया और वह हेमू विक्रमादित्य के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठ गया। सम्भल भी उसके अधिकार क्षेत्र में आ गया। लेकिन उसका राज्य स्थाई न रह सका। शीघ्र ही पानीपत के युद्ध में हुमायूँ के पुत्र अकबर की सेनाओं से हार गया और मारा गया। दिल्ली पर पुनः मुगल साम्राज्य की हकूमत प्रारम्भ हो गई।

अकबर काल (सन् 1556–1605)

सम्राट अकबर के शासन के प्रारम्भ समय सन् 1556 ई. से लेकर सन् 1632 ई. तक, जब मुरादाबाद को सूबा बनाया गया सम्भल मुगल साम्राज्य का प्रमुख सूबा–मुख्यालय बना रहा। इसके अधीन वर्तमान रुहेलखण्ड का सभी क्षेत्र आता था तथा इसका फैलाव लखनऊ की सीमाओं तक था। इस समय सम्भल का सूबेदार अली कुली खां शायवानी या जिसने हेमू विक्रमादित्य के मुकाबले पानीपत के युद्ध में अकबर की सेनाओं को विजय प्रदान कराने में महती भूमिका निभायी थी। इसी के पुरस्कार स्वरूप उसको मुगल दरबार से खाने जमां की उपाधि (खिताब) से सम्मानित किया गया था। सम्भल मुगल साम्राज्य के सबसे बड़े सूबों में से एक था। उसके तीन सम्भाग–सम्भल, चांदपुर एवं लखनौर थे। कठेर प्रांत पर यहीं से नियंत्रण होता था। अकबर के काल में अली कुली खां खान जमा, मिर्जा सुल्तान मोहम्मद, मुइउद्दीन खां फरनखुदी, हुसैन खां टुकड़िया, सैद खां चगटई, कुलीज खां अन्दाजानी, मिर्जा मुजफ्फर हुसैन एवं मिर्जा अलीबेग सम्भल के प्रमुख सुबेदार रहे।

सम्भल सूबे का वित्तीय बन्दोबस्त–

सम्राट अकबर के नवरत्न राजा टोडरमल ने पूरे साम्राज्य की आर्थिक लगान व्यवस्था सुचारु रूप से व्यवस्थित की। उसकी नीति के अनुसार सम्भल का भी नए सिरे से बन्दोवस्त किया गया। वर्तमान रुहेलखण्ड के जिले उस समय सम्मल सूबे में आते थे। उन सभी को 47 परगनों में विभाजित किया गया। उनकी सेना पैदल, घोड़े हाथी निर्धारित किए गए। समस्त भूमि की बीघों में नाप कराई गई। उन पर सरकारी टैक्स उस समय की मुद्रा दाम में निश्चित किया गया।

पुस्तक आइने अकबरी में व्यवस्था का विस्तृत वर्णन है इसके लेखक अबुल फजल के अनुसार सम्भल सरकार के 47 महाल (परगने) थे जिनका वर्णन अगले पृष्ट पर है।

सन् 1605–1742 ई.

जहांगीर के काल में सम्भल का सुवा अपने अस्तित्व में रहा लेकिन शाहजहां के काल में चौपाला के स्थान पर मुरादाबाद नगर की स्थापना की गई जो कि उसके काल में तथा औरंगजेब के काल में महत्वपूर्ण स्थान हो गया। सम्भल उप–सुबा बना दिया गया अब यह क्षेत्र जो वर्तमान में रुहेलखण्ड कहलाता है मुरादाबाद– सम्मल एवं बरेली से नियंत्रित होने लगा। लेकिन सम्भल को ज्यादा महत्व दिया जाता था। इस काल में रुस्तम खां दक्खनी, मोहम्मद कासिम खां सम्भली, राजा मकरन्द राय एवं अमीनुद्दौला यहां के प्रमुख सुबेदार हुए।

सन् 1742–1947 ई.

अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही मुगल साम्राज्य कमजोर होने लगा। रुहेलखण्ड क्षेत्र में जगह जगह जमींदार स्वतंत्र हो गए तथा स्वतंत्र रूप से शासन करने लगे। नाम मात्र को मुरादाबाद का फौजदार उन पर नियंत्रण रखने के लिए दिल्ली दरबार की ओर से नियुक्त था जिसको यह जमीदार कभी मालगुजारी दे देते थे कभी नहीं। यह जमीदार अपनी सत्ता एवं प्रभुता के लिए आपस में संघर्ष भी करते रहत थे। इनके संघर्ष का लाभ उठाकर रोह क्षेत्र (अफगानिस्तान) से आए रुहेला पठानों ने यहां अपनी सत्ता स्थापित कर ली।

नवाब अली मोहम्मद खां रुहेला ने धीरे–धीरे यहां के जमींदारों को परास्त करके अपना शासन स्थापित कर लिया तथा सन् 1742 ई. में मुरादाबाद के सूबेदार

जंग को खत्म नहीं करेंगे इसलिए उन्हें लखनऊ भेज दिया। दूसरे दिन 29 नवम्बर 1794 ई. को नवाब नसरुल्ला खां ने बाकायदा समझौता कर लिया और एक आरजी मोआयदाह तहरीर हो गया जिसके तहत तीन लाख इक्कीस हजार अशर्फियां अंग्रेज जनरल के सुपुर्द कर दी गई। दिसम्बर के पुख्ता मुआयदाह के मुताबिक नवाब मोहम्मद अली खां के कमसिन बेटे अहमद अली खां की मसनद नशीनी अमल में आई तथा उनके नायब नवाब नसरुल्ला खां मुकर्रर किए गए।

नवाब फैजउल्ला खाँ की कोशिश से पौने पन्द्रह लाख की आमदनी बाइस लाख तक पहुंच गई थी। इस सन्धि के अनुसार ग्यारह लाख आमदनी का इलाका जब्त हो गया। परगना लखनौर विसभूल शहर रामपुर, तहसील रामपुर परगना राजपुर (तहसील बिलासपुर) और अकबराबाद का एक छोटा परगना जो अब तहसील स्वार में है बरकरार रहा और वह रामपुर रियासत कहलाया। इस बख्त रामपुर का सम्बन्ध अवध की नवाबी से ही रखा गया लेकिन सन् 1801 में अंग्रेजों के रुहेलखण्ड पर कब्जे के बाद रियासत रामपुर का सम्बन्ध अंग्रेजी हुकूमत से हो गया।

नवाब अहमद अली खाँ (शासनकाल 1794–1840 ई०)

आप नवाब मोहम्मद अली खाँ के पुत्र थे। आपका जन्म 1785 ई., राज सिंहासन 29 नवम्बर 1794 ई. को हुआ। आप कम उम्र में नवाव बने। नायब रियासत नवाब नसरुल्ला खाँ थे जिनकी मृत्यु 1810 ई. में हुई।

नवाब मोहम्मद सईद खाँ (शासनकाल 1840–1855 ई०)

आप नवाब गुलाम मोहम्मद खाँ के पुत्र थे। आपका जन्म 1786 ई. राज सिंहासन 20 अगस्त 1840 ई. शासनकाल 15 वर्ष रहा। नवाब अहमद अली खाँ के कोई पुत्र न होने के कारण आप रियासत के नवाव बने।

नवाब यूसुफ अली खाँ (शासनकाल 1855–1865 ई०)

आप नवाब मोहम्मद सईद खाँ के पुत्र थे। आपका जन्म 5 मार्च 1816 ई. राज सिंहासन 1 अप्रैल 1855 ई., शासन 10 वर्ष रहा। आपका दरवार विद्वानों से भरा रहता था।

नवाब कल्वे अली खाँ (शासनकाल 1865–1887 ई०)

आप नवाब यूसुफ अली खाँ के पुत्र थे। आपका जन्म 19 अप्रैल 1835 ई., राज सिंहासन 21 अप्रैल 1865 ई. राज्यकाल 22 वर्ष 7 माह रहा।

रियासत कालीन विशिष्ट विभूतियां

नवाब नसरूल्ला खां

रुहेलखण्ड रियासत के संस्थापक नवाब अली मोहम्मद खां के बड़े बेटे नवाब अब्दुल्ला खां के नवाब नसरुल्ला खां बेटे थे। आपका जन्म आंवला में सन् 1747 ई मुताबिक 1161 हिजरी में हुआ था। रुहेलखण्ड रियासत के विभाजन के पश्चात नवाब अब्दुल्ला खां को उझानी सहसवान तथा सादातपुर की जागीर मिली थी जिसके वह सन् 1767 ई. तक नवाब रहे। उनकी मृत्यु के बाद नवाब नसरुल्ला खां वहां के नवाब बने जो कि सन् 1774 तक नवाब रहे। इस वर्ष फतेहगंज पूर्वी पर रुहेलों एवं अंग्रेज तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ युद्ध में नवाब नसरुल्ला खां बहुत दिलेरी से लड़े लेकिन इसमें रूहेलों की पराजय के बाद अपने चाचा नवाब फैजउल्ला खां के साथ लाल डांग चले गये। वहां की संधि के पश्चात रामपुर रियासत की संस्थापना हुई तब रामपुर गए तथा उनके साथ ही रहने लगे।

सन् 1794 के अंग्रेजों के आक्रमण में नवाब नसरुल्ला खां ने बहुत योग्यता का परिचय दिया। अंग्रेज लोग रामपुर रियासत पर अपना अधिकार करना चाहते थे लेकिन नवाब नसरुल्ला खां के प्रयासों से रियासत अपने अस्तित्व में रही। जंग–दो जोड़ा के पश्चात संधि हुई जिसमें नवाब अहमद अली खां रामपुर के नवाब बने नवाब अहमद अली खां की उम्र उस समय लगभग 9–10 वर्ष ही थी इसलिए नवाब नसरुल्ला खां नायब नवाब बनाए गए। उनको मदर अल महाम कहा गया। आपकी मृत्यु सन् 1810 मुताबिक 1225 हिजरी में हुई। वर्तमान कोठी खास बाग के पास आपका आवास बारह दरी के नाम से प्रसिद्ध था वहीं वह दफन किए गए। रामपुर में उनके नाम से बाजार नसरुल्ला खां अब भी मौजूद है जो उनकी याद को तरोताजा बनाए रखता है।

जनरल अजीम उद्दीन खां

नवाब कल्वे अली खां का देहांत होने के बाद उनके पुत्र मुश्ताक अली खां रामपुर के नवाब बने किन्तु वह बीमार रहते थे जिसके कारण राज्य चलाने का भार (चीफ मिनिस्टर) जर्नल अजीम उद्दीन खां को सौंपा गया। आप नवाब नजीवउद्दौला के परिवार के थे। आप आधुनिक शिक्षित थे एवं प्रगतिशील विचार रखते थे। उन्होंने रामपुर राज्य को नवीन विचारों के साथ प्रगति की ओर बढ़ाया। सरकारी

नवाब मोहम्मद मुश्ताक अली खाँ (शासनकाल 1887 1889 ई०)

आप नवाब कल्वे अली खाँ के पुत्र थे। आपका जन्म 1875 में हुआ था। आप अस्वस्थ रहा करते थे जिसके कारण राज्य के चीफ मिनिस्टर जनरल अजीमुद्दीन खां ने शासन चलाया।

नवाब हामिद अली खाँ (शासनकाल 1889–1930 ई०)

आप नवाब मुश्ताक अली खाँ के पुत्र थे। आपका जन्म 31 अगस्त 1875 को हुआ था। सन् 1893 में मौलाना फर्रुखी और मिस्टर काल्विन के साथ नवाब हामिद अली खाँ यूरोप गए।

नवाब रजा अली खाँ (शासनकाल 1930–1949 ई०)

आप नवाब हामिद अली खां के पुत्र थे। आपका जन्म 17 नवम्बर 1906 ई. को हुआ था। भारत के अंग्रेजी राज्य में स्वतन्त्र होने के बाद देशी रियासतों का भारत संघ में विलय हुआ तब आपने सबसे पहले अपनी रियासत के विलय की घोषणा की। आपने जो आदेश विलय के बारे में जारी किया उसके शब्द निम्न प्रकार हैः–

''हमने भारत सरकार की वफादारी और अपनी जनता की उन्नति के कारण रामपुर राज्य का 1 जुलाई सन् 1949 ई. में केन्द्रीय राज्य में सम्मिलित करना स्वीकार कर लिया है।''

– गजट रियासत रामपुर 17 मई 1949 ई.

रामपुर रियासत के विलय के बाद भारत सरकार की ओर से नवाब रजा अली खां को विशिष्ट सुविधाएं एवं प्रीवी पर्स आदि प्रदान किया गया। नवाब साहब ने रियासत के विलय करा देने के बाद भारत पाक विभाजन के समय पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों को अपने यहां बसाने का स्वयं प्रस्ताव किया तथा उनके रहने के लिए रामपुर में विभिन्न स्थान एवं भरपूर आर्थिक सहयोग देकर जनता के प्रति अपनी सहृदयता का परिचय दिया।

नवाब रजा अली खां 6 मार्च सन् 1966 ई. तक जीवित रहे। आपके बाद आपके बेटे नवाब मुर्तजा अली खां को वह सभी विशिष्ट सुविधाएं एवं प्रीवीपर्स आदि जो आपको मिलते थे, भारत सरकार ने प्रदान किए जो कि प्रीवी पर्स समाप्त होने सन् 1972 ई तक जारी रहे।

कुतुबखाने की इनके समय में बहुत तरक्की हुई। विशेषज्ञों को एकत्रित करके संचालक मण्डल बनाया इसका अलग से बजट दिया गया। आपकी कोशिश से रामपुर में एक स्टेट काउंसिल कायम की गई। राज्य का कार्य चलाने को जनता में से मंत्री नियुक्त किए गए। आपके प्रयासों से रामपुर में जनता राज्य कायम हुआ लेकिन दुर्भाग्यवश जर्नल साहब अपने प्रगतिशील विचारों को पूरी तरह से साकार नहीं कर पाए तथा 13 अप्रैल सन् 1891 को एक षडयंत्र में उनकी मृत्यु हो गयी। उनका मकबरा बाजोड़ी टोला रामपुर में है।''

रियासत कालीन (1774–1949) सांस्कृतिक उन्नति

नवाब अली मोहम्मद खां के जमाने से ही यहां के लगभग सभी नवाब साहित्य प्रेमी थे वह खुद भी शायर थे तथा साहित्यकारों एवं शायरों को उन्होंने सदैव प्रोत्साहन दिया जिससे रामपुर का अदब तथा तहजीब प्रसिद्ध हो गयी। नवाब फैजउल्ला खां के बड़े भाई नवाब अब्दुल खां जो उझानी तथा सहसवान के नवाब थे खुद एक बहुत अच्छे शायर थे 'आसी' उपनाम लिखते थे। आपकी रचनाऐं रजा लाइब्रेरी में सुरक्षित है। नवाब फैजउल्ला खां के छोटे भाई मोहम्मद यार खां अमीर उपनाम से शायरी लिखते थे। सन् 1774 ई जब रुहेले नवाब अवध से युद्ध में हार गए तब नवाब शुजाउद्दौला यहां से 50 सन्दुक भरकर पुस्तकें लखनऊ ले गया था। नवाब फैजउल्ला खां के समय से लेकर रजा अली खां तक लगभग सभी नवाब शायरी करते थे। रामपुर रियासत के दरबार से पुरस्कार एवं वजीफा लेने विदेशों तक से विद्वान आते थे। रामपुर रियासत की तरफ से विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों का अनुवाद अन्य भाषाओं में कराया गया। यहां के नवाबों ने अनेकों मदरसे खुलवाए। इनके यहां हिन्दी भाषा के कवियों का भी सम्मान था। इनके काल में विभिन्न पुस्तकें लिखी गई। जब अंग्रेजी शिक्षा का युग आया तब रियासत की तरफ से अनेक कालेज खोले गए तथा ज्ञान एवं साहित्य को प्रोत्साहन दिया गया। शिक्षा साहित्य और साहित्यकार ही नहीं स्टेट की तरफ से संगीत, गाने, नोहे, ड्रामा आदि को भी बढ़ावा मिला।

रामपुर के नवाबों ने संगीतज्ञों, कलावन्तो, विद्वानों, शायरों तथा कवियों को विशेष रूप से संरक्षण प्रदान किया तथा सभ्यता, संस्कृति एवं कला साहित्य से सम्बंधित जो भी सामग्री उनको प्राप्त हुई उसको सम्हालकर सजेहा जिसका प्रमाण विदेश एवं भारत की विभिन्न शैलियों के कला चित्र, हाथी दांत की अत्यन्त महीन प्लेट पर सम्राट अकबर तथा उनके नवरत्नों का बड़ा अनूठा चित्र, सुन्दर कला की पुस्तकें, अरबी, फारसी तुर्की, पश्तो उर्दू, गुजराती, तमिल, तेलगू, संस्कृत, हिन्दी भाषा में चमड़े व कागज की लिखी पुस्तकें, चमड़े पर लिखा कुरआन शरीफ आदि है जो रामपुर रजा लाइब्रेरी में सुरक्षित रखे हुए है।

रामपुर रियासत के प्रारम्भिक नवाबों ने भी सांस्कृतिक महत्व को समझा तथा समुचित प्राश्रय प्रदान किया। सन् 1857 की क्रान्ति के पश्चात तो उत्तरी भारत की स्थिति ही बदल गयी। बहुत सी रियासतें समाप्त हो गई तथा दिल्ली के मुगल साम्राज्य का भी अन्त हो गया। यहां के सभी कलावन्त तथा साहित्यिक प्रतिभाएं रामपुर आ गई जहां उनको पूरा आश्रय प्राप्त हुआ। रामपुर की और अधिक सांस्कृतिक उन्नति हुई। यहां की प्रशंसा में उर्दू गजल के आला मुकाम मिजां असद उल्ला खां गालिब ने इस शहर पर एक शेर लिखा है।

रामपुर अहले नजर की है नजर में वह शहर।

कि जहां हश्त बहिश्त आर्के हुए हे वाहम।।

रियासत कालीन भवन निर्माण

नवाब फैजउल्ला खां के समय से ही रामपुर में भवन निर्माण प्रारम्भ हो गया। उन्होंने शाहबाद एवं रामपुर दोनों जगहों पर मस्जिद एवं मदरसों का निर्माण कराया। नवाब अहमद अली खां को इमारतें बनवाने का बहुत शौक था। बाग बेनजीर में कोठी बेनजीर व बद्रे मुनीर (1816) ई. उनकी पूर्ण स्मृतियां हैं। रामपुर के संस्थापक नवाब फैजउल्ला खां जिस हवेली में रहते थे उसको बहुत आलीशान कोठी में त्रिपोलिया (जो अब फर्राशखाना है) दरे दौलत (जो मोती मस्जिद के पास था) तथा अपना मकबरा (ग्राम नानकार) खुद बनवाया था। नवाब कल्वे अली खां ने जामा मस्जिद को दोबारा तोड़कर बनवाया। सरकारी इमारतें अस्तबल, फील खाना (हाथी खाना) गऊखाना तथा फर्राशखाना व कई बाजार तामीर करवाये। रामपुर की पहली नुमायश बेनजीर बाग में मार्च 1866 ई. (जो बाद में गणेश घाट या फिर रामपुर बरेली रोड पर) में लगवाई। बाग बेनजीर के पास कदम शरीफ नाम की इमारत बनवाई (यहां पैगम्बर मोहम्मद साहब के पैर का निशान सुरक्षित

है) आपने खुसरों बाग तामीर करवाया (यहां अब रजा पोस्ट ग्रेजुऐट कालिज है)। नवाव हामिद अली खाँ को इमारते बनवाने का बहुत शौक था। उन्होंने अनेक भवन बनवाए। किले का निर्माण सन् 1902 ई. में करवाया। इन्जीनियर राइट का इन इमारतों को बनाने में बहुत योगदान रहा। राइट का स्टेचू किले के अन्दर बना हुआ है। पूर्व की तरफ का गेट राइटगेट तथा पश्चिम की तरफ का गेट हामिद गेट कहलाता है। किले में एक विशेष आकर्षण हामिद गेट के ऊपर लगी परी का भी है। यह परी नवाब अली मोहम्मद खां की सरहिन्द विजय के समय वहां से लाई गई थी। किले के अन्दर वह जगह भी है जहां रुहेलों का काफिला आकर रुका था जिसकी यादगार में नवाब अहमद अली खां द्वारा निर्मित कराया हुआ दरे दौलत भी है। नवाब हामिद अली खां ने खुर्शीद मन्जिल को दोबारा नए सिरे से बनवाया। यह बाद में हामिद मन्जिल कहलाई। यहां अब रजा लाइब्रेरी है। किले में ही एक जनाना व एक मर्दाना इमामबाड़ा बनवाया। जामा मस्जिद का भी पुनर्निर्माण कराया। नवाब हामिद अली खाँ के समय की बनी आलीशान इमारतें आज भी रामपुर शहर की रौनक को चार चांद लगा रही हैं।

नवाबी काल की अन्य मौजूदा इमारतों में रंग महल (रजा लाइब्रेरी का एक हिस्सा है) प्रिन्सेस पैलेस (यहां अब कचहरी है) कोठी खासबाग, कोठी बेनजीर रामपुर क्लब, बद्रे मुनीर, बेनजीरं गेट, सदर कचहरी, पुरानी तहसील, नवाब हामिद अली खाँ का स्टेचू भी प्रमुख उल्लेखनीय हैं। रियासत कालीन भवन अपनी वास्तुकला में अलग ही शान रखते हैं। वास्तुकला (फने–तामीर) के सिद्धान्तों के अनुसार ही रामपुर में भवन निर्मित किए गए यहां के भवनों के निर्माण में अष्ट कोणीय (हस्त पहल) सिद्धान्त कहीं न कहीं अवश्य प्रयोग किया गया है। नवाब हामिद अली खां के समय की इमारतें इण्डो योरोपीयन शैली में निर्मित की गई है जो अपनी शान और रौनक में अलग स्थान रखती हैं तथा उनके बनवाए हुए भवनों की इतनी प्रतिष्ठा है कि नवाब हामिद अली खां को रामपुर का शाहजहां कहा जाता है।

इन नवावी काल के स्मारकों के अतिरिक्त मोती मस्जिद कोसी पुल मस्जिद चरखवाली मस्जिद, दरोगा महबूब जान की मस्जिद, नवाब फैजउल्ला खाँ का मकबरा, नवाब मोहम्मद अली खां का मकबरा, मदरसा कोहना, मकबरा जनावे आलिया, मकबरा जनरल अजीमुद्दीन खां मजार सय्यद मुश्ताक मियां साहब (खुरमा वाले मियां), मजार मौलवी मुर्शद अहमद मुजददी साहब, मजार मौलवी जमालउद्दीन साहब, मजार शाहे बली उल्लाह साहब, कोठी सेफनी आदि इमारतें भी उल्लेखनीय है तथा अम्बेडकर पार्क एवं गांधी समाधि भी रामपुर की शोभा को बढ़ा रहे हैं।

गांधी जी की समाधि भारत मे केवल दो जगह है। दिल्ली में तथा एक रामपुर में गांधी जी की मृत्यु के बाद उनके पार्थिव शरीर की भस्मी (राख) चांदी के कलश में नवाब रजा अली खां रामपुर लाए। यहां पूरे नगर में हाथी पर रखकर घुमाया तथा गांधी समाधि निर्मित कराई। यह रामपुर के किले व नवाब साहब के निवास के ठीक बीच में है। जिस सड़क पर यह निर्मित की गई उसका नाम भी नवाब साहब के नाम पर राहे रजा है।

परी की शक्ल की मूर्ती यहां का आकर्षण है। नवाब फैजउल्ला खां के पिता नवाब अली मोहम्मद खां जब सरहिन्द के सूबेदार रहे तब यहां की विजय में प्राप्त यह स्टेचू लाए थे। यह उनके परिवार के पास सुरक्षित रहा। यह विजय की पहचान का प्रतीक नवाब हामिद अली खां ने जब रामपुर के किले का निर्माण कराया तब हामिद गेट के सबसे ऊपर लगवाया। यह सुनहरी धातु का बना है। लगभग छः फुट लम्बा है जिसका सर सूर्य की तरह तथा शरीर मछली की तरह है।

जनरल अजीम उद्दीन खां के मकबरे का गुम्बद रुहेलखण्ड के भवनों में 18 फुट व्यास का सबसे बड़ा गुम्बद है। यह भी अष्ट कोणीय (हस्त पहल) वास्तु कला के आधार पर निर्मित कराया गया है।

रामपुर की भूल भुलैया का भी जवाब नहीं है। यह नवाब अहमद अली खां का मकबरा है। इसका उन्होंने अपने पीर सय्यद हसन शाह तिरमिजी के लिए नानकार मे बनवाया था तथा खुद भी इसी में दफन हैं। इसमें आठ दरवाजे हैं और हर दरवाजे में चार चार कमरे हैं। इस तरह 64 दरवाजे हैं तथा यह इमारत अवध मुगल एवं रुहेला तीनों शैलियों की मिश्रित वास्तुकला से बनाई गई है।

रामपुर के दरवाजे अपना अलग महत्व रखते हैं। जब नवाब फैजउल्ला खां ने रामपुर आबाद किया था तब यह दरवाजे बनवाए थे। अधिकतर यह दरवाजे समाप्त हो गए हैं। इनमें चार दरवाजे बरेली गेट, नवाव गेट, खुसरो बाग गेट तथा बेनजीर गेट अब भी ठीक स्थिति में मौजूद हैं। इन गेट (दरवाजों) के अतिरिक्त रुहेला नवाबी काल के छोटे गेट मौजूद है जिनमें डूंगरपुर (जेलखाना) दरवाजा तोपखाना दरवाजा, देहली दरवाजा (तोपखाने के बिल्कुल आखीर में) नवाब दरवाजा शाहबाद (ईदगाह) दरवाजा प्रमुख है।

रामपुर के कुछ भवन जीर्ण शीर्ण हो गए हैं। इनकी मरम्मत व देखभाल बहुत जरुरी है।

रामपुर की महत्वपूर्ण इमारतों के कुछ चित्र

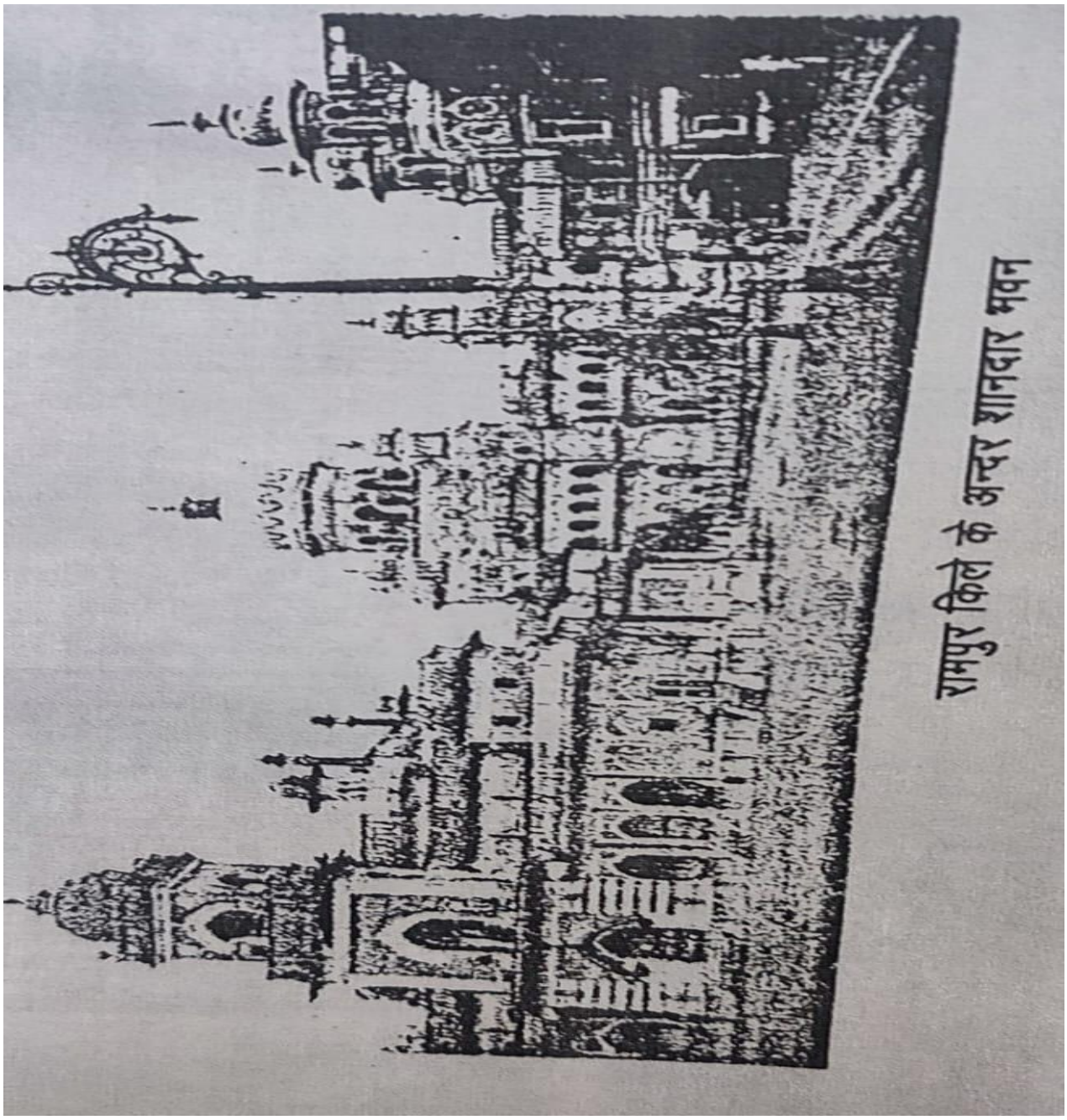

इस किले का निर्माण नवाब हामिद अली खाँ ने सन् 1902–4 में कराया था। इसका झरोखा, कलगी, हामिद मंजिल, दीवार, राइट गेट, रंगमहल आदि इमारतें देखने योग्य हैं।

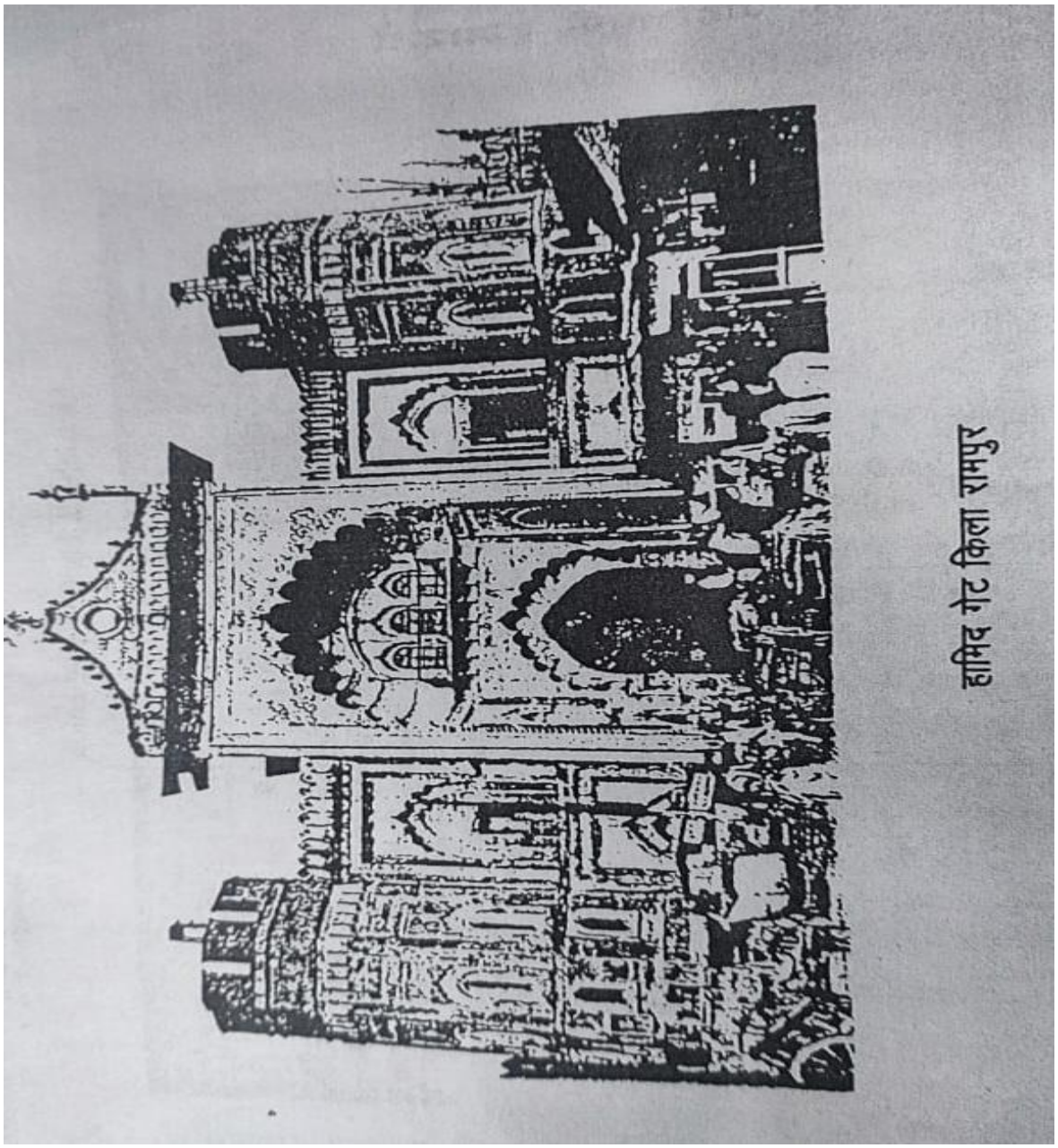

हामिद गेट किला रामपुर

इसके ऊपर परी का स्टैचू अष्ठ धातु का सुनहरी जैसा बना हुआ है जो कि रुहेला रियासत के संस्थापक नवाब अली मौहम्मद खाँ को सरहिन्द विजय में प्राप्त हुआ था जिसे नवाब हामिद अली खाँ ने किले के मुख्य द्वार पर लगवाया।

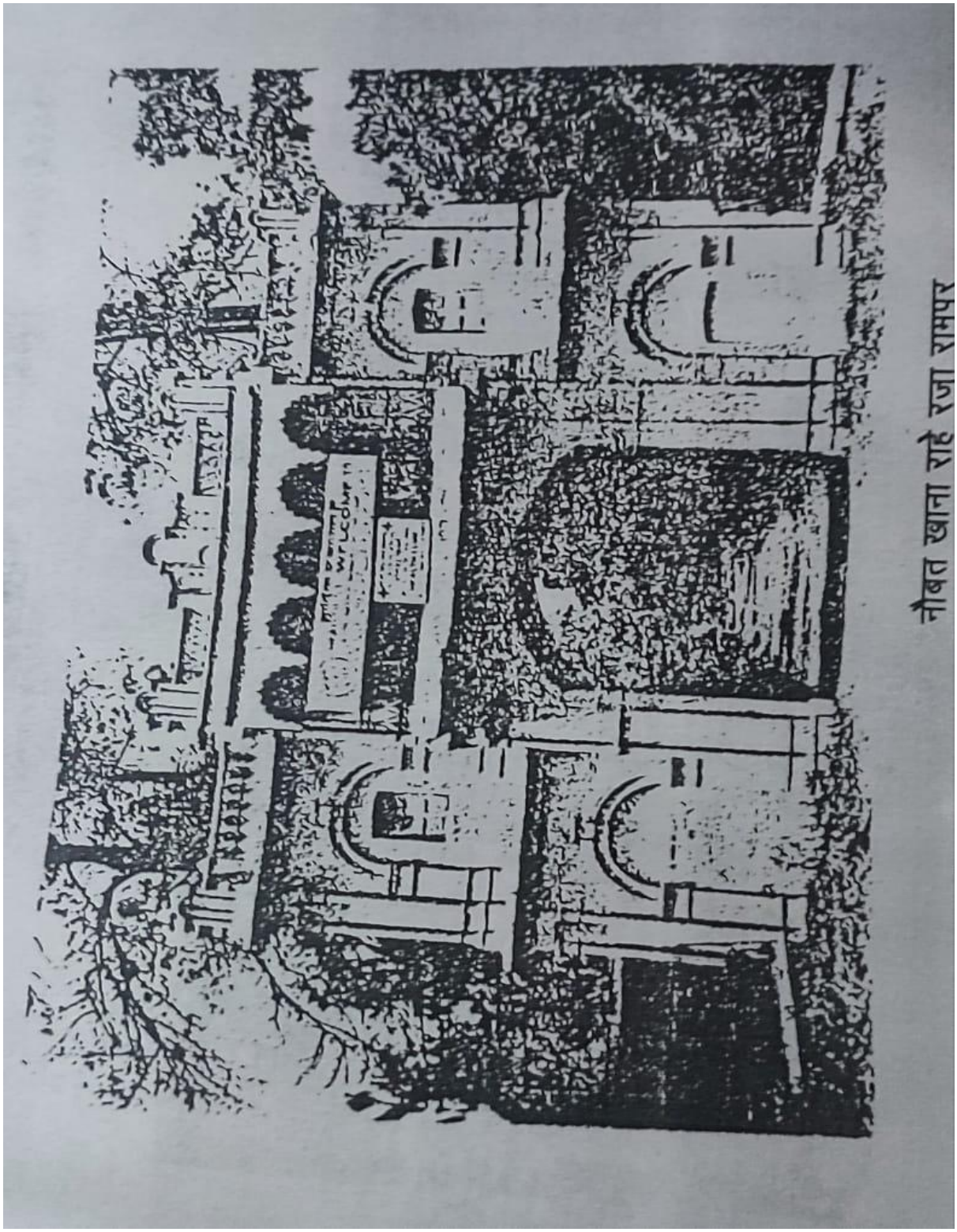

सुर्खी चूना, लखौरी एवं बड़ी ईट तथा देवदार की लकड़ी से बनी यह इमारत नवाब हामिद अली खाँ ने लगभग 1910 में बनवाई थी। यहाँ नवाबों की शान में प्रातः एवं सायं शहनाई (नौबत) बजती थी।

जनाब शाहिद अली सिद्दीकी के सौजन्य से।

रियासत कालीन रामपुर स्टेट का स्टेम्प पेपर

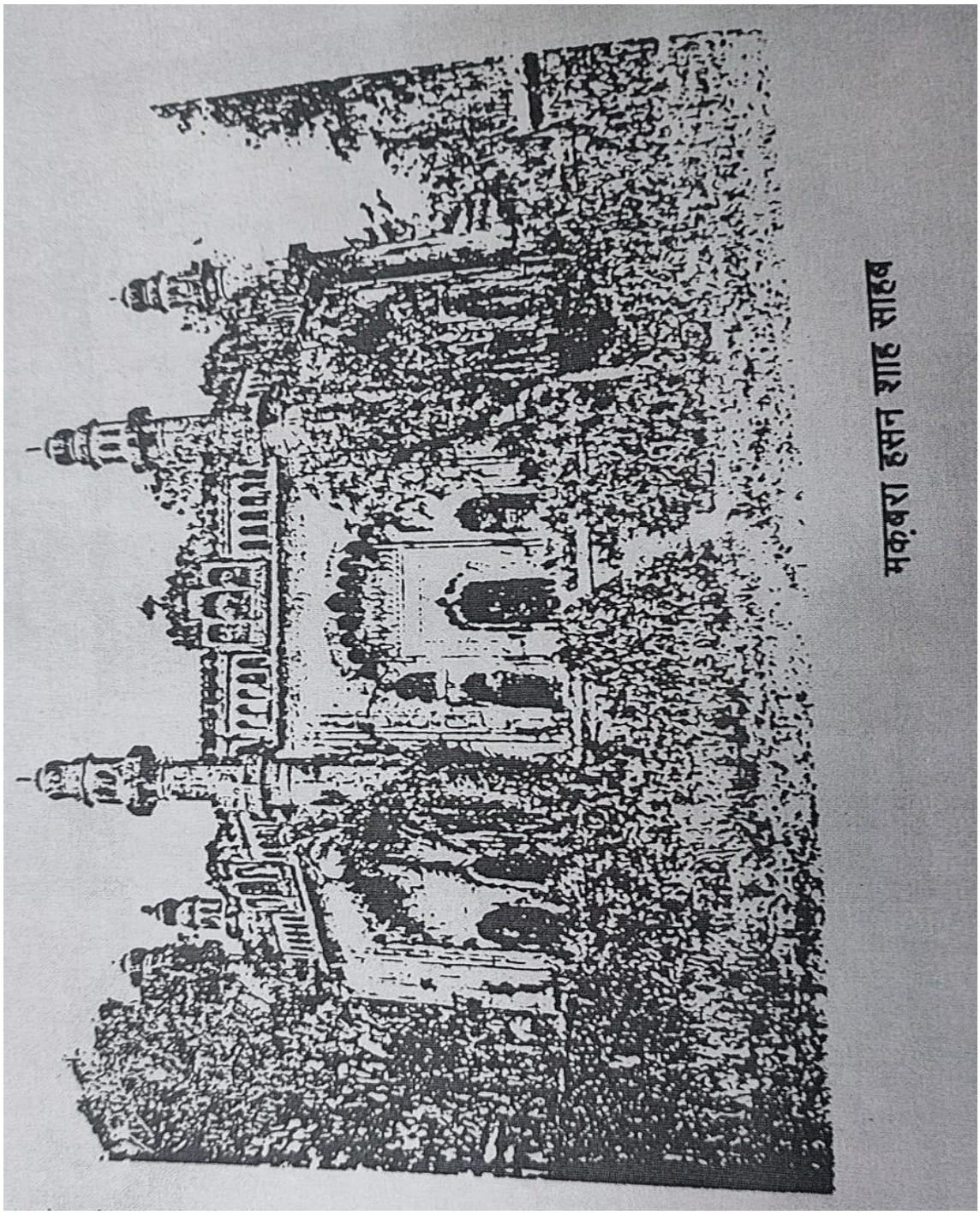

मक़बरा हसन शाह साहब

इसका निर्माण नवाब अहमद अली खाँ ने अपने पीर के लिए लगभग 1795 में कराया था। इसमें उनके पीर के साथ–साथ वह भी दफन हैं। यह मकबरा नानकार में है जो अब शहर में भी शामिल है।

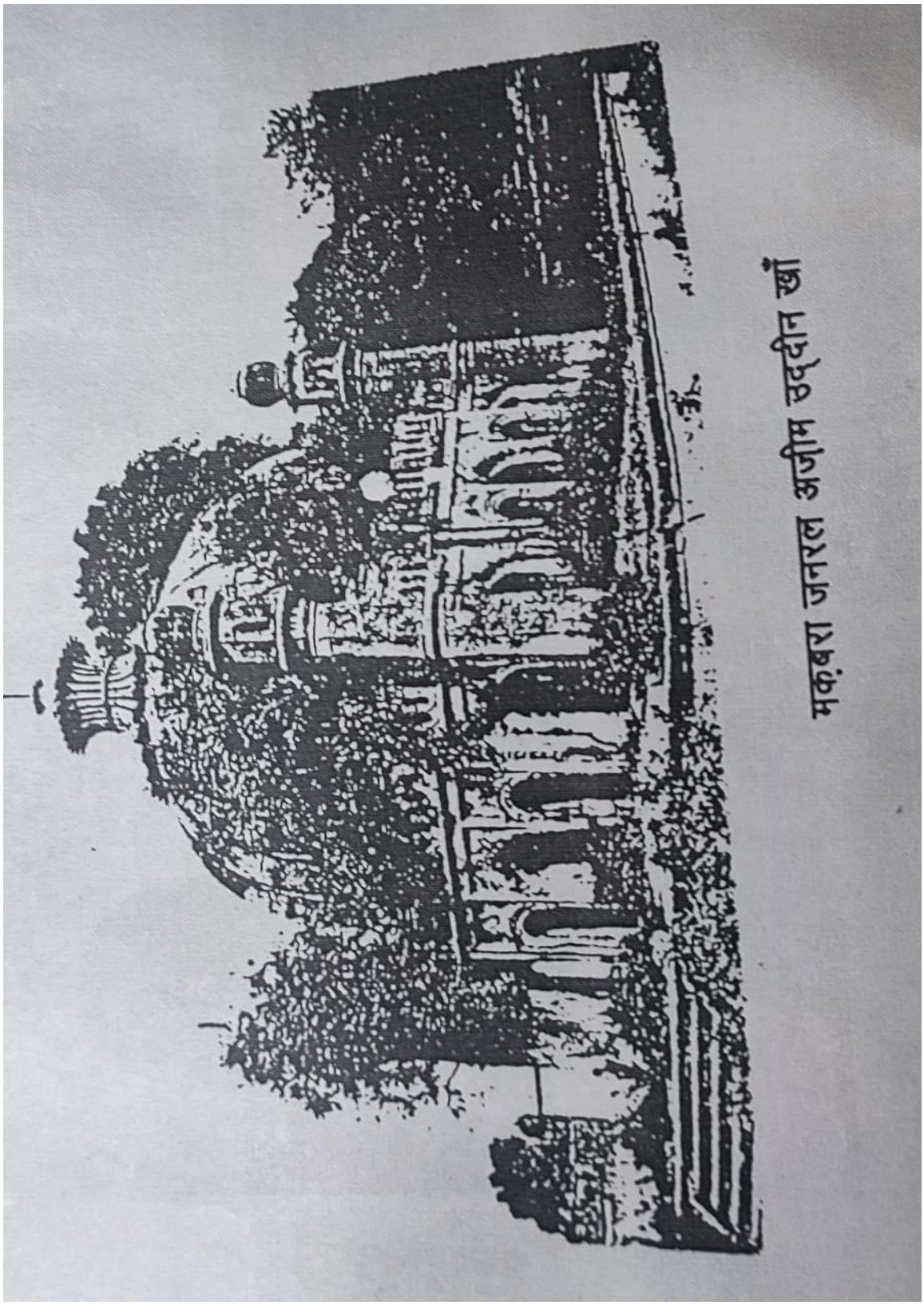

मक़बरा जनरल अज़ीम उद्दीन खाँ

मोहल्ला वाजोडी टोला रामपुर में यह मकबरा बनवाया गया। इसके जितना बड़ा गुम्बद अन्यत्र नहीं है।

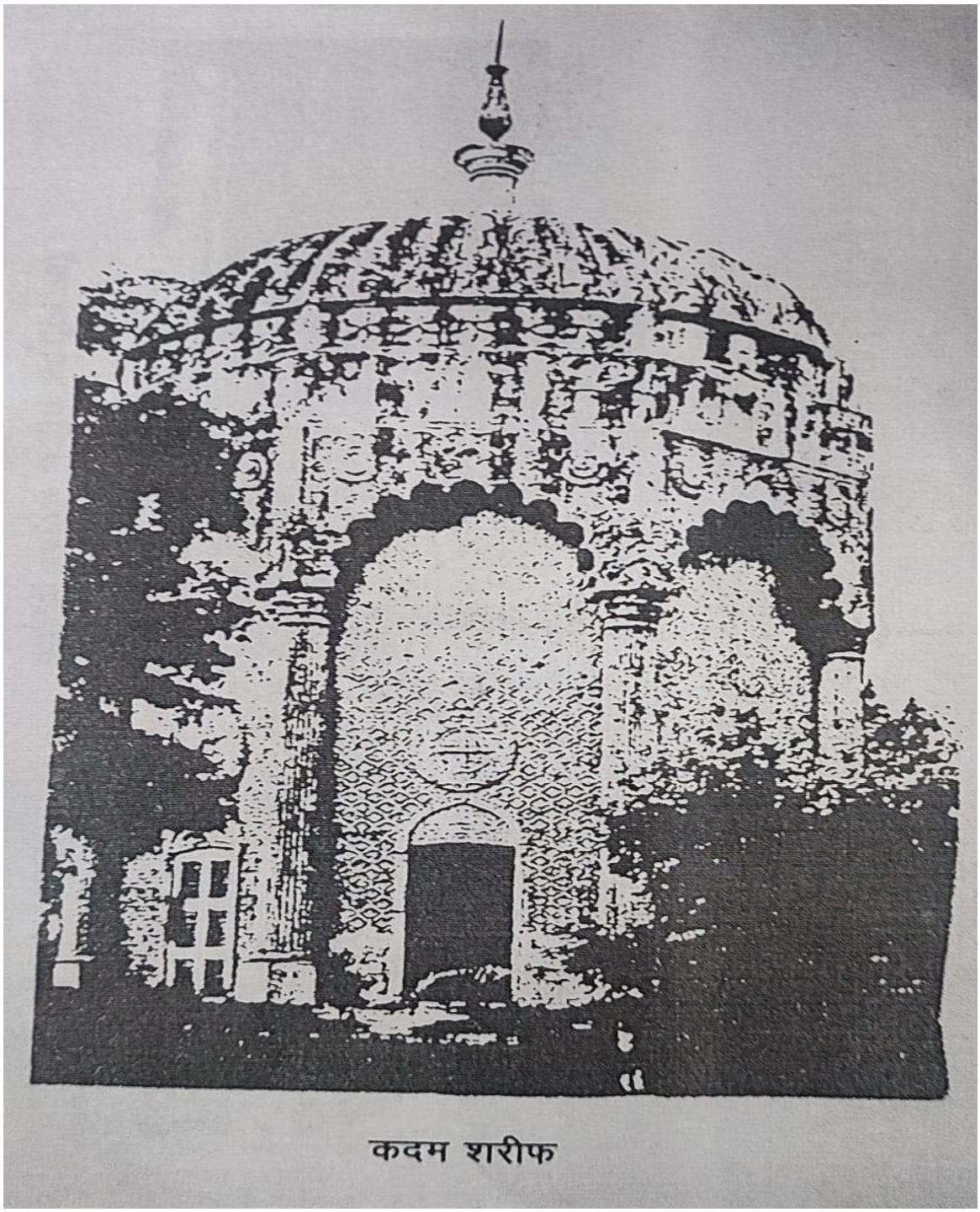

कदम शरीफ

यह इमारत नवाब कल्वे अली खाँ ने लगभग 1665 में बनवाई थी। यह रामपुर स्वार रोड पर कोठी बेनज़ीर के सामने ज़मीन से ही गुम्बद के रूप में हस्त पहलू से बनी है।

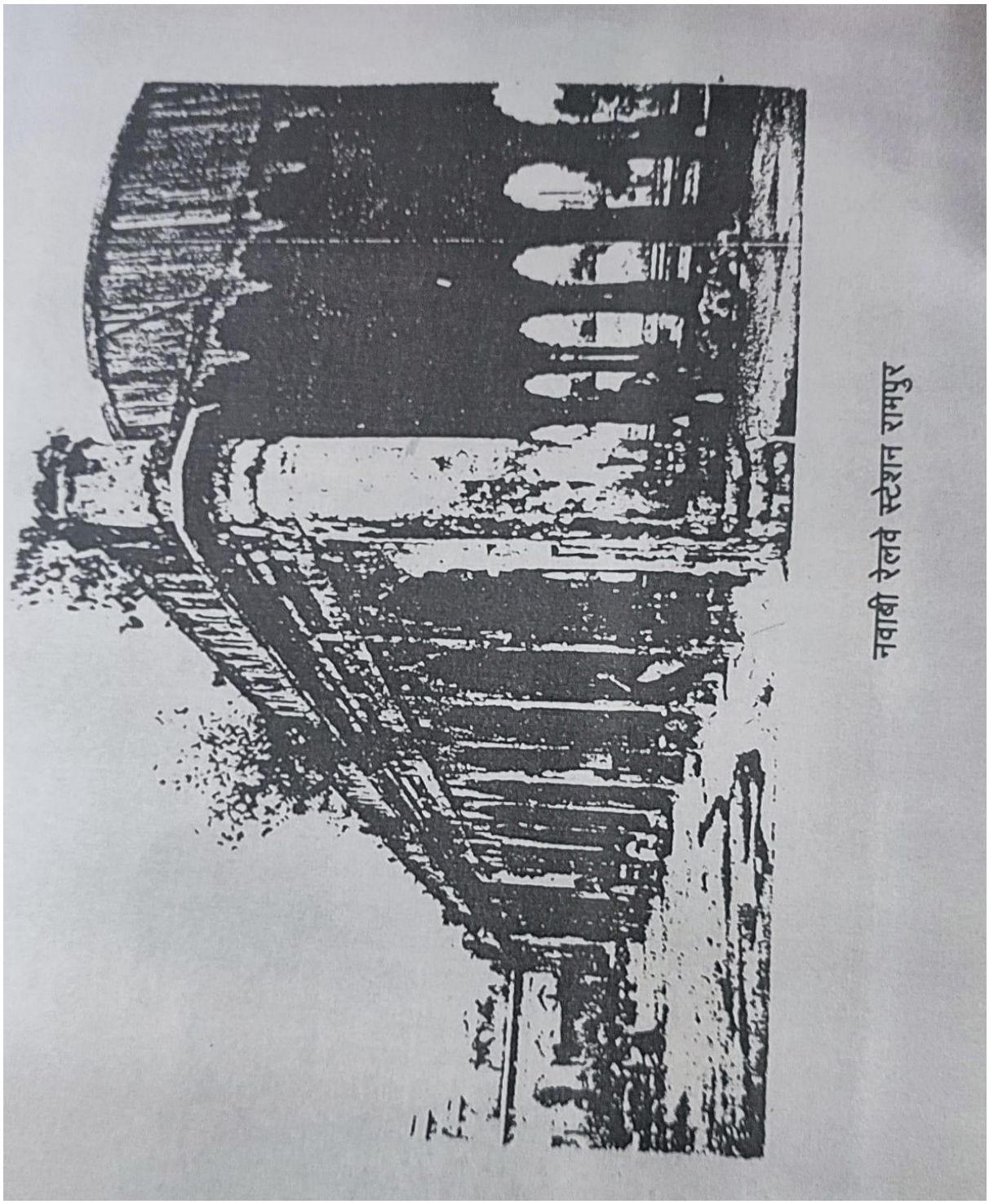

नवाबी रेलवे स्टेशन रामपुर

रामपुर रेलवे स्टेशन के निकट यह नवाबी रेलवे स्टेशन रामपुर स्टेट का था। नवाब की यात्रा यहां से स्पेशल सैलून में होती थी। विशेष अवसरों पर इसको सजाया जाता था। सन् 1894 में रेलवे लाइन बिछने के बाद इसका निर्माण 1905 ई. में पूर्व हुआ था।

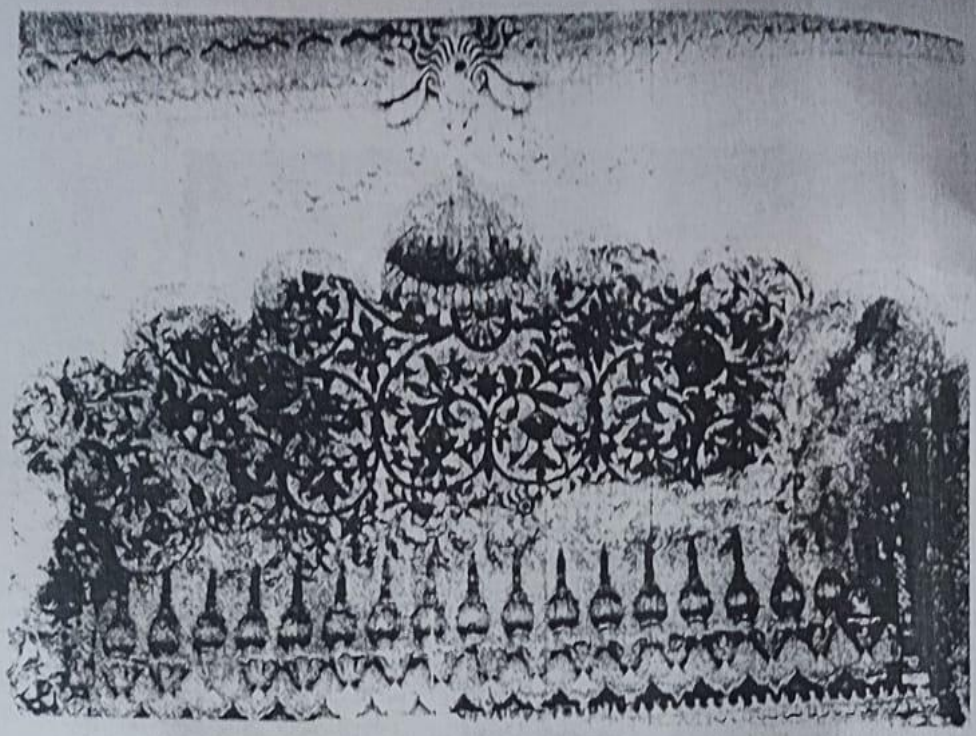

मकबरा हसन शाह साहब नानकार

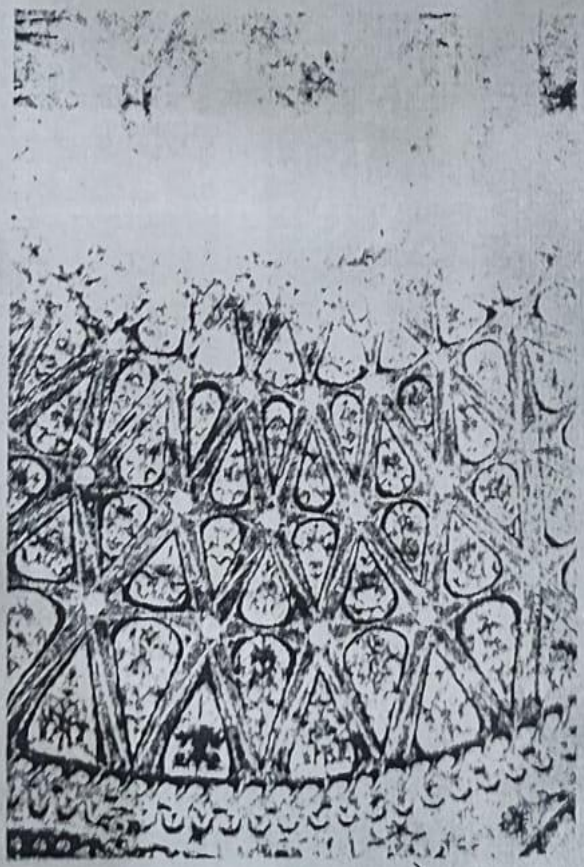

नक्काशी का अद्‌भुत नमूना–मकबरा हसन शाह साहब

चित्र–जुबैर शाह खान के सौजन्य से

रियासत कालीन आर्थिक एवं औद्योगिक उन्नति

रियासत रामपुर स्थापित होने के समय बाकी समस्त रुहेलखण्ड नया अवध के आधीन हो गया था। अवध के नवाब के प्रतिनिधि बरेली एवं मुरादाबाद में नियुक्त किए गए जिनके लिए यह सारा क्षेत्र एक अधीन क्षेत्र था जहां से केवल धन वसूलना ही उनका उद्देश्य था इस कारण यहां अराजकता थी लेकिन रामपुर में सुव्यवस्था शांति एवं समृद्धि थी। इस कारण अधिकतर लोग रामपुर में आकर बस गए। रामपुर में यहां के नवाबों ने अपने राज्य की जनता के प्रति उदार एवं अपनी रियाया की बेहतरी के लिए सुधारात्मक नीतियां अपनाई जिनके परिणाम स्वरूप यहां की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई तथा यहां खुशहाली रही।

अंग्रेजी हुकूमत में जब कल कारखाने लगने प्रारम्भ हुए तब रामपुर के नवाबों ने भी अपनी रियासत में उन्हें लगवाने की ओर कदम उठाए। सबसे पहले नवाब मोहम्मद सईद खां के काल में कारखाने लगे। नवाब मोहम्मद मुश्ताक अली खां के समय में यहां कपड़े एवं चीनी के बर्तनों के उद्योग की उन्नति हुई। नवाब हामिद अली खां तथा नवाब रजा अली खां के समय यहां विभिन्न कल कारखाने स्थापित हुए जिनमें कपड़े का कारखाना (रजा टैक्सटाइल्स) शुगर फैक्ट्री, फ्रूट फैक्ट्री, डिस्टिलरी, साइकिलों का कारखाना, प्लाईवुड का कारखाना, माचिस फैक्ट्री, सहकारी प्रिंटिंग प्रेस प्रमुख उल्लेखनीय है रियासत की तरफ से कारखाने लगाने वालों को भूमि एवं अन्य सुविधाएं प्रदान की गई जिससे उद्योगपति रामपुर की ओर आकर्षित हुए यहां विभिन्न उद्योग लगे जिससे रामपुर को छोटा कानपुर कहा जाने लगा था।

नवावी राज्य में छोटे स्तर पर भी रोजगार आसानी से उपलब्ध थे। नवाबों के पास अपनी सेना, अपना न्यायालय अपने राज्य के विभाग तथा कल कारखाने ये जिनमें रोजगार के अवसर आसानी से प्राप्त थे।

1 जुलाई सन् 1949 को रामपुर के भारत में विलय के पश्चात आर्थिक स्थिति में फर्क आया है। यहां के उद्योगों की कमी हो गई एवं कई कारखाने बन्द हो गए है जिनसे बेरोजगारी बढ़ गई है। वर्तमान में मोदी का फोटो कापी मशीन एवं कम्प्यूटर का कारखाना अपनी प्रगति पर है।

मौलाना मोहम्मद अली जौहर

आप रामपुर के एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन पर रुहेलखण्ड ही नहीं पूरे भारत को नाज है। आपने देश में आजादी की ऐसी मशाल जलाई जिसकी रोशनी सारी दुनियां

में हुई। आपके द्वारा चलाए गए सन 1921 के खिलाफत आंदोलन में सारे देश में आजादी के दीवानों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। महात्मा गांधी ने जौहर साहब की अगुवाई को माना और उनके साथ रहे।

रामपुर के गौरव जौहर साहब ने 10 दिसम्बर 1878 ई. को यहां की सरजमीं पर जन्म लिया। आपने प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करके इंगलैंड जाकर शिक्षा पाई। भारत लौट कर उच्च सरकारी नोकरी की लेकिन राष्ट्रभक्तिको भावना ने उनको उससे भी बहुत बड़े योगदान में लगा दिया और वह भारत को आजाद कराने लिए अंग्रेजों के विरूद्ध जंग में कूद पड़े। 19 नवम्बर सन् 1930 ई. में लन्दन में गोल मेज कान्फ्रेन्स में उन्होंने धुआंधार तकरीर की जिससे इस समय ब्रिटिश हुकूमत कांप गई। मौलाना ने फरमाया कि आज में जिस मकसद के लिए आया हूँ मैं अपने मुल्क को उन हालात में वापिस जाऊंया जब आजादी का परबाना मेरे हाथ में होगा। मैं गुलाम मुल्क में मरना भी पसंद नहीं करता। अपर आप मुझे आजादी नहीं देगे तो यहां कब्र की जगह देनी पड़ेगी। यह सच भी हुआ। जौहर साहब की मृत्यु जनवरी सन् 1931 में लंदन में ही हो गई। उनको बैतुल मुकद्दस (फिलिस्तीन) में दफना दिया गया।''

मौलाना मोहम्मद अली जोहर महान स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं एक मशहूर शायर, ओजस्वी वक्ता एवं निर्भीक पत्रकार भी थे।

उनके साथ–साथ उनके भाई शौकत अली का भी भारत की आजादी के लिए बहुत बड़ा योगदान है। दोनों लोग भारत की आजादी के इतिहास में सदैव अली बन्धुओं के नाम से याद किए जाते हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन

देश के स्वत्रता संग्राम में रामपुर भी पीछे नहीं रहा है। यहां के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में भी इस महान यज्ञ में विशेष योगदान दिया है। खिलाफ आदोलन के समय महात्मा गांधी रामपुर पधारे थे तथा अली बन्धुओं के घर पर ठहरे थे तभी से रामपुर जनपद में राजनैतिक समृति को एक लहर दौड़ गई थी।

सन् 1934 में बिहार के भूकम्प के समय यहां के जनतांत्रिकों समाज सेवियों ने रामपुर से विशेष सहयोग प्रदान कराया जिसमें श्री शांति शरण की विशेष भूमिका रही। सन् 1942 में जब महात्मा गांधी ने आगा खां महल में उपवास रखना प्रारम किया तब रामपुर में जन्मे दो नवयुवको श्री सतीश चन्द्र गुप्ता तथा श्री नन्दन् प्रसाद ने बनारस में उपवास रखा जो उस समय वहां विश्वविद्यालय में पढ़ते थे। इन्होंने स्वतन्त्रता की

लड़ाई में अन्य गतिविधियों में भी विशेष भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उनको गिरफ्तार कर लिया गया तथा सन् 1945 तक लगभग दो वर्षों तक जेल में रखा गया।

अप्रैल सन् 1946 में अनाज की कमी होने के कारण किसानों से जबरदस्ती अनाज वसूल किया गया तब यहां उसका विरोध हुआ। श्री झण्डू सिंह एवं ठाकुरदास के नेतृत्व में किसान आंदोलन हुआ उसमें लगभग 20 हजार किसान प्रदर्शन करने आए।

इससे एक नई राजनैतिक चेतना उत्पन्न हुई तथा मई 1946 ई. में रामपुर में मजलिस–ए–इत्तेहाद नामक संस्था बनी जिसकी जागृति ने आगे चलकर नेशनल कांफ्रेंस को जन्म दिया जो आल इण्डिया स्टेट पीपुल्स काफ्रेंस से संबद्ध हुई। विचारों के प्रसार के लिए यह संस्था पैम्फलेट बांटती तथा सभाएं करती थी। इसके प्रयासों से यहां प्रजातंत्र एवं स्वतंत्रता की चेतना बढ़ी। इसमें कार्य करने वालों में सर्व श्री सतीश चन्द्र, राम भरोसे लाल, ओमकार शरण विद्यार्थी, शांति शरण, कृष्ण सरन आर्य, मौलाना अब्दुल वहाव खां, मौलाना अली हसन खां, रामेश्वर सरन गुप्त, फजलेहक खां, मुशव्वर अली खां, नबी रजा खां, नन्दन प्रसाद, पं. देवकी नन्दन वकील, रोधश्याम वकील ऊंचा गांव, परसुराम पाण्डे तथा घाटमपुर के राम सहाय सिंह का नाम उल्लेखनीय है। [12]

रामपुर रजा लाइब्रेरी

यह लाइब्रेरी दुनिया के प्रसिद्ध पुस्तकालयों में से एक है। इसमें अमूल्य प्राचीन पाण्डुलिपियों और कलाकृतियों का खजाना संरक्षित है। रामपुर रियासत के प्रथम नवाब फैजउल्ला खां (1774–1794) ने यहां दुर्लभ पाण्डुलिपियों तथा कलात्मक अवशेषों को संग्रहीत किया था। दूसरे नवाबों ने भी इस संग्रह को बढ़ाते हुए इसको विकसित किया। नवाब कल्बे अली खां की साहित्यिक एवं कलात्मक रुचि ने भी इस पुस्तकालय की कीर्ति को बढ़ाया। इन्होंने 1857 के बाद मुगल और अवध के बिखरे पुस्तकालयों से अपने कारिन्दों के माध्यम से अमूल्य कलात्मक कलाकृतियों तथा पाण्डुलिपियों को खरीदकर इस पुस्तकालय में सम्मिलित किया। अंतिम नवाब सर रजा अली खाँ (1930–1949) जिन्हें कला एवं संगीत में गहरी दिलचस्पी थी ने इस संग्रह को अदभुत रूप से बढ़ाया।

वर्तमान समय में इस पुस्तकालय को 15,000 दुर्लभ पाण्डुलिपियां एवं 60,000 किताबें संग्रहीत करने का गौरव प्राप्त है। इनके अतिरिक्त हजारों लघु चित्रों, इस्लामिक सुलेख के नमूनों, शताब्दियों पुराने ज्योतिष विद्या सम्बंधित उपकरणों तथा सैकड़ों कलात्मक कलाकृतियों से इस पुस्तकालय को राष्ट्रीय महत्व

प्राप्त है तथा यह भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संस्कृति विभाग के आधीन है और इसका संचालन रामपुर रजा लाइब्रेरी बोर्ड द्वारा होता है. जिसके अध्यक्ष महामहिम श्री राज्यपाल उत्तर प्रदेश हैं।

इस पुस्तकालय में 1955 में पाण्डुलिपियों एवं लघु चित्रों आदि के वैज्ञानिक विधियों से सुरक्षित करने हेतु एक संरक्षण प्रयोग शाला की स्थापना की गई है। जिस भवन में इस समय लाइब्रेरी स्थित है, उस भव्य भवन को नवाब हामिद अली खां ने सन् 1905 में अपना दरबार लगाने के लिए बनवाया था। यह शानदार इमारत इण्डो– योरोपियन निर्माण शैली का अदभुत नमूना है जिसके सौंदर्य के लिए सोने की नक्काशी की गई है।

रामपुर रजा लाइब्रेरी उच्च श्रेणी शोध कार्य का केन्द्र भी है। जहां देश विदेश के विद्वान और स्कालर आकर रिसर्च करते हैं। जिनके रहने सहने के लिए और फोटो कापी कराने की भी सुविधा यहां उपलब्ध है।

सौलत पब्लिक लाइब्रेरी

यह पुस्तकालय भी उच्चकोटि के पुस्तकालयों में आता है। इसकी स्थापना सन् 1934 में उस समय के नगर पालिका के चेयरमेन सोलत अली खां के विशेष प्रयासों से हुई थी। प्रारम्भ में इसका नाम कुतुबखाना आम रखा गया जो कि सन् 1938 में इसके संस्थापक की सेवाओं को देखते हुए उनके नाम पर सौलत पब्लिक लाइब्रेरी कर दिया गया। तब से इस लाइब्रेरी ने निरन्तर प्रगति की है।

वर्तमान में इस पुस्तकालय में 600 पाण्डुलिपियां (कल्मी किताबें) तथा 60 हजार छपी हुई किताबें हैं। इसका संचालन एक बोर्ड करता है। 14

ज्ञान मंदिर

इस पुस्तकालय का प्रारम्भ रामपुर के विद्या प्रेमियों, साहित्यकारों तथा विद्वानों ने किया था। सन् 1902 में श्री ओमानन्द, मास्टर लक्ष्मी नरायण, मास्टर उमराव सिंह एवं शाहू केसो शरण आदि उस समय के नवयुवकों ने प्रामिजिंग क्लब नामक संस्था की स्थापना की। समाज सुधार, साहित्यिक उत्थान एवं राजनैतिक चेतना जागृत करने के लिए इसी प्रकार की एक और संस्था 'स्काडट ब्वायज लाइब्रेरी' रामपुर में कार्यरत थी जिसमें डा. देवकी नन्दन, श्री रामेश्वर सरन गुप्ता, श्री कल्याण कुमार शशि आदि सक्रिय थे। कुछ समय पश्चात सन् 1930 ई. के आसपास दोनों

संस्थाओं का विधिवत विलय हो गया और तब इसे नाम दिया हिन्दू प्रामिजिंग स्काउट ऐसोसिएशन। इस एशोसियेशन के सदस्य अधिकतर राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत थे। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के आंदोलन से भावनात्मक रूप से जुड़ने के लिए पुस्तकें तथा समाचार पत्र पढ़वाने प्रारम्भ कर दिए।

सन् 1943 में राष्ट्रीय आंदोलन के एक कर्मठ सदस्य श्री ओंकार शरण विद्यार्थी के द्वारा एक अन्य संस्था '' लिटरेरी क्लब '' के नाम से प्रारम्भ की गई। इसमें आचार्य कैलाश चन्द्र देव बृहस्पति, प्रो. ईश्वर शरण सिंघल, श्री नन्दन प्रसाद, श्री रामावतार गुप्त, श्री विमल चन्द्र जैन आदि सम्मिलित थे। कुछ वर्ष पश्चात यह संस्था हिंदू प्रामिजिंग स्काउट एसोसिएशन आपस में विलीन हो गई तथा इसका नया नाम रखा ''ज्ञान मंदिर''।

सन् 1945 में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री सतीश चन्द्र गुप्त ज्ञान मंदिर से जुड़ गए। उस समय ज्ञान मंदिर साहू निरंकार शरण के निवास से संबद्ध था। इस समय स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर था। रामपुर के कर्मठ नवयुवक एवं जागरूक बुजुर्ग ज्ञान मंदिर के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जागृत कर रहे थे उनमें श्री राम भरोसे लाल ''भूषण'', श्री महावीर प्रसाद सक्सेना, प्रो. मुकुट बिहारी लाल, श्री कृष्ण शरण आर्य श्री राम भरोसे लाल (पुराना गंज) श्री शांति शरण आदि अधिक सक्रिय थे।

स्वतंत्रता के बाद ज्ञान मंदिर पुस्तकालय को प्रशासनिक एवं शिक्षा अधिकारियों से सहयोग प्राप्त होना प्रारम्भ हो गया। श्री कमला पति त्रिपाठी अपने शिक्षा मंत्री काल में यहां आए तथा ज्ञान मंदिर से प्रभावित होकर शिक्षा विभाग से वार्षिक अनुदान दिए जाने के आदेश दिए। सन् 1956 के आस पास जिला कलेक्टर श्री अमिय भूषण मलिक तथा श्री शिवराम सिंह के सहयोग से ज्ञान मन्दिर के लिए एवं बहुत बड़ा भवन प्राप्त हो गया। तब से यह ज्ञान संस्था निरन्तर प्रगति पर है। यहां पर उच्चाधिकारियों एवं मंत्रियों के भ्रमण होते रहे हैं। यह साहित्यिक सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं का केन्द्र रहा। इस समय इसमें लगभग 17000 पुस्तकें हैं। इसका संचालन एक समिति करती है। [15]

संगीत एवं चहारबैत

संगीत में रुहेलों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। रामपुर का रामपुर सहसवान घराना बहुत मशहूर था। अनेक प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीतज्ञ हुए हैं। पखावज वादन क्षेत्र में उस्ताद पं. अयोध्या प्रसाद जी महाराज, पं. कुदउ सिंह जी महाराज और वीणा वादक उस्ताद सादिक अली खां वीनकार और उस्ताद अली खां वीनकार

शास्त्रीय वादक हुए हैं। सबले के उस्ताद नासिर खां, उस्ताद करामत उल्ला था और उस्ताद अहमद जान थिरकवा विश्व प्रसिद्ध तबलावादक हुए हैं। नृत्य में अन और लच्छू महाराज यहां के विख्यात नर्तक हुए हैं। हारमोनियम में मास्टर इथेन अली तथा सरोद में हाफिज अली खां प्रख्यात सरोद वादक हुए हैं।

चहार बैत गाना और सुनना रुहेले पठानों का हमेशा से दस्तूर रहा है। इस कला को रुहेले जब भारत में आए साथ लाए थे। शुरु में यह पश्तो जुबान में गाई जाती थी लेकिन बाद में उर्दू में गाई जाने लगी और अब तो मुकम्मल उर्दू में ही गाई जाती है। कुछ शायरों ने हिन्दी जुबान में भी चाहरबैत लिखी है जैसे असद रामपूरी की चहारबैत हैः–

मैं प्रेम पुजारी हूं मेरी मन्दिर तेरा घर है।

मुख मेरा उसी ओर मेरा यार जिधर है।।

आज कल हिन्दोस्तान और पाकिस्तान में जितने भी चहारबैत के अखाड़े है उनका रामपुर केन्द्र है। चहारबैत एक ऐसा लोक गीत है जो वाद्य यन्त्रों का मोहताज नहीं है। इसमें केवल दफ का ही प्रयोग किया जाता है। जब आमने सामने बैठकर दफ पर चहार बैत का मुकाबला करते हैं तो जंग सा समां बन जाता है दफ पर जो ताल बजायी जाती है उसे पश्तो ताल कहते हैं।

जो सात मात्रा की ताल होती है। चहारबैत के गायन में आशिक महबूब, गुलो बुलबुल, शमा परवाना, सहरा गुलिस्तां, गरज कि हर तरह का मजमून बांधा जा सकता है। रामपुर में चौदह चहार बैत के अखाड़े हैं। इनके अलावा मुरादाबाद, चांदपुर, बिजनौर, भोपाल, टोक (राजस्थान) तथा करांची (पाकिस्तान) में भी चहारबैत के अखाड़े मौजूद है। यह आल इण्डिया रेडियो से पठानी राग के नाम से गाई जाती है। रामपुर में तो चहार बैत के कई प्रोग्राम होते हैं।[16]

चहार बैत पर पहली किताब श्री शब्बीर अली खां शकेव द्वारा लिखी गई है। एवं मौसीकी का रामपुर सहसवान घराना पर भी आपने पुस्तक लिखी है। विस्तृत जानकारी के लिए इन पुस्तकों को देखा जा सकता है।

ज्ञान एवं साहित्य

रामपुर में कुछ विभूतियां ऐसी हुई है जिनका यहां के साहित्य योगदान में विशेष महत्व रहा है। इनमें कायम चांदपुरी का नाम सबसे पहले आता है जिन्होंने रियासत रुहेलखण्ड के समय में ही अत्यन्त प्रसिद्धि पायी थी। फारसी एवं पश्तो जुबान के बहुत बड़े शायर काजिम अली खाँ 'शैदा' भी रामपुर में ही रहे तथा यहीं उनकी मृत्यु हुई।

नवाब यूसुफ अली खां के काल में जनाब अहमद अली खा, अहमद एक प्रख्यात सूफी संत थे जिनका राजपरिवार से विशेष संबंध था। आचार्य कवि ग्वाल ने वृजभाषा के साथ–साथ उर्दू भाषा वाली विभिन्न रचनाएं रची है। यह नवाब कल्वे अली खां के दरबारी कवि थे तथा अपने काल के प्रसिद्ध कवियों में रहे। मथुरा से आकर शाहाबाद तथा फिर रामपुर में बसे चौबे परिवार में रामपुर रियासत को कई पीढ़ियों तक उच्चकोटि के कवि दिए इनमें बल्देव प्रसाद चौबे, वंशीधर चौबे, रघुनाथ चौबे तथा राधा रमन चौबे का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

मौलाना नज्मुलगनी खां हकीम भी थे तथा फारसी एवं उर्दू के बहुत बड़े विद्वान थे। आपने अवध, रामपुर तथा रुहेलखण्ड के इतिहास के अतिरिक्त चौबीस दूसरी किताबें और लिखी है। यही नहीं जब आप सरकारी कुतबखाने के नाजिम बनाए गए तब अल्लामा ने बहुत कम समय में लाइब्रेरी के हित में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए। आपकी मृत्यु सन 1932 ई. में हुई।

मौलाना इम्त्याज अली खां अरशी ने गालिबयात पर काम करके सारी दुनिया में गालिब की शायरी की धूम मचा दी। आपका जन्म रामपुर की सरजमीं पर हुआ। रामपुर रजा लाइब्रेरी के नाजिम रहकर आपने उसकी बहुत ही महत्वपूर्ण सेवा की। रामपुर को आप जैसे विद्वान पर गर्व है। आजादी के बाद आपको भारत सरकार ने पद्म श्री उपाधि से सम्मानित किया।

हकीम अजमल खां रामपुर की विशिष्ट प्रतिभा हुए जो मशहूर हकीम के साथ–साथ विद्वान एवं साहित्कार भी थे। रजा लाइब्रेरी रामपुर के नाजिम रहकर आपने इसकी उत्कृष्ट सेवा की। मुंशी अमीर मीनाई यहां के चमकते हुए सितारे थे जिन्होंने इन्तखाबे यादगार जैसे दुर्लभ ग्रन्थ की रचना की। हिन्दी साहित्याकाश के देदीप्यमान सितारे श्री कल्याण कुमार जैन 'शशि' आदि प्रतिभाओं ने इसी सरजमी पर जन्म पाया है।

प्रसिद्ध मंदिर

रामपुर की मिलक तहसील में रठोड़ा में शिव जी का मंदिर अति प्राचीन है। कहा जाता है कि यह वाणासुर के समय का है। महाशिव रात्रि पर यहां बहुत भारी मेला लगता है। जिसका प्रबन्ध जिला परिषद द्वारा होता है। वैसे पूरे वर्ष श्रद्धालु यहां आते रहते हैं। कहा जाता है कि यहां शिव लिंग स्वयं पृथ्वी में से निकला था। भमरौआ के मंदिर के बारे में भी यही मान्यता है। यहां शिव लिंग जमीन के अन्दर हैं। पंजाब नगर के मंदिर का शिव लिंग जमीन से तीन चार फुट अन्दर है। कोसी

का मंदिर भी प्रसिद्ध धर्म स्थल है। बाबा भैरव नाथ का मंदिर बहुत प्राचीन मंदिर था उस पर गुम्बद था। यह गुम्बद का मंदिर कहलाता है। जौकी राम का मंदिर जौको राम हसरत ने बनवाया था जो फारसी के प्रसिद्ध शायर थे। इसकी बहुत मान्यता है। पुराना गंज में हरिहर की बगिया में बावा वशीवालों की समाधि है। सराय दरवाजे पर बाबा लक्ष्मण दास की समाधि भी बहुत प्रसिद्ध है। यहां पर श्रद्धालु अपनी मनौतियां पूरी करने जाते हैं। तहसील शाहबाद के लक्खी बाग के पुराने शिव मंदिर की बहुत मान्यता है। दत्तराम का शिवाला मैस्टन गंज में है। यहां की भी बहुत मान्यता है। जैन मतावलम्बियों का जैन मंदिर प्रसिद्ध एवं दर्शनीय धर्मस्थल है।

स्वर्गधाम रामपुर

रामपुर के दर्शनीय स्थलों में स्वर्गधाम परिसर भी विशेष स्थान रखता है। मृत्यु के बाद शवदाह की सुविधा के साथ–साथ इस श्मशान को एक आध्यात्मिक एवं धार्मिक रूप प्रदान किया गया है जहां सुन्दर सुव्यवस्थित एवं रमणीक व्यवस्था है। यहां के भैरोजी के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार हो चुका है तथा शंकर जी का नवीन मंदिर निर्मित कराया गया है। यहां शव का स्नान गंगाजल से किया जाता है जिसकी विष्णु के चरणों

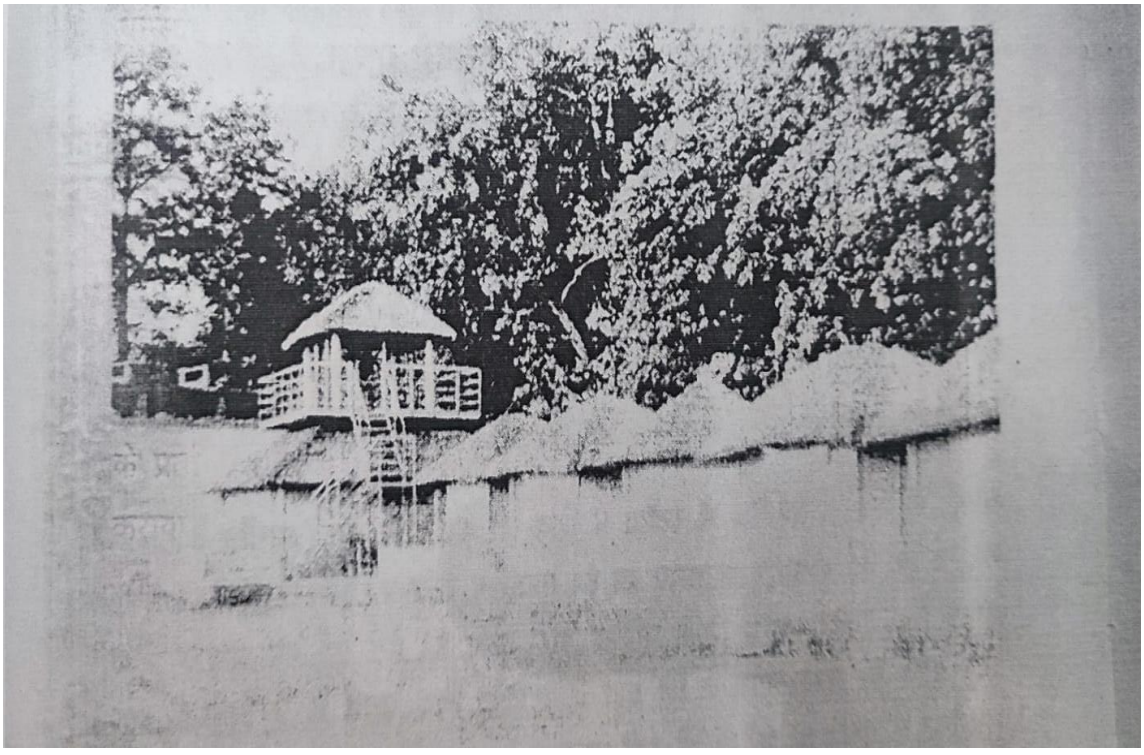

वृद्ध निवास

सभी सुविधाओं से युक्त यह कुटिया अति सुन्दर तथा शान्त वातावरण में बनी हुइ है।

मासिक के लगभग 4000 इसके मासिक सदस्य हैं। उनके सहयोग एवं दान राशि से इसका संचालन होता है। संचालन समिति के अध्यक्ष श्री सतीश भाटिया भारतीय हैं।

प्राचीन एवं प्रसिद्ध स्थान

रामपुर जनपद में विभिन्न प्राचीन प्रसिद्ध स्थान है जिनका पुरातात्विक महत्व है।

कोसी नदी पुरातन है। प्राचीन काल में इसे कौशिकी अथवा कौशिल्या कहा जाता था। यह अब रामपुर नगर से पश्चिम की ओर कुछ दूर हट गई है लेकिन पहले नगर के पास से ही बहती थी। नगर के किनारे बनी सीड़ियों से यह बोध होता है कि यहां पक्के घाट स्नान के लिए बने होंगे।

सेफनी (सहस्त्रफणी) नामक गांव शाहबाद तहसील का एक सुसंस्कृत ग्राम है जो अब उन्नतिशील है। बताया जाता है कि महाभारत काल में यहां अहिच्छत्र (पंचाल) राज्य के शासक द्रोणाचार्य ने एक किला बनवाया था जिसके सहस्त्रद्वार थे जो कि नाग के फण के रूप में बने हुए थे इस कारण इसका नाम सहस्त्रफणी पड़ा। जो कि अब अपभ्रंश होकर सेफनी कहलाता है। महाभारत युद्ध में जो अस्त्र शस्त्र कौरवों की ओर से प्रयोग में लाए गए थे उनका निर्माण यहीं हुआ था। लोहशाला के अवशेष आज भी यहां देखे जाते हैं। इस कोट का अधिकारी भूरिश्रवा युद्ध में मारा गया था तब उसकी पत्नी को धैर्य देने दुर्योधन की पुत्र वधू लक्षणा यहाँ आयी थी। पुरातात्विक दृष्टि से सेफनी का विशेष महत्व है।

पीपली (तहसील बिलासपुर) मध्यकाल में सामारिक महत्व का स्थान था । यहां पर मुगलों से पूर्व भी आबादी थी तथा मुगलों के काल में यहां टकसाल भी थी जिसके बारे में कहा जाता है कि रुहेलों के समय में भी टकसाल यहां रही जहां नवाब अली मोहम्मद खां के नाम का सिक्का ढलता था।

लखनौर अब शाहबाद कहलाता है। मध्यकाल से पूर्व इसको लखनपुर भी कहते थे। सल्तनतकालीन दिल्ली के बादशाहों के समय से ही इसकी उन्नति प्रारम्भ हो गयी। यह कठेरिया राजपूतों को कई शताब्दी तक मुख्य गढ़ रहा। शाहजहां के समय में इसका नाम लखनौर से शाहबाद हो गया।

मदकर– यह कठेरिया राजपूतों का मुख्य गढ़ था। ऐसा कहा जाता है कि वीर शाह ने इसको बसाया था तथा जहांगीर के समय में इसकी बहुत उन्नति हुई। रुहेला रियासत स्थापित होने के समय यहां के शासक मदारा सहाय थे जिनके यहां प्रथम रुहेला सरदार दाउद खां रहे थे।

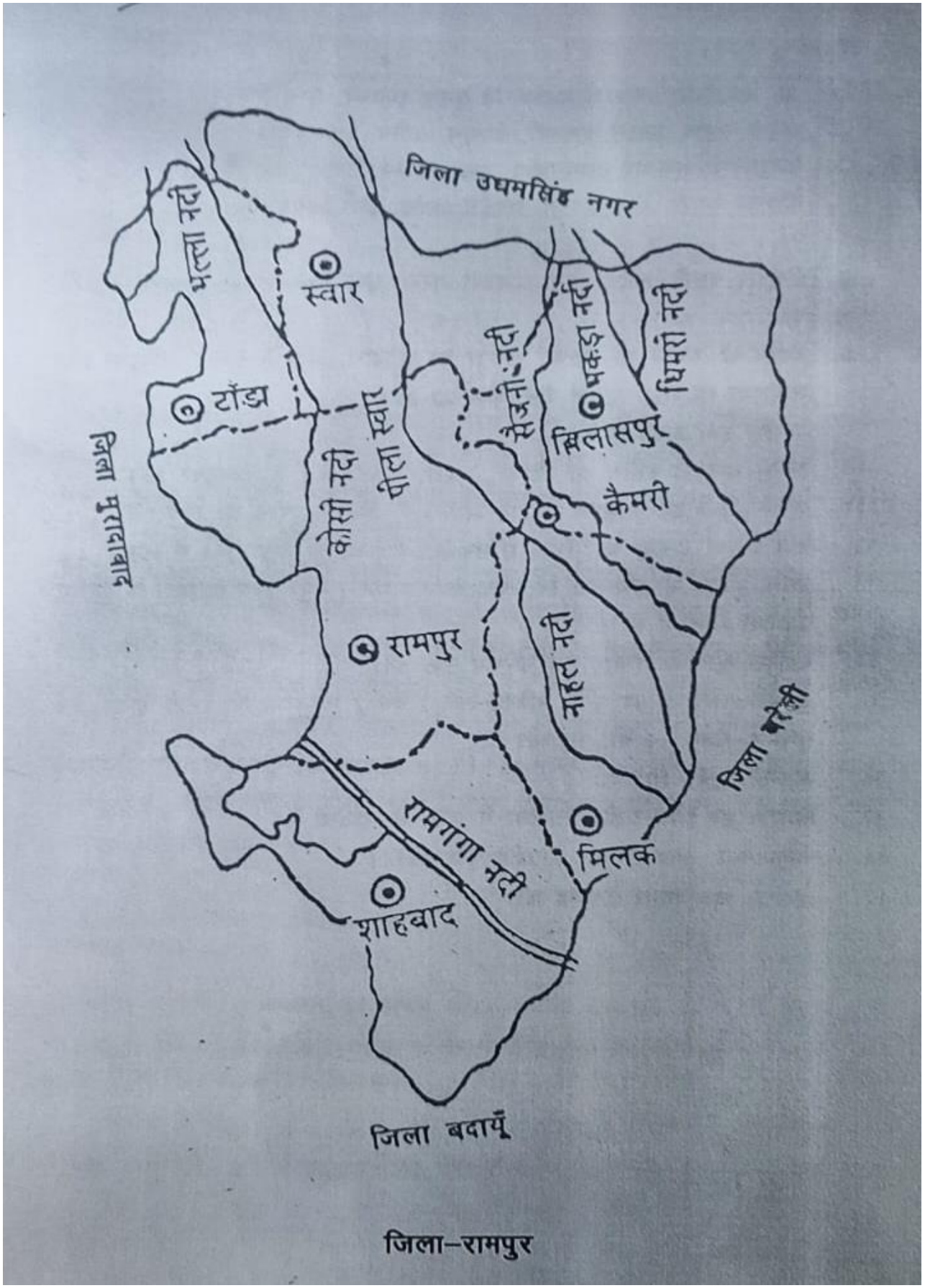

जिला उधमसिंह नगर
भल्ला नदी
स्वार
टाँडा
कोसी नदी
पीला स्वार
सैजनी नदी
भकड़ा नदी
धिमरी नदी
बिलासपुर
कैमरी
रामपुर
नाहल नदी
रामगंगा नदी
मिलक
शाहबाद
जिला मुरादाबाद
जिला बरेली
जिला बदायूँ

जिला–रामपुर

संदर्भ :–

रुहेलखण्ड इतिहास एवं संस्कृति

1. डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, दि मुगल इम्पायर, पृष्ठ 115–117।
2. अबुल फजल, आइने अकबरी, वाल्यूम द्वितीय, पृष्ठ 115।
3. नज्मुलगनी–अखबार उससनादीद, पृष्ठ 68–69।
4. दिलदार नसरी, रामपुर रजा लाइब्रेरी जर्नल, पृष्ठ 188।
5. वही।
6. दिलदार नसरी, रामपुर रजा लाइब्रेरी जर्नल, पृष्ठ 189–191।
7. वही, पृष्ठ 192।
8. हकीम मो. हसीन खां 'शिफा' रामपुर का इतिहास, अंक 1, वर्ष 7 अक्टूबर 86, सम्पादक श्री रमेश कुमार जैन, पृष्ठ 23–26।
9. आलेख इब्ने हसन खुर्शीद।
10. हकीम मोहम्मद हसीन खां 'शिफा', रजत, अंक 1 वर्ष 7 अक्टूबर 861।
11. आइना–ए–जौहर सम्पादक फरहान अली खां, जमीर उद्दीन खाँ से संकलित ।
12. रवि प्रकाश रामपुर के रत्न से संकलित एवं सतीश चन्द्र गुप्त से साभार।
13. प्रपत्र, भारत की पचासवीं स्वतन्त्रता वर्षगांठ एवं रामपुर रजा लाइब्रेरी के द्वितीय शताब्दी समारोह से साभार।
14. आदिल मुजद्दी रामपुर एक परिचय पृष्ठ 641
15. आलेख– महेन्द्र प्रसाद गुप्त, पत्रिका अंक 1 वर्ष 7 सम्पादक श्री रमेश कुमार जैन पृष्ठ 9–10ए, 10 बी, 10 सी।
16. आलेख, जुबैर शाह खान।
17. विवरण एवं चित्र–सतीश भाटिया भारतीय के सौजन्य से।
18. नज्मुलगनी, अखबार उस सनादीद पृष्ठ 481।
19. आलेख, डा० शायर उल्लाह खाँ।

कुतुबुद्दीन खाँ के द्वारा रुहेलों को समाप्त करने में सफलता नहीं मिली तब सफदरंजग ने दूसरी चाल चली। फर्रुखाबाद के नवाब कायम खाँ बंगश को रुहेलखण्ड का नाजिम बना दिया तथा उस पर अधिकार करने का हुक्म दे दिया। कायम खाँ तथा रुहेलों के बहुत अच्छे संबन्ध थे। रुहेलो नें उसको बहुत समझाया लेकिन वह न माना उस पर सफदरजंग का रंग सबार था। उसने आँवला पर आक्रमण कर दिया। रसूलपुर (आँवला बदायूँ मार्ग) के स्थान पर दोनों ओर की सेनाओं में युद्ध हुआ जो कि एक दिन में ही समाप्त हो गया। कायम खां की मृत्यु हुई।

इस युद्ध में रुहेलों को बहुत लाभ हुआ। बहुत सा सामान तोपें हाथी तथा अस्त्र–शस्त्र रुहेलों के हाथ लगे तथा उसैत, उसावां, इस्लामनगर, उझानी (जिला–बदायूँ) तथा जलालाबाद पर रुहेलों का कब्जा हो गया।

रुहेलों द्वारा फर्रुखाबाद के नवाब को सैनिक सहायता

कुछ समय पश्चात हाफिज रहमत खाँ ने पीलीभीत की ओर कूँच किया। वहाँ से उन्होंने सनवा, खैरागढ़, भरतापुर, बजौलिया, दरभापुर सगलपा तथा मलबारह व लछियाली पर अधिकार किया। उन स्थानों से खिराज वसूल किए एवं जीते हुए स्थानों पर अपने नाजिम नियुक्त किए।

वजीरे आजम सफदरजंग रुहेलों तथा बगंश पठान दोनों को समाप्त करके उनके राज्य को अपने राज्य में मिलाना चाहता था इसलिए नवाब कायम खां की मृत्यु के बाद उसने फर्रुखाबाद पर अधिकार कर लिया तथा अपना नायब राजा नबल राय को नियुक्त कर दिया। परन्तु वह बहुत ही अत्याचारी था इस कारण जनता उसके विरुद्ध हो गई। अवसर देखकर कायम खाँ के भाई अहमद खाँ ने नवलराय पर आक्रमण करके फर्रुखाबाद पर अपना अधिकार कर लिया। जब सफदरजंग को यह सूचना मिली उसने दिल्ली से अहमद खाँ को हराने के लिए कूँच कर दिया। अहमद खाँ ने रुहेलों से मदद मांगी। रुहेले तो पहले से ही बंगशों से हमदर्दी रखते थे इसलिए हाफिज रहमत खाँ ने आँवला से फौरन सहायता भेजी। दोनों ओर की सेनाओं में राम चनौटी पर लड़ाई हुई। सफदरजंग को हार उठानी पड़ी और वह दिल्ली चला गया। रुहेले भी आँवला वापिस चले आए।

मराठों एवं सफदरजंग के आक्रमण

अपनी हार का प्रतिशोध लेने के लिए सफदरजंग ने अहमद खाँ को हराने के लिए

गंगा जल परियोजना

गंगा जल परियोजना

यहाँ गंगा जल द्वारा शव धोने की स्वचालित व्यवस्था है।

से निकलते हुए ब्रह्मा के कमण्डल में फिर शंकर जी की जटा से निकलकर जल द्वारा स्नान की व्यवस्था है जो कि देश की अपनी तरह की पहली व्यवस्था है। यहां 10 शवदाह स्थान ग्रिलयुक्त हैं। बैठने के लिए लगभग 500 बेन्च सीमेन्टेड हैं। शवदाह के पश्चात स्नान के लिए एक सरोवर है जिसमें सदैव निर्मल जल रहता है। सौर ऊर्जा से भी जल स्नान की व्यवस्था है जहां ठण्डा एवं गर्मपानी प्राप्त है। चन्दन के वृक्षयुक्त पुष्प वाटिका है। यहां हर धर्म की धार्मिक पुस्तकों का संकलन है। सामूहिक रूप से बैठने के लिए हाल है। जनपद के लावारिस शवों की सभी क्रिया विधि विधान से समिति द्वारा करायी जाती है। जिनकी अस्थियां भी हरिद्वार में विसर्जित होती है। दाह सम्बंधी सामग्री स्वर्गधाम पर उपलब्ध होती है जो नो प्रॉफिट नो लॉस' पर प्रदान की जाती है तथा निःसहाय एवं निर्धन लोगों को निःशुल्क दी जाती है। बिजली, टेलीफोन हो फिल्टर युक्त पेयजल यहां प्राप्त है। यहां वृद्धजन निवास आश्रम में 15 कुटियां असहाय एवं वृद्ध लोगों के लिए बनी है यू.पी. का पहला एल0पी0जी0 गैस आधारित शवदाह गृह यहां निर्मित हो रहा है जिस पर लगभग 21 लाख रुपया खर्च होगा। यह राज्य सभा सांसद मो. आजम खां के सांसद कोटे से निर्मित हो रहा है। स्वर्गधाम रामपुर के संचालन के लिए सभी वर्गों से प्रतिनिधित्व प्राप्त समिति है। 10 रुपये

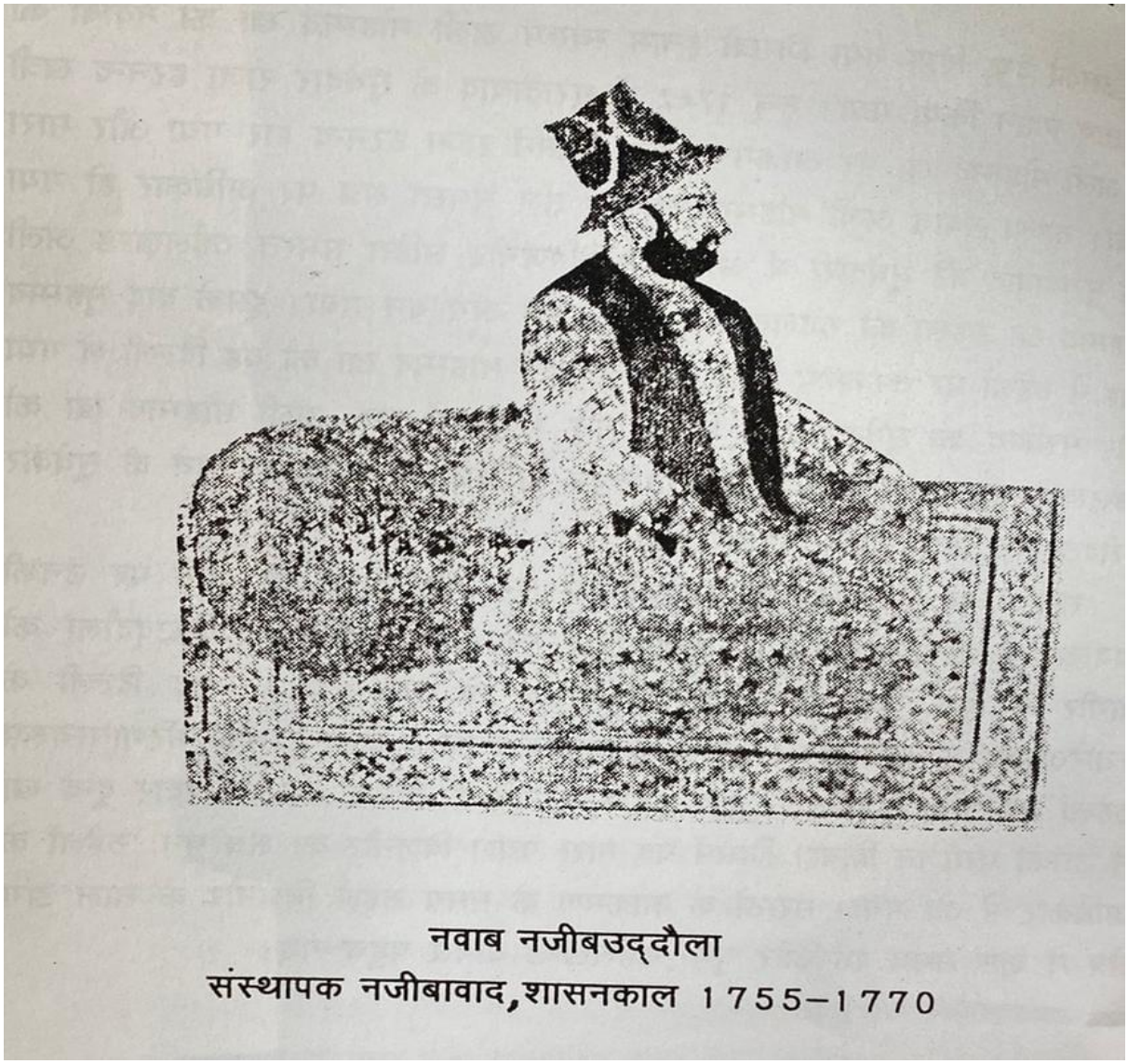

नवाब नजीबउद्दौला
संस्थापक नजीबावाद, शासनकाल 1755–1770

उस समय नजीबुद्दौला बिजनौर–सहारनपुर का सूबेदार था तथा दिल्ली में रहता था। उस समय उसने अहमद शाह अब्दाली की सहायता की जिसके इनाम में उसे अमीर उल–उमरा की उपाधि प्रदान की गई तथा दिल्ली का इंचार्ज बनाया गया। लेकिन शीघ्र ही बादशाह अहमद शाह ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया तथा दिल्ली के सुल्तान तथा वजीर गाजी–उद्दीन द्वारा वह सहारनपुर चले जाने को मजबूर कर दिया गया। यह तीन चार वर्ष नजीबउद्दौला के बहुत कष्ट में गुजरे। मराठों ने बिजनौर तक आक्रमण किया जिसमें रूहेलों ने उसकी मदद की सन् 1761 में अहमद शाह अब्दाली ने दिल्ली पर पुनः आक्रमण किया जिसमें दिल्ली के बादशाह पर पइानों का वर्चस्व स्थापित हो गया। मराठे खदेड़ दिए गए तथा नजीबुददौला की स्थिति वजीरे–आजम की हो गई । यह स्थिति उसकी सन् 1770 ई0 तक रही। इस वर्ष उसकी मृत्यु हो गयी। उसको नजीबाबाद में दफनाया गया। जहॉ एक सुन्दर मकबरा बनाया गया। इसी वर्श उसके ससुर दून्दे खां की

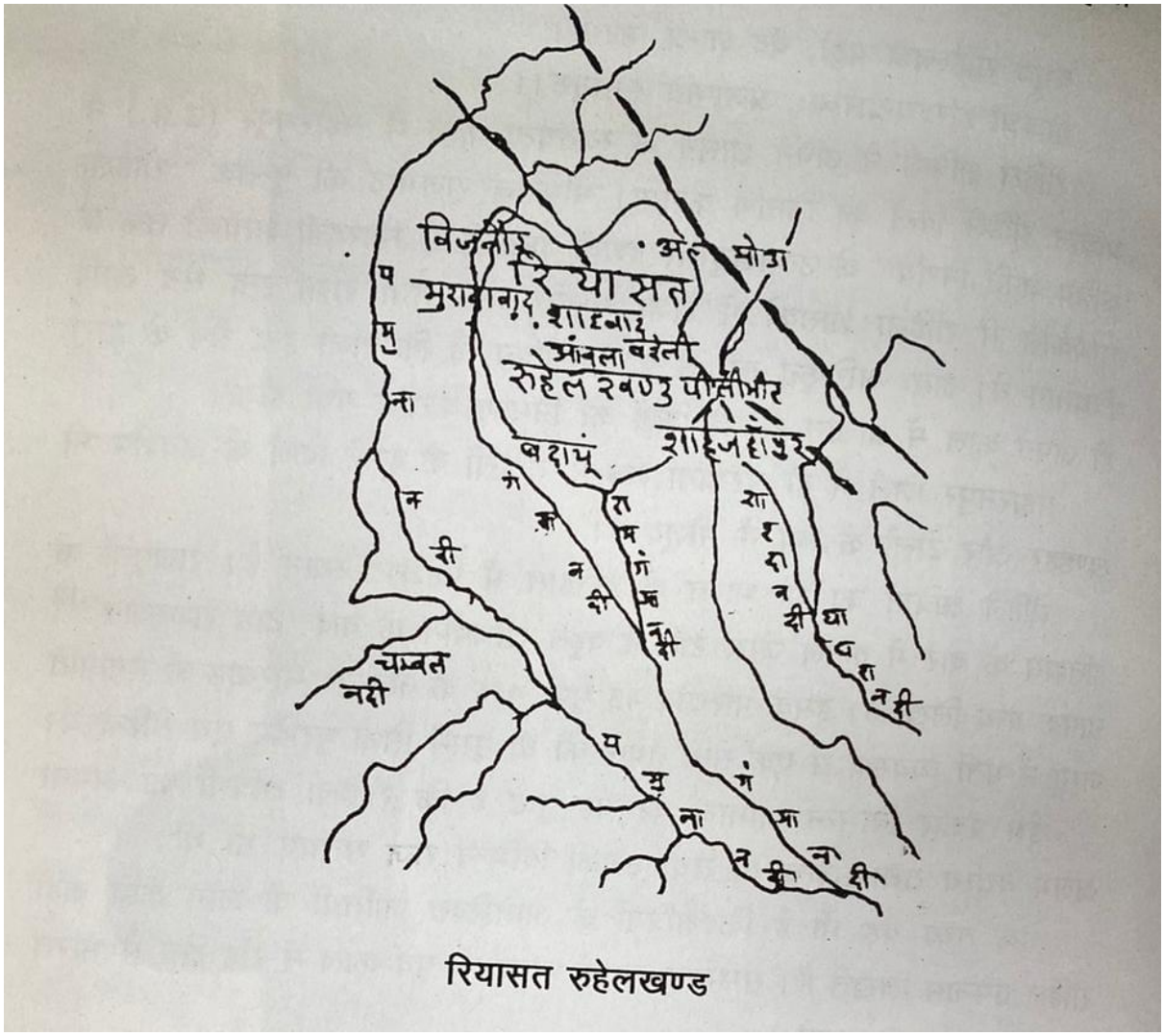

रियासत रुहेलखण्ड

वर्णन करते हुए इस क्षेत्र को 'कठेर रोहिलखण्ड' लिखा है। इस प्रकार रुहेला पठानों की सत्ता स्थापित होने के बाद कठेर का प्रयोग समाप्त हो गया तथा इस क्षेत्र के लिए रोहिलखण्ड (अंग्रेजी में) या रुहेलखण्ड (उर्दू एवं हिन्दी) प्रयोग हुआ।

सन्दर्भ :

1. सन्दर्भ–अखवार उससनादीद, लेखक नज्मुलगनी।
2. दिलदार नसरी, रामपुर रजा लाइब्रेरी जरनल–3, पृष्ठ 1431
3 नज्मुलगनी अखबार उस सनादीद पृष्ठ 64 1
4 वही पृष्ठ 691, 5 वही पृष्ठ 761, 6 वही पृष्ठ 1351, 7 वही पृष्ठ 801
8 वही पृष्ठ, 801, 9 वही पृष्ठ 1881 10 वही 1891
11 दर्शनलाल रोहिला, रोहिला क्षत्रियों का क्रमबद्ध इतिहास, पृष्ठ 128 129 तथा आर. आर राजपूत, रोहिला तक्षक (टांक) क्षत्रिय वंश भास्कर, पृष्ठ 39–401
12 Annals and Antiquities of Rajasthan p. 457